







[liberationwarbangladesh.org](http://liberationwarbangladesh.org)



গণপ্রজাতন্ত্রী বাংলাদেশের  
সংবিধান



# ଗଣପ୍ରଜାତନ୍ତ୍ରୀ ସାଂଲାଦେଶେର ସଂବିଧାନ

## ମୁଠୀପତ୍ର

ଅନୁଷ୍ଠାନିକ

ଅନୁଷ୍ଠାନିକ

ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ଭାଗ

ଅଜାତତ୍ତ୍ଵ

- ୧। ଅଜାତତ୍ତ୍ଵ
- ୨। ପ୍ରଜାତନ୍ତ୍ରୀର ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସୀମାନା
- ୩। ରାଷ୍ଟ୍ରଭାଷା
- ୪। ଜ୍ଞାତୀୟ ଜ୍ଞାନୀୟ, ପତାକା ଓ ପ୍ରତୀକ
- ୫। ରାଜ୍ୟଧାରୀ
- ୬। ନାଗରିକତ୍ଵ
- ୭। ସଂବିଧାନେର ଆଧାନ୍ୟ

ଦ୍ୱିତୀୟ ଭାଗ

ରାଷ୍ଟ୍ରପରିଚାଳନାର ମୂଲନୀତି

- ୮। ମୂଲନୀତିମଧ୍ୟ
- ୯। ଜ୍ଞାତୀୟଭାବାଦ
- ୧୦। ସମାଜତନ୍ତ୍ର ଓ ଶୋଗନମୁକ୍ତି
- ୧୧। ଗନ୍ଧତନ୍ତ୍ର ଓ ଜ୍ଞାନୀୟ ଶାଖାନତା
- ୧୨। ଧର୍ମମିଶ୍ରଲେଖନା ଓ ଶ୍ରୀରୂପ ଶାଖାନତା
- ୧୩। ଆନିକାନାର ନୀତି
- ୧୪। ରୂପକ ଓ ଅମିକେନ ମୁକ୍ତି
- ୧୫। ଟୌନିକ ଅଧ୍ୟୋଜନେର ବାବନ୍ଦା
- ୧୬। ପ୍ରାଦୀନ ଉତ୍ସମନ ଓ ରୂପିତିପର

## अनुसूची

- १७। अदैवतनिक ओ बाद्यतामूलक शिल्प
- १८। जनस्त्रास्त्रा ओ टेमेटिकज्ञ
- १९। झुम्योपेत्र शमता
- २०। अधिकारू ओ कर्तव्यज्ञान कद्ग
- २१। माधविक ओ जनकारी कर्मचारीद्वय कर्तव्य
- २२। निर्वाही विकास हैंडे विचारविभागों दृश्यकोक्तुन्म
- २३। ज्ञातीय ग्रहणकृति
- २४। ज्ञातीय ग्रूपिनिदर्शन अकृति
- २५। आनुर्ज्ञातिक शान्ति, निरापद्धा ओ ग्रहण

## तृतीय भाग

### ग्रोलिक अधिकार

- २६। ग्रोलिक अधिकारेर प्रहित जास्तमज्ज्ञ आईन वातिल
- २७। आईनेर पृष्ठिते समता
- २८। थर्म अकृति कारने बैषम्य
- २९। जनकारी नियोगनाते झुम्योपेत्र शमता
- ३०। उपाधि, ग्रन्थान ओ गूप्तात्र विनोदज्ञिन
- ३१। आईनेर जाप्तमनातेर अधिकार
- ३२। जीवन ओ वाति-स्थावीनतात्र अधिकार-इक्का
- ३३। द्युप्तात्र ओ आटेक जन्मके इक्काक्षय
- ३४। ज्वरसम्भिति-प्राप्त निश्चिकरने
- ३५। विचार ओ सक्त जन्मके इक्का
- ३६। छलाटकज्ञात्र स्थावीनता
- ३७। जमावेशत्र स्थावीनता
- ३८। ग्रहणमैनेत्र स्थावीनता

## অনুচ্ছেদ

- ৩০। চিন্তা ও বিবেকের স্থাপীনতা এবং মানবাধীনতা
- ৩১। পেশা বা বৃত্তির স্থাপীনতা
- ৩২। শর্মিণি স্থাপীনতা
- ৩৩। জন্মতির অধিকার
- ৩৪। শৃঙ্খল ও টমাগামোগের রক্ষণ
- ৩৫। ছৌলিক অধিকার বলবৎ করন
- ৩৬। শুভ্রানামূলক আইনের ক্ষেত্রে অধিকারের পরিবর্তন
- ৩৭। দায়ামুক্তি-বিবাদের ক্ষমতা
- ৩৮। ক্ষতিপয় আইনের হেফাজত

## **চতুর্থ ভাগ**

### **নির্বাচী বিভাগ**

#### **১য় পরিচ্ছেদ- রাষ্ট্রপতি**

- ৪৮। রাষ্ট্রপতি
- ৪৯। ক্ষমাপ্রদর্শনের অধিকার
- ৫০। রাষ্ট্রপতি-পদের মেয়াদ
- ৫১। রাষ্ট্রপতির দায়ামুক্তি
- ৫২। রাষ্ট্রপতির অভিশংসন
- ৫৩। অসামিঞ্চের কারণে রাষ্ট্রপতির অসমারণ
- ৫৪। অনুপস্থিতি প্রতিক্রিয়া কালে রাষ্ট্রপতি-পদে স্বীকার

#### **২য় পরিচ্ছেদ- প্রধানমন্ত্রী ও মন্ত্রিসভা**

- ৫৫। মন্ত্রিসভা
- ৫৬। মন্ত্রিগণ
- ৫৭। প্রধানমন্ত্রীর পদের মেয়াদ
- ৫৮। অন্যান্য মন্ত্রীর পদের মেয়াদ

#### **৩য় পরিচ্ছেদ- সুনিয়া শাসন**

- ৫৯। সুনিয়া শাসন

অনুচ্ছেদ

৬০। সুনৌয়া শাসন-জাহাঙ্গির প্রতিষ্ঠানের ক্ষমতা

**৪৭ পরিচ্ছেদ- অতিরিক্ত কর্মবিভাগ**

৬১। জর্দীপিনায়কতা

৬২। অতিরিক্ত কর্মবিভাগে ভর্তি প্রক্রিয়া

৬৩। মুঢ়া

**৫ ম পরিচ্ছেদ- আয়টিনি-জেনারেল**

৬৪। আয়টিনি-জেনারেল

**পঞ্চম ভাগ**

**আইনসভা**

**১ ম পরিচ্ছেদ- সহসদ**

৬৫। সহসদ-প্রতিষ্ঠা

৬৬। সহসদে নির্বাচিত ইইবার মোগ্যাতা ও অব্যোগ্যতা

৬৭। সহসদের আসন- শূন্য হওয়া

৬৮। সহসদ-সদস্যদের বেতন প্রক্রিয়া

৬৯। শাসনপ্রাপ্তের পুর্বে আসনপ্রাপ্তন বা জোটিদান করিবেন  
সদস্যের অর্থসত্ত্ব

৭০। ব্রাজ্বৈনতিক সম্ব ইইতে পদত্যাগ বা সভার বিলক্ষণ  
ভোটদানের কারণে আসন- শূন্য হওয়া

৭১। দ্বিতীয়-সদস্যতাম্ব বাসী

৭২। সহসদের অধিবেশন

৭৩। সহসদে বাস্তুপতিক ভাস্তু ও বাসী

৭৪। স্বীকার ও ক্ষমতা স্বীকার

৭৫। কার্যসভালী-বিবি, কোর্টাম প্রক্রিয়া

৭৬। সহসদের স্থায়ী কমিটিগুলু

৭৭। ন্যায়পাল

৭৮। সহসদ ও সদস্যদের বিশেষ-অধিকার ও সাম্যমুক্তি

## অনুচ্ছেদ

৭১। সংসদ-সচিবালয়

### ২য় পরিচ্ছেদ- আইনপ্রণয়ন ও অর্থ-সংকাত পদ্ধতি

- ৮০। আইনপ্রণয়ন- পদ্ধতি
- ৮১। অগ্রবিল
- ৮২। আগ্রিক ব্যবস্থাবলীর মূলারিশ
- ৮৩। সংসদের আইন ব্যতীত করারোপে বাধা
- ৮৪। সংমুক্ত উহিবিল ও প্রজ্ঞাতন্ত্রের সরকারী হিসাব
- ৮৫। সরকারী অধৈর নিয়ন্ত্রণ
- ৮৬। প্রজ্ঞাতন্ত্রের সরকারী হিসাবে অদেয় অর্থ
- ৮৭। বাণিক আগ্রিক বিশৃতি সম্বরিত পদ্ধতি
- ৮৮। সংমুক্ত উহিবিলের উপর দায়
- ৮৯। বাণিক আগ্রিক বিশৃতি সম্বরিত পদ্ধতি
- ৯০। নির্দিষ্টকরণ আইন
- ৯১। সম্মুক্ত ও অতিরিক্ত মজুরী
- ৯২। হিসাব, অন্ত প্রভৃতির উপর জোট

### ৩য় পরিচ্ছেদ- অধ্যাদেশপ্রণয়ন- ঝুঁঝতা

৯৩। অধ্যাদেশপ্রণয়ন- ঝুঁঝতা

### ষষ্ঠ ভাগ

### বিচারবিভাগ

#### ১ম পরিচ্ছেদ- সুপ্রীম কোর্ট

- ৯৪। সুপ্রীম কোর্ট-প্রতিষ্ঠা
- ৯৫। বিচারক- নিয়োগ
- ৯৬। বিচারকদের পদের মেয়াদ
- ৯৭। অস্থায়ী প্রধান বিচারপতি- নিয়োগ
- ৯৮। সুপ্রীম কোর্টের অতিরিক্ত বিচারকগণ
- ৯৯। অবসরপ্রাপ্তনের পর বিচারকদের অঞ্চলতা

## तात्पुरक्रम

- १००। सूखीम टोटेरु आगम
- १०१। हाइकोटे विडालेहु एधतिमाह
- १०२। मौनिक अशिकाहु बलवहकत्तुने लास्येण एवं कठिनाय आदेश  
३ निष्ठेण प्रजृति-स्थानेहु लेहु हाइकोटे विडालेहु कळाता
- १०३। आपीन विडालेहु एधतिमाह
- १०४। तालीन विडालेहु लडायाना जारी ओ निर्वाह
- १०५। तालीन विडाले कर्त्तुक जाह वा आदेश गूचविवेचना
- १०६। सूखीम टोटेरु उपमेहाघूलक एधतिमाह
- १०७। सूखीम टोटेरु विविष्टभैयन-जळाता
- १०८। “टोटे अब देकर्ते”हाले सूखीम कोटे
- १०९। आदानतसमूहेर उपरु तङ्गावरीन ओ निष्ठुन
- ११०। अविस्तुन आदानत इहेते हाइकोटे विडाले मायला स्थानानुरु
- १११। सूखीम टोटेरु जायेव वायुताघूलक कार्मकरता
- ११२। सूखीम टोटेरु सद्यायता
- ११३। सूखीम टोटेरु कर्मचारिणी

## २य परिक्रम- अविस्तुन आदानत

- ११४। अविस्तुन आदानतसमूह-प्रतिष्ठा
- ११५। अविस्तुन आदानते नियोग
- ११६। अविस्तुन आदानतसमूहेर नियन्त्रण ओ शुभ्यमा

## ३य परिक्रम- अशासनिक ट्रोइन्युनाल

- ११७। अशासनिक ट्रोइन्युनालसमूह

## संक्षेप आग

### निर्वाचन

- ११८। निर्वाचन कमिशन-प्रतिष्ठा
- ११९। निर्वाचन कमिशनेर दायित्व
- १२०। निर्वाचन कमिशनेर कर्मचारिणी
- १२१। प्रति एलाकारु क्षेत्र एकटिमात्र जोटीर-तालिका

## प्रस्तुतिहृद

- १२१। जोटोर-तानिकाया नामजुकिर योग्याजा
- १२०। निर्बाचन-अनुष्ठानेत्र समग्र
- १२४। निर्बाचन महात्मेत्र जैसमंड्र विभान-प्रभानेत्र कमज़ा
- १२३। निर्बाचनी आईन ओ निर्बाचिनेत्र ईरवेता
- १२५। निर्बाचन कमिशनके निर्वाची कर्त्तव्यक्षेत्र महाभास्त्रान

## अष्टोम भाग

### महा हिंसाव-निरीक्षक ओ नियन्त्रक

- १२६। महा हिंसाव- निरीक्षक -पदेत्र प्रतिष्ठा
- १२७। महा हिंसाव- निरीक्षककर सामिक्ष
- १२९। महा हिंसाव- निरीक्षककर कर्मेत्र मेयाद
- १००। अस्थायी महा हिंसाव- निरीक्षक
- १०१। प्रबलात्मेत्र हिंसाव- इकाई आकार ओ पद्धति
- १०२। जैसमंड्र महा हिंसाव- निरीक्षककर रिपोर्ट उपस्थापन

## नवम भाग

### बांलादेशेर कर्मविभाग

#### १म परिषद्धृद- कर्मविभाग

- १०३। नियोग ओ कर्मेत्र शर्तादली
- १०४। कर्मेत्र ट्रैयाद
- १०५। अज्ञानविक सरकारी कर्मचारीदेत्र वरधास्तु प्रतुष्टि
- १०६। कर्मविभाग- मुनिष्ठिन

#### २म परिषद्धृद- सरकारी कर्म कमिशन

- १०७। कमिशन-प्रतिष्ठा
- १०८। सद्ग्राम- नियोग
- १०९। पदेत्र मेयाद
- ११०। कमिशनेत्र सामिक्ष
- १११। वार्षिक रिपोर्ट

## অনুচ্ছেদ

সংশয় ভাগ

## সংবিধান-সংশোধন

১৪১। সংবিধানের বিধান প্রক্ষেপন বা রহিতকরণের ক্ষমতা

একাদশ ভাগ

## বিবিধ

১৪৩। অক্ষতক্ষেত্র সম্মতি

১৪৪। সম্মতি, কারবার অভূতি অসমে নির্বাহী কর্তৃতা

১৪৫। ছুক্তি ও দলিল

১৪৬। বাধ্যাদেশের নাম মাঝলা

১৪৭। কঠিসংঘ সমাবিকারীক পারিশ্রমিক অভূতি

১৪৮। পদক্ষেপ সমষ্টি

১৪৯। প্রচলিত আইনের হেফাজত

১৫০। জাতিকালীন ও অস্থায়ী বিধানাবলী

১৫১। রহিতকরণ

১৫২। ব্যাখ্যা

১৫৩। প্রবর্তন, উন্নয়ন ও নির্ভয়মোগ্য সাই

## তত্ত্বসিল

১। অন্যান্য বিধান সংস্কৃত কার্যকর আইন

২। কানুনসতি-নির্বাচন

৩। সমষ্টি ও মোক্ষনা

৪। জাতিকালীন ও অস্থায়ী বিধানাবলী

## अस्त्रावना



आमरा, जाह्नवामण्डल क्रमांक, १५७३ छोड़ीकृत  
आमिर सामंत २९ जारिखे शुभेनदा द्वाष्टावना कविता  
ज्ञानीय मूर्तिकृत बन्दु एविहासिक जनकामर मान्यता  
शार्चिन ओ आर्योग्य अनुष्ठानकृति वाह्नवामण्डल कविता  
कवियाच्छि :

आमरा अस्त्रीकारु कवितेहि ये, ये उक्त  
प्रकार आमर्श आमादेह चीड़ जनकमंडक ज्ञानीय  
मूर्तिकृत्याम अस्त्राविहास ओ लोड़ शहीदमिष्टके  
प्राप्तामण्डल कविते उम्मुक्त कवियाच्छि— ज्ञानीयामाम,  
ज्ञानाकृत्यु, गन्तव्यु ओ ऐर्विहुलकारु ये हैं मनम  
आमर्श एष अस्त्रिवामेह मूलमीमि हैंवे :

आमरा आरु अस्त्रीकारु कवितेहि ये,  
आमादेह राष्ट्रकृत अमर्तय मूल लक्ष्य हैंवे मनवात्रिक  
संस्कृतिते अमन एक शोक्तम्भुक अमाकृतात्रिक जनकादेह  
अतिहा— वेष्माद उक्त नामहितकृत बन्दु अदिवेत  
शामन, द्वौचिक शानवाचिकारु एवं साकैनतिक,  
आर्येनतिक ओ आमाकृक जामा, शार्चिन ओ मूर्तिकृत  
निष्ठित हैंवे ;

आमरा शृङ्खलावे द्वाष्टावा कवितेहि ये, आमरा  
माहात्मे शार्चिन सुखारु नानु कविते नाहि एवं  
आनवक्तातिहा— अस्त्रिवामीव आमा-आरु अस्त्राद— अहित  
ग्रामातिकृत्या कविया आदुर्विक नानु ओ सहामित्याद  
एवं ये भूर्भुमिका नामन कविते नाहि, ये हैंज्ञ  
वाह्नवामण्डल अनश्वेत अविष्ट्रादहु अविष्ट्रादहु अविष्ट्रादहु  
ये हैं मनविवेष्माद अविष्ट्राद अश्वेत द्वाष्टा एवं वैष्णव  
प्रज्ञन, शामनि ओ मित्रामत्ताविवेष्मान आमारु अविष्ट्राद  
अविष्ट्राद ;

एकम्भारा आमादेह एष अपेक्षित्याद, आम  
देह शक्त उमायामी अस्त्रादेह आर्तिक मामेह आठार  
जारिख, द्वाष्टावक उमिल शक्त नाहात्मे और्कारेह  
मनश्वेत नामह चार जारिख, आमरा ये हैं मनविवेष्म  
उच्चार ओ विविवद्य कविया मनवक्तावे प्राप्ते कवियाम ।

अथात भाग

अज्ञातकृ

१। वाहनामेश एकदि एकक, श्वरीन ओ जार्विलेम  
अज्ञातकृ, माहा "गमन्त्रज्ञातकृ" वाहनामेश" नामे  
परिचित इहेवे ।

अज्ञातकृ

२। अज्ञातकृत रात्रीय जीवानाद् अनुरूपं इहेवे

अज्ञातकृत रात्रीय

(१) १९७१ ओडियोटेल मार्ट भास्मेर २६ उत्तिष्ठे  
श्वरीनता योग्यनाद् अनुवादित शूलं ये  
सकल एलाका लहेया शूलं पाकिश्चन लहित  
हिन : अबह

ओडियोटेल रात्रीय

(२) ये सकल एलाका अनुवर्तीकाले वाहनामेश  
शीमानात्मकं इहेते पादते ।

३। अज्ञातकृत रात्रीय वाहना ।

रात्रीय

४। (१) अज्ञातकृत कृतीय सभीत "आमाद्  
टमानाद् वाहना" रुपं उप्रमा समे उड़ने ।

कृतीय सभीत,  
समाका ओ उड़ने

(२) अज्ञातकृत कृतीय पताका इहेतेछे अनुरूप  
टक्केवेत ऊपरि शूलित डक्कवर्नेश्च एकदि भद्रानि दृढ़ ।

(३) अज्ञातकृत कृतीय कृतीक इहेतेछे ऊपरि  
लाल्श्च वायुशीर्षटदष्टित, पानित भास्मान कृतीय दृष्ट  
वासना, आहाद् शीर्षटदष्टे लालेशाच्छत तिनदि भवष्टु-  
शह्युकं पद, आहाद् ऊपरि लाल्श्च पूर्वेति करिया अदका ।

(४) ऊपरि-ऊपरि समसम्भूत-सालेके कृतीय सभीत,  
पताका ओ कृतीक उपरिकित विवानादनी आहेन्द मुद्रा  
विर्धाग्नित इहेवे ।

५। (१) अज्ञातकृत रात्रीयानी- प्राका ।

रात्रीयानी-

(२) रात्रीयानी- जीवाना आहेन्द मुद्रा विर्धाग्नित  
इहेवे ।

६। वाहनामेशेत नामिकवृ आहेन्द श्वाना  
विर्धाग्नित ओ विश्वकृत इहेवे; वाहनामेश नामिकवृनी  
वाजानी वनिया परिचित इहेवेन ।

नामिकवृ

७। (१) अज्ञातकृत सकल ऋषानात् मालिक  
कृमाना; अबह वृन्दावणी- गते ऋषान ऋषानात् अट्याग

सविविलव ऋषाना

त्रैकरन एवं स्वेच्छालेन अस्तीन उ कर्त्तव्ये कार्यकर्त्त रहेदे।

(२) ऊनगानेन अचिप्राम्येन पत्रम् अभिवृक्षिक्षण  
एवं स्विवान् श्रक्षाजट्टेन सर्वोष्ठ आदेन एवं अनु  
टकान् आदेन मनि एवं स्विवानेन सहित अपमान्यम्  
इस, ताहा इहेन तसेह अदिनेह अत्यधानि अपामान्यम्  
शुर्ण, अत्यधानि जातिया इहेदे।

ଛ୍ରିତୀଯ ଭାଗ

କ୍ଷାଣ୍ଟପରିଚାଳନାର ମୂଲନୀତି

८।(२) कांडीगुरावाद, जम्बाकुड्या, गर्भेत्यु उ  
प्रद्विनिवृत्तेश्वराता— एवे नीतिसंश्लेष्ट अवस्था उद्देश्य एवे  
नीतिसंश्लेष्ट इवेते उपूर्व एवे जात्या वर्णित अनु  
स्करम नीति वाक्यपरिचयनाम सूखनीति वर्णिया  
परिभ्रह्मनिति इवेते ।

मुख्यमंत्री

(२) एके आशा बर्भिं नीडिसमृद्ध वाह्यादेश-  
भविचालनात् सूनसूष्टि इहैव, आईनप्रभंश्वरकालं ज्ञात्वे  
आशा अस्मान् क्रित्वेन, एके सविद्वान् उ वाह्यादेशम्  
अनुग्रान्त् आदेनत् व्याख्यादानत् इहैवे आशा निर्दर्शक  
इहैवे एव ह आशा ज्ञात्वे उ नामक्रिकप्रति ज्ञात्वैङ्ग  
इहैवे, उद्व एके जकल नीडि आदानत्करु शाप्तुष्म  
वलवद्योग्य इहैवे ना ।

१। जाग्रामत ३ सहस्रतिंशत एकक मताविभिन्ने  
र्या वार्तानी क्षाति ऐक्यवस्था ३ सर्वकामवस्था संधारण  
करिया क्षातोऽन् मुक्तिशुद्धक मार्गेण बाल्मादेशन  
शाश्वीनता ३ सावर्णोऽप्यज्ञन करियाकृत्वा, देशे  
वार्तानी क्षातिक्रृ ऐक्य ३ सहस्रति हैवेव वार्तानी  
ज्ञातिशास्त्रावादेत् भित्ति ।

अन्तिम संस्कार

३०। ज्ञानुवेद उपर्युक्त विभिन्न विविध विषयों  
में ज्ञानानुड्डि और ज्ञानावादी समाजव्यापक विभिन्न क्रियाकार  
उद्देश्यों समाजज्ञानिक अवधैरिक व्यवस्था अतिकृ  
क होता है।

३५

२१। अक्षात्कृ इहेवे एकदि अनेककृ, दमधाल  
ट्रोविका आनवाविकाहु ओ शुद्धीनकाहु निश्चयका  
आकिटद, आनवसकाहु लर्मासु ओ सूट्यज्ज अति  
अच्छावोद्द निश्चित इहेवे एवं अशास्त्रेन लक्ष  
लर्मासु विर्वाचित्त अतिविभिन्नद शाश्वतम् कृष्णनेत्र  
कार्यकृ अशश्वाकृ निश्चित इहेव ।

३८५

२१ अमनित्येष्वजाति नीति वासुदामनहं कृन्

(क) जनत्रिकात् जाम्बुदामिकात्

(अ) दावुे कर्तृक कोन 'वर्षक' जाह्नेन्तिक प्रभासामान,

३५८

- (ग) ज्ञानेन्द्रिय उत्तमता व्यवस्थाएँ,  
 (घ) टकान विशेष वैज्ञानिकाती वृक्षिक अंडि  
     वैवर्ग्य वा ऊर्हात उपर्युक्त  
 विलोप करा इवे ।

३७। उपलब्धमन्त्र, उपलब्धव्यवस्था ओ जन्मेण्यभावो  
 असूत्रद्वय मानिक वा विशेष इवेवेन जन्मन्त्र-एवं एवे  
 उपलब्ध भाविकाना व्यवहा विघ्नकाम इवे ।

भाविकाना योगि

- (क) जाङ्गोद्दीप मानिकाना, अर्थात् आशेन्द्रिय  
 कीवन्मन्त्र अवैतन अवैतन ग्रन्थ भरेषा मूर्ख  
 ओ शुक्लिन जाङ्गोद्दीप जन्मकारी आठ  
 मृद्दित मानिकम जन्मन्त्रे नाम जाङ्गोद्दीप  
 भाविकाना ।  
 (ख) अवैतन भाविकाना, अर्थात् आशेन्द्रिय  
 ग्राहा निर्वाचित ग्रीष्मात्र संवेद्य जन्मवायमसूत्रद्वय  
 सदस्यमन्त्र शक्ते जन्मवायमसूत्रद्वय मानिकाना;  
 एवं  
 (ग) वृक्षिक भाविकाना, अर्थात् आशेन्द्रिय  
 द्वारा निर्वाचित ग्रीष्मात्र संवेद्य वृक्षिक  
 भाविकाना ।

३८। जाङ्गोद्दीप अन्यतम मौनिक दासिक इवेन  
 व्यवहनाती भानुष्ठके कृषक ओ भूमिकाके एवं जन्मग्रन्थ  
 अन्यतम अवैतनमध्येके प्रकार शोषणे इवेते  
 शुक्ल द्वारा करा ।

कृषक ओ भूमिक  
 शुक्ल

३९। जाङ्गोद्दीप अन्यतम मौनिक दासिक इवेबे  
 भूमिकाक्षित अशेन्द्रिय विकाशेन ग्राह्यम उपलब्ध-  
 शक्तिह अवैतन भाविक एवं जन्मग्रन्थ कीवन्मन्त्रात  
 वस्तुशते ओ जाङ्गोद्दीप भावने युक्त उप्रतिप्रविन, माहात्म्य  
 वायविकमन्त्र अन्य विघ्नविभित विशेषमध्ये अर्थात्  
 निर्वाचित करा याम ।

मौनिक विशेषमन्त्र  
 व्यवस्था

- (क) अद्वा, वस्त्र, जात्राय, शिखा ओ छिल्ल जामह  
 कीवन्मन्त्रन्त्रे मौनिक उपकरणन्त्रे  
 व्यवस्था ।  
 (ख) कर्मेत अविकार, अर्थात् कर्मेत उद्दन्त  
 ओ भूमिकान विवेचना करिया शुक्लिक अवैतन  
 जाङ्गोद्दीप विनियमये कर्मात्मकात्र निश्चयात्र  
 अविकार ।  
 (ग) शुक्लिक अवैतन विशेष, विलोप ओ अवकाशेन

अधिकारा: एवं

- (म) सामाजिक नियापत्तार अधिकार, आर्थिक वैकारक, व्याप्रि वा पञ्चाश्वलित किंवा वैवेद्य, ग्रामाधिकारीनका वा वार्षिकाश्वलित किंवा अनुसाम अन्यान्य भवित्विकारिता आयुक्तों कान्तेन अजावधास्तार लेख सत्कारी साहाय्यात्तेव अधिकार।

१६। नगर ओ आमाक्षलेन्द्र जीवनदायार मानेत वैवेद्य उपायान्तरावे दूर करिवार उल्लेख कृषिविश्वलेन्द्र विकाश, आमाक्षलेन्द्र वैद्युतीकरणेत व्यवस्था, कृषिरशिक्षा ओ अन्यान्य शिक्षेत विकाश एवं शिक्षा, आमाक्षलेन्द्र व्यवस्था ओ कृनश्वास्त्रेत उल्लेखलेन्द्र मान्यता आमाक्षलेन्द्र आमूल ज्ञानकृतप्राप्तिनेत इन्हे द्वारा कार्यकर व्यवस्था शहं करिवेन।

प्राप्तीन उल्लेख ओ  
कृषिविश्व

### १७। द्वारा

- (क) एकाई भूक्तित गन्धीभी ओ सर्वेतीन शिक्षा-  
व्यवस्था अतिष्ठार इन्हे एवं आईनेत दूरी  
निर्धारित दूरी नर्मुक्त सकल वालक-उपिक्षल  
अटेक्षिक ओ वायुक्षमूलक शिक्षालेन्द्र इन्हे,

- (ख) समाजकृत अमोक्षलेन्द्र जहित शिक्षाके सक्षति-  
दूर करिवार इन्हे एवं देहे अमोक्षन  
मिक्ष करिवार उल्लेख प्रथायथ प्रशिक्षन्  
प्राप्त ओ सदिक्षाक्षलादित नामिक गृहित  
इन्हे,

अटेक्षिक ओ  
नामिकामूलक शिक्षा

- (ग) आईनेत द्वारा निर्धारित प्रमत्तेत मध्ये  
नियन्त्रकरता दूर करिवार इन्हे  
कार्यकर व्यवस्था शहं करिवेन।

१८। (१) कृनश्वानेत दूरित दूर उल्लेख ओ कृनश्वास्त्रेत  
उल्लिप्राप्तिनेत द्वारा अन्यतम आधिकार कर्तव्य विभाग  
एवं विभाग एवं विभाग आदायेत आमाक्षलेन्द्र अमोक्षन  
किंवा आटिनेत द्वारा निर्धारित अन्यदिवे आमोक्षन  
व्याजोक्त मध्ये ओ अन्यान्य मादक लाभीय एवं सुमूर्द्धिक  
कर उल्लेख व्यवहार निश्चिक्षकत्वात इन्हे द्वारा कार्यकर  
व्यवस्था शहं करिवेन।

कृनश्वास्त्रेत  
विभिन्नता

- (२) अभिकारवृत्ति ओ कृनश्वास्त्रेत नियोगेत इन्हे  
द्वारा कार्यकर व्यवस्था शहं करिवेन।

१९। (१) उकल नामिकेत इन्हे सुव्याप्तेत मध्या  
सुव्याप्त नमता

निश्चित करिते राष्ट्र सदृशे इवेन ।

(2.) आनुवांशिक आनुवांशिक ओ अभीनविक लोगों विनाम करिवाह कर्त्तव्य, नामानुकामेत सर्वेषु ममतेष्व शुभम वन्देन निश्चित करिवाह कर्त्तव्य एवं अज्ञातद्वये नवेण्य अभीनविक जेष्ठस्तेष्व ममान सुत अर्जुनेष्व जेष्ठस्तेष्व शुभम शुद्धाल-शुद्धिवासम् निश्चित करिवाह कर्त्तव्य राष्ट्रे कार्यकार्य व्यवस्था प्राप्ते करिवेन ।

२०। (१) कर्म इहेतेह कर्मकर्म आजुक नामानुकामेत अभीनविक ओ अभीनविक विश्वम्, एवं “अंतर्गतेष्व विकर्त्ते इहेते व्यामानानुवाह ओ आजुक कर्मानुवासी” एवं नीतिर्व भित्तिर्व अज्ञाक शोध कर्त्तव्य कर्त्तव्य लाभित्रयिक लाभ करिवेन ।

अभीनविक ओ  
अभीनविक विश्वम्

(२.) राष्ट्रे एवन अवस्थामुष्टिर लक्ष्ये करिवेन, देखाने जातिराने नीति इसावे लक्ष्ये वृक्ष अनुपांशित अपाश त्रापा करिते समर्थ इवेन ना एवं देखाने बृक्षिरुक्तिमूलक ओ लाभिक जकलं प्रकार शम सूहित्यर्व प्रथासेत ओ मानविक व्यक्तिरेत शूर्वत्व अभिव्यक्तिर परिवर्त्तिर इवेन ।

२१। (१) मन्त्रिवास ओ आदेन प्राप्त लक्ष्य, शृङ्खला त्रक्षा लक्ष्य, नामानुकामेत लक्ष्य एवं ज्ञातीय ममति त्रक्षा लक्ष्य आजुक नामानुकामेत कर्त्तव्य ।

नामानुकामेत लक्ष्य  
कर्त्तव्य

(२.) जकलं समर्थ जनगणेत देवा करिवाह लक्ष्ये लक्ष्य अज्ञातद्वये कर्म विद्युत अज्ञाक वृक्षित कर्त्तव्य ।

२२। राष्ट्रेत निर्वाही अनाममूर्ति इहेते विद्युविजालतु शृङ्खलीकर्त्तव्ये राष्ट्रे निश्चित करिवेन ।

विद्युविजालतु  
शृङ्खलीकर्त्तव्य

२३। राष्ट्रे जनगणेत सामूहिक विश्वा ओ उत्तरा विकार्त्ते त्रप्तेत अन्य व्यवस्था प्राप्ते करिवेन एवं ज्ञातीय जास्ता, ज्ञातित्य ओ शिव्यकमानमूहेत एवन परिपोषने ओ उत्तरामेत व्यवस्था प्राप्ते करिवेन, याहुत सर्वसुत्वेर जमाने ज्ञातीय असूतिर्व लहृष्टिर अवदान ज्ञातिवाह ओ अभिव्यक्तिर करिवाह शुद्धाल-मार्त करिते लाभेन ।

ज्ञातीय समूहिति

२४। विशेष ऐतिहासिक किंवा ऐतिहासिक लक्ष्य, समस्त वा आपर्ममुक्तिर वृक्षिनिमाने, वन्तु वा वृद्धसृष्टि विकृति, विवाहे वा अपसाधने इहेते त्रक्षा करिवाह

ज्ञातीय शृङ्खलामूर्ति  
विकृति

कहा जाने वाला प्रह्लाद करिबेत ।

२५। योगी मार्दिलोमधु ओ समजत अति अच्छा,  
अस्मान्य जान्हुन अच्छुद्गुरीन विश्वामी हस्तज्ञेत ना करा,  
आनुरूपीतिक विद्वान्देव आत्मिल्लूर्म अभ्यासाम एवं  
आनुरूपीतिक आहेन्द्र ओ कृतिसंखेत समद्व रर्णित  
नीतिसमूरहत अति अच्छा— एই सकल नीति हीव जान्हुन  
आनुरूपीतिक समर्केत चिति एवं एই सकल नीतित  
चितिते जान्हुन

आनुरूपीतिक नाड्य;  
विज्ञापता ओ संतुष्टि  
तितेव

- (क) आनुरूपीतिक समर्केत जेवे शक्तिप्रयोग  
परिहार एवं सर्वानुव ओ समूर्द्ध निरन्तरी-  
करनेत जन्हु चेष्टा करिबेत;
- (ख) अत्येक कृतिर श्वासीन अभिप्राय-अनुशासी  
संघ ओ पक्षात् मार्यामे अवाहने विकृम  
ज्ञानाज्ञिक, अर्थात्तिक ओ जान्हुनेतिक  
व्यवस्था निर्धारण ओ पठनेत अभिवक्तव  
जग्धर्मने करिबेत; एवं
- (ग) साम्भाक्यवाद, औलनिदेशिकावाद वा  
वर्द्धवम्यवादेत विकृद्ध विकृद्ध सर्वज्ञ  
निपोक्ति जूनगटनेत न्यायमञ्जल जग्धामके  
जग्धर्मने करिबेत ।

## पूर्वीय भाग

### स्रोतिक अधिकार

**२५। (१)** एवे भागेन्द्र विद्यानाबनीन् गहित असमज्ञ  
अकल्प अचलिक आदेन मत्प्रभावि असामज्ञानुर्भव, एवे  
गहितान् अवर्जन हैंडेन ट्रम्पे अकल्प आदेन्द्र उत्प्रभावि  
आठिन् शहेया आदेवे ।

स्रोतिक अधिकार  
गहित असमज्ञ  
आदेन वालिय

**(२)** नाहु एवे भागेन्द्र टकान विद्यानेन्द्र गहित  
असमज्ञ टकान आदेन अनेसन कहिवेन ना परं  
अनुज्ञन टकान आदेन अभिक्ष शहेन आहा एवे भागेन्द्र  
टकान विद्यानेन्द्र गहित मत्प्रभावि असामज्ञानुर्भव,  
उत्प्रभावि बाचिन शहेया आदेवे ।

**२६।** अकल्प नाभिक आदेनेन्द्र शुहिते समान  
एवह आदेनेन्द्र समान आश्वामात्रे अधिकारी ।

आदेनेन्द्र शुहिते  
समान

**२८। (१)** टकबल खर्द, टेली, बर्न, नाडीपुरुषभेद  
वा ज्ञानसूनेन बाबुने टकान नाभिकेन अति नाहु  
देवमप्य अद्वितीय कहिवेन ना ।

खर्द अहिति बाबुने  
देवमप्य

**(२)** नाहु उ पनज्जीबरनेन्द्र अर्द्धुते नारी शुरुषेर  
समान अधिकारी वाऽच कहिवेन ।

**(३)** टकबल खर्द, टेली, बर्न, नाडीपुरुषभेद वा  
ज्ञानसूनेन बाबुने ज्ञमाधारुलेन टकान विद्यानेन वा  
विद्यानेन सूरान श्रवेशन किंवा टकान शिक्षाप्रतिक्षेप  
उत्तित विशेष टकान नाभिकेकृत टकानक्षम असमज्ञ,  
आदेयवादिकजा, बाजेय वा अर्द्धुते अभीन कडा आदेवे ना ।

**(४)** नाहो वा गिरुदेव अनुकूले किंवा नाभिक-  
देव द्ये टकान अनुज्ञन अहेन्द्र अत्यागतिर कृम्य विशेष  
विद्यानः प्रभेशन हैंडेन एवे अनुकूलेन टकान किछुई नाहुके  
विनृत कहिवेन ना ।

**२९। (१)** अकाजटकुर जर्द नियोग वा लम्बात्तु  
टकाने अकल्प नाभिकेन ज्ञन्य सूत्यालेन असाक्षा  
प्राकिन्दे ।

अकाजटकुर नियोगात्तु  
सूत्यालेन समान

**(२)** टकबल खर्द, टेली, बर्न, नाडीपुरुषभेद वा  
ज्ञानसूनेन बाबुने टकान नाभिका अकाजटकुर जर्द  
नियोग वा लम्बात्तु अट्याग्य इहेवेन वा किंवा सेहे  
प्रकारे औहात्तु अति देवमप्य अद्वितीय कडा आदेवे ना ।

**(३)** एवे अनुकूलेन टकान किछुई

- (क) नामस्थिकदेव द्यो त्वान अनशुमत अद्य  
माशाते प्रकाजक्तेव कर्म उपस्थुत  
अविदिविद्व लाभ करिते त्वात्वन, त्वै उच्चलु  
आशादेव अनुकूले विद्वान् विद्वान्प्रभान्तुन  
कर्ता इहेतु,
- (ख) त्वान अवैर्स वा उप-सम्भूषामाप्त अविद्वान्  
उक्त विद्वान्वस्तु वा उप-सम्भूषाम्भूत व्यक्तिदेव  
ज्ञय विद्याल महाप्रभान्ते विद्वावद्वन्वित  
द्यो त्वान अवैर्व कार्मकर्ता कर्ता इहेतु,
- (ग) एव इतीर्क त्वात्वं विद्वेष अकृतिः कर्तु  
ज्ञाता मात्रे वा द्वृक्षेव नाम अनुपायमी  
विद्विति इय, त्वैत्वान द्यो त्वान इतीर्क  
विद्याल वा त्वम् मध्यात्मे शुक्लम् वा  
नात्रीत ज्ञय महाप्रभान्तुन त्वान इहेतु  
त्वात्कृते निरुत करिवे वा।

३०। (१) त्वात्कृते त्वान उपादि, मध्यान वा चूषने  
प्राप्तान करिवेन वा।

उपादि, मध्यान वा  
चूषने  
प्राप्तान करिवेन

(२) त्वात्कृतिः पूर्वाद्वायाम व्यक्तित्व त्वान  
नामस्थिक त्वान विद्वेषी त्वात्कृते निकटे इहेतु  
त्वान उपादि, मध्यान, शुक्लकार वा चूषने अहन  
करिवेन वा।

(३) त्वात्मिकतात्र ज्ञय शुक्लकर विद्वा ज्ञावदम्बिग  
विशिष्टता -मान इहेतु एवे अनुष्ठानदेव त्वान किञ्चित्  
त्वात्कृते निरुत करिवे वा।

ज्ञावेत्वा ज्ञावदम्बिग  
विशिष्टता

३१। ज्ञावेत्वा ज्ञात्वास्त्वात् एव ज्ञावेनानुशास्त्री  
वा द्यक्षवान् ज्ञावेनानुशास्त्री ज्ञावहान्त्वात् एव त्वान शुक्ले  
अवश्याम्भूत अद्यक्त नामस्थितिकर्ता एव आभिस्थिकात्र  
वाऽनाम्भूते अवश्याम्भूत अवश्याम्भूत व्यक्तित्व अविद्वित्य  
अविकारु-एव विद्वेषी ज्ञावेनानुशास्त्री व्यक्तित्व अवश्य  
त्वान व्यक्तित्व एव त्वान व्यक्तित्व अविकारु-ज्ञावेन  
व्यक्तित्व व्यक्तित्व व्यक्तित्व, शुक्लीनाम, द्यक्ष, मुनाम वा सम्भित्व  
द्यानि घटेत।

३२। ज्ञावेनानुशास्त्री व्यक्तित्व व्यक्तित्व व्यक्तित्व  
ज्ञावेनाम इहेतु त्वान व्यक्तित्व व्यक्तित्व व्यक्तित्व  
मावेत्वा वा।

व्यक्तित्व वा  
व्यक्तित्व व्यक्तित्व  
ज्ञावेनाम-ज्ञावेन

३३। (१) त्वान अशुद्धावकृत व्यक्तिक अशुद्धावक

काजनं व्यापनं ना किंप्रा अशङ्का अपेक्षा शाश्वा माईव  
ना एवं उक्त व्युत्तिके ऊंशात् अनुनोद आहेनकीबीज  
अस्त्रित लक्षाग्रन्थिः ३ ऊंशात् द्वात्रा अप्यनुक्रमभर्त्येत  
ज्ञाविकात् इतेते व्यक्तित तत्रा माईव ना ।

षष्ठ्यात् ३ अपेक्षा  
समार्थक उक्ताकादृ

(२) द्वयुत्तात्त्वकृत ३ अशङ्का अपेक्षा अपेक्षक  
व्युत्तिके द्वयुत्तात्त्वकृत भविता अनुग्रह सर्वेत् (ऊंशात्तके  
ज्ञाविकानुदृत आवश्यकतेत अनुग्रहाकृतीय समय व्युत्तिकृत)  
आप्यानुदृत इतिहास कत्रा इतेव एव आप्यानुदृत अप्यानु  
व्युत्तित ऊंशात्तके उप्युत्तिकृत काम अपेक्षक शाश्वा  
माईव ना ।

(३) टकान विद्युती अनुकृत द्वयुत्त उपेक्षि-उक्त  
मध्यानमूहत तकान किछुते अमोऽहा इतेव ना ।

७४। (१) अकम द्वकात् अप्यनुभिति-शम निषिद्धः  
एवं परे विद्यान टकानात्तेव लक्षित इतेव तात्रा  
आहेनतः दक्षताम् अप्यनुभवे वलिप्रा त्यज्य इतेव ।

कव्यनुभिति-शम  
निषिद्धकादृ

(२) परे अनुद्वयेत टकान किछुते त्येते ज्ञाविक  
वायुत्तामूलक अमेत द्वयुत्त अमोऽहा इतेव ना,  
ऐभान-

(क) द्वोक्त्वात्ती अप्यनुभवे अनु तोम व्युत्ति  
आहेनतः दक्षताम् किछुतेत्यतः अप्यवा

(ख) अनुद्वयेत उद्देश्यानुभवेत्यकृतो आहेनेत  
द्वात्रा तात्रा अपेक्षक इतेत्यतः ।

७५। (१) अप्यनुभवे द्वात्तमूलक कार्यप्रस्तेनकात्य  
वनवद् द्वित, एवेक्तु आहेन भवा व्युत्तिवात् अप्यनुभवे  
व्युत्तित तकान व्युत्तिके दोषी ज्ञावामुक्त तत्रा माईव ना  
एवं अप्यनुभवे प्रस्तेनकात्य वनवद् त्येते आहेनवात्य त्य  
मक्त द्वयुत्ता माईते नावित, ऊंशात्तके ऊंशात् अविक  
वा तात्रा इतेते विद्वा दक्ष देवया माईव ना ।

विद्यात् दक्ष  
समार्थक उक्तात्त

(२) एक अप्यनुभवे अनु तोम व्युत्तिकृत एवाविक  
वात् द्वोक्त्वात्तीते द्वयुत्तमूर्त ओऽक्तित तत्रा माईव ना ।

(३) द्वोक्त्वात्ती अप्यनुभवे द्वात्रा अप्युत्तमूलक  
अतेतकृत व्युत्ति आहेनेत द्वात्रा उप्युत्तिकृत द्वात्रीत ओ  
विद्यानमात्तेत अविकात्ती इतेवेत ।

(४) टकान अप्यनुभवे द्वात्रा अप्युत्तमूलक व्युत्तिकृत  
मित्येत विकृतद्वा द्वात्रा द्विते वायु तत्रा माईव ना ।

(५) टकान व्युत्तिकृत दक्षता द्वयुत्ता माईव ना  
किंवा निष्ठृत, अप्यानुभविक वा नाष्टुमात्तकृत दक्ष द्वयुत्ता

माहेवे ना किद्या काहारु गहित अनुज्ञा चुवशार  
काजा अस्तिवे ना ।

(५) प्रथमित आइने निर्दिष्ट एकान् दक्ष वा  
विहारनष्ठि गम्भीर्ण एकान् विधानद्वारा आकृत  
अनुच्छेदः (६) वा (७) दक्षान् एकान् किंतु अधावित  
कर्तिवे ना ।

७६। इन्द्राम्भे<sup>१</sup> आइने द्वारा आलोचित मुक्ति  
गम्भीर्ण वादानिष्ठे-सापेक्षे वाह्यादेशे गम्भीर्ण आवाय  
क्षमामेता, इतीर्थ द्वे एकान् मूलान् विवराम ओ गम्भीर्ण  
मूलामन एवं वाह्यादेश त्याग ओ वाह्यादेश मूलामन  
करिवान् अविकार्ण अत्येक नामरिकेत्वं भाकिवे ।

इन्द्राम्भे गम्भीर्ण

७७। इन्द्राम्भना वा इन्द्राम्भस्युत्र युग्मे<sup>२</sup> आइने द्वारा आलोचित मूक्तिगम्भीर्ण वादानिष्ठे-सापेक्षे  
शास्त्रिधूर्मतावे ओ निर्मुक्त अवमूल्य सम्बोध इतीर्थ  
एवं इन्द्राम्भा ओ देवातामात्राम् देवाम्भान् करिवान्  
अविकार्ण अत्येक नामरिकेत्वं भाकिवे ।

इन्द्राम्भ गम्भीर्ण

७८। इन्द्राम्भना ओ नैतिकतान् द्वार्थे<sup>३</sup> आइने द्वारा आलोचित मूक्तिगम्भीर्ण वादानिष्ठे-सापेक्षे  
गम्भीर्ण वा गम्भीर्ण गठेन् करिवान् अविकार्ण अत्येक  
नामरिकेत्वं भाकिवे ;

इन्द्राम्भ गम्भीर्ण

७९। अर्थ अर्थ थाके से, इन्द्राम्भिक उपेक्षासम्बन्ध  
वा लभ्यानुभावी एकान् गम्भीर्णमानिक गम्भीर्ण वा गम्भीर्ण  
किद्या अनुज्ञा उपेक्षासम्बन्ध वा लभ्यानुभावी  
अर्थात् नाममूल्य वा विभिन्निक अन्य एकान् गम्भीर्ण  
वा गम्भीर्ण गठेन् करिवान् वा आहार गम्भीर्ण इतीर्थ  
वा अन्य एकान् अवकार्ण आहार उपेक्षासम्बन्ध अहं  
ग्रहन करिवान् अविकार्ण एकान् गम्भीर्ण भाकिवे ना ।

८०। (१) चिन्ता ओ विदेशके गम्भीर्ण निश्चयामान  
काजा इतील ।

चिन्ता ओ विदेशक  
गम्भीर्ण वा वा  
वा क्षमाविवाहा

(२) उत्कृष्ट निरापदा, विदेशी राहुमस्यात् गहित  
जन्मानुष्ठि गम्भीर्ण, अवश्यक्या, आवीनता वा नैतिकतान्  
द्वार्थे<sup>४</sup> किद्या आमानात्-अवमानना, गम्भीर्ण वा अम्भीर्ण  
उपेक्षेन अरोहना गम्भीर्ण आइने द्वारा आलोचित  
मूक्तिगम्भीर्ण वादानिष्ठे-सापेक्षे

(३) अत्येक नामरिकेत्वं वाह्य ओ आवत्तकाशे व  
गम्भीर्ण अविकार्ण, एवं

(४) अद्वादशकांड साधीनारात्  
निश्चयता मान करा इतेव ।

४०। याईटनव द्वारा आदापित वादामिष्ट्य-  
प्राप्तेष्क टकान दमना ना बृति-प्रहलेत किंवा  
कात्तवात् वा व्यवसाय-परिचालनात् कृत्य  
याईटनव द्वारा टकान दमनका निर्वाचित हेया भाकिल  
अनुकूल द्यावत्तासम्भव अत्येक नामिकेत त्ये टकान  
याईटनवात् देखा वा बृति-प्रहलेत एवं ये टकान  
याईटनवात् कात्तवात् वा व्यवसाय अधिकारात् अविकार  
भाकित्वे ।

दमन वा दुष्टि-  
साधीनारा

- ४१। (१) आईन, कृत्यज्ञवा ओ नैतिकता भास्त्रेण  
(क) अत्येक नामिकेत त्ये टकान ईर्ष्य अवलम्बन,  
मानन वा प्राचारेत अविकार दृष्टिसाहृ;  
(ख) अत्येक ईर्ष्य-सम्भवात् ओ उपःसम्भवायेत  
निजस्त्र ईर्ष्य-अतिकौनेत सूचन, इत्यन्न  
वा व्यवसायनाह अविकार दृष्टिसाहृ ।  
(२) टकान शिकायतिकौन द्यावदानकाढी टकान  
व्यक्तित निजस्त्र ईर्ष्य-अर्थात् ना हेने जोहाके त्यान  
ईर्ष्य-शिकायतहने किंवा टकान ईर्ष्य-अनुरूपान वा  
उपासनाय अद्वादशकांड वा द्यावदान करिते हेव ना ।

दमन साधीनारा

- ४२। (१) आईनव द्वारा आदापित वादामिष्ट्य-  
प्राप्तेष्क अत्येक नामिकेत समति अर्जन, द्यावन,  
इन्द्राचार ओ अनुजाते विनि-व्यवस्था करिवाह अविकार  
भाकित्वे एवं आईनव कर्त्त्व व्यक्तित टकान समति  
वाद्यज्ञासूलकजाते प्रश्न, राष्ट्रोप्तात वा दृभव कर्त्ता  
मार्गेत्वे ना ।

समति अविकार

- (२) एवं अमुक्तदेव (३) "द्यावन अर्दीव अनीत  
याईने फलित्यूतनेमह वा द्यावना फलित्यूतने नाश्यता-  
सूलकजाते प्रश्न, राष्ट्रोप्तातकर्त्ता वा "द्यावनव विवाह  
कर्त्ता इतेवे एवं टकान द्यावद फलित्यूतनेत विवाह कर्त्ता  
इतेवे जाहाज लियान निर्वाहने किंवा अनुकूल  
फलित्यूतन निर्वाह ओ अपानेत नीति ओ नदूति विदिते  
कर्त्ता इतेवे; तदा अनुकूल टकान याईने फलित्यूतनेत  
विवाह कर्त्ता इम्ह नाहे विवाह किंवा अनुकित्यूतनेत  
विवाह आपर्यानु इतेवाह विवाह त्याहे आईन समतेके  
टकान आपर्यानेते टकान अन्न ठेवावन करा मार्गेत्वे ना ।

४३। करात्तेन विजापता, कृनशुभेना, कृनसाधारणेन  
टैनिकज्ञा वा कृनम्भास्त्रहर्ष शार्थं आईनेन प्राप्ता  
आद्वापित मूर्खिमाला वादीनिष्ठेव-प्राप्तेन अत्यक  
नाडानिकेन

४४. ३. योगायात्र  
नवन-

- (क) ग्रवेश, उच्चाशी ओ आटेक इहेत्ते श्वीम  
मृहे विजापतालाभेन अविकार शाकिव;  
प्रवृ-
- (ख) चिटिपतेन ओ ट्योगायात्रेन अन्यान्य  
उपायेन लोपनवाहकात् अविकार  
शाकिवे ।

४४। (१) एই भागे अदल अविकारमध्ये बलवृ,  
कविवाह उन्ने एই संविवाहेन २०२ अनुच्छेदेन (१)  
प्रका-अनुमासी मूलीम कोटेन विकटे प्राप्तमा कृजु  
कविवाह अविकाहव विश्वसतादान करा हीन ।

प्रौढ़िक अविकार  
बलवृकर्ता

(२) एই संविवाहेन २०२ अनुच्छेदेन अवीन  
मूलीम टकाटेन अप्रताह शामि ना घोडेशा संसम्प  
आईनेन प्राप्ता अन्य टकान आदानेतके ताशाव  
एधिज्ञाहेन प्राप्तीम् सीमाव यत्येम मूलीम टकाटे  
कर्त्तके प्रयोगमान्य उक्ते वा ये टकान अविकार  
उपायेन अप्रताह दान करिते प्राप्तिवेन ।

४५। टकान शूभेना-वाहिनीम् सदस्य-ममाकित  
कोन शूभेनामूलक आईनेन ये टकान विवाह उक्त  
सदस्यदेन यथायथ कर्त्तव्यमालन वा उक्त वाहिनीते  
शूभेनावज्ञा विविते कविवाह उपदेश्य प्रभीते विवाह  
विविशा अनुकूल विवाहेन फेह्ये एই आगेर कोन  
किछुरे अर्थात् हीवे ना ।

शूभेनामूलक  
आईनेन रेखदे  
अविकाहेन अविकर्ता

४६। एই आगे शूर्वर्वित विवाहावलीते माशा  
वला हैशार्च, ताहा सत्त्वेत अज्ञातक्रुत कर्म निमूल  
टकान व्युक्ति वा अन्य टकान व्युक्ति जातीम् मूलीम  
संसाधेन प्रयोगने किंवा वालादेशेन ताशीम्  
जीवानाव यत्वे ये टकान अप्यालन शूभेना-तशी वा  
पूनवहानेन अप्रयोगने टकान कार्य कविमा याकिल  
संसाधेन आईनेन प्राप्ता लेहे व्युक्तिके मासमूल  
करिते प्राप्तिवेन किंवा ए अप्यालन अदल टकान  
दक्षादेश, दक्ष वा वाज्याप्तिर आदेशके किंवा  
अन्य टकान कार्यके वैवर्य कविमा लैते प्राप्तिवेन ।

दासमूलि-विवाह  
अवाह

४७। (२) निश्चन्तिभित्र द्यु टकान विश्वासा विश्वास-  
मन्त्रनिष्ठा टकान ज्ञाइने (अचन्ति अवाइनेत्र द्युप्र  
प्रश्नाविनीत आव्याप्ता) जहांसद् यदि भगवत्तुले योग्यी  
कर्तव्य द्यु, एवं निश्चन्तिभित्र द्युडीप्ताला वर्णित राष्ट्र-  
पत्रिचाननाम सूत्रमेत्र टकान एकाधिक कार्यकर  
कर्तव्यात् उन्हु अनुकूल विश्वास करा हरेन, जहा हरेन  
अनुकूल आइन एहे ताला निश्चमृक्त टकान निविकाहृ  
निष्ठि अप्रमध्या किंवा अनुकूल अविकाहृ इहाने वा  
अवृ करितेछ, एहे काहाने वातिल बनिया गर्ने  
हरेने ना :

कठिपट्ट जाईनह  
हरेन

- (क) टकान सम्भाति वाव्युजामूलकजावे अहन,  
स्थाष्ट्रामूलकजन्म वा दृश्यन किंवा मामयिक-  
जावे वा स्थाष्ट्रीजावे टकान सम्भातित  
निश्चकुन्त वा व्यवस्थापना;
- (ख) वानिकित्यक वा अनुविवेच औद्योगिनमन्त्र  
एकाधिक अतिष्ठानेत्र वाव्युजामूलक  
नहमूलकजन्म;
- (ग) अनुकूल द्यु टकान अतिष्ठानेत्र नहिचालक,  
व्यवस्थापक, अहेन्हे ३ कर्मचारीद्युह  
अविकाहृ एवं (द्यु लोन अकाहृ) लहान  
३ गोकर्त्र मामिकदेव जोषिकाहृ विलाप,  
निवर्तन, सोमित्रकजन्म वा विश्वकुन्त;
- (घ) अनिष्ठुवर्य वा अनिष्ठ तेव अद्युत्तमाम ना  
नाहेत्र अविकाहृ विलाप, निवर्तन,  
सोमित्रकजन्म वा विश्वकुन्त;
- (ङ) अन्याम्य व्यक्तिक अहेता वा सम्भूतिः  
अविकाहृ करिया अहकाहृ कर्तृक वा  
अहकाहृ निश्चमृ, निश्चमृभावीन वा  
व्यवस्थापनाभीन टकान अस्त्रा कर्तृक द्यु  
टकान काहवाहृ, व्यवसाम्, शिव्य वा  
कर्मविजात चालना; अथवा
- (च) द्यु वेगम सम्भातित श्रव्य विलापला,  
नृति, काहवाहृ वा व्यवसाम् अकाहृ  
द्यु टकान अविकाहृ किंवा टकान  
निश्चन्तिभित्र, सकाहृ अतिष्ठान वा टकान  
वानिकित्यक वा शिव्यमेत्र औद्योगिनेत्र  
ग्रानिक वा कर्मचारीदेव अविकाहृ  
विलाप, निवर्तन, सोमित्रकजन्म वा  
विश्वकुन्त।
- (२) एहे संविवादे याहा ज्ञान हईयाहृ, जहा

मात्रकृत अवगत उक्तमिति चर्नित ज्याइनसमूह ( अनुकूल  
ज्याइनव टकान अद्विद्विनीप्रभ) शूर्णजाते बनवड ओ  
कार्यकर्त्ता इवेते प्राकिद्वा एवं ज्यानुकूल टव टकान  
ज्याइनव टकान विवेच किहवा अनुकूल टकान ज्याइनव  
कर्त्तव्य माशा करा इवेमात्र वा करा इमा माशि, ताशा  
एवे ज्यद्विद्विनीप्रभ टकान विवेचनव ग्रहित ज्यानग्रहण  
वा ज्याहात लिपिष्ठी, एवे कावर्णे वातिला वा देवाईनी  
नविष्टा भन्तु इवेदे ना :

उद्वे शर्त आके ट्य, एवे अनुकूलदत्त टकान  
किछुदे अनुकूल टकान ज्याइन वा विवेचके ज्यमन्तु  
ज्याइन-मात्रा परिवर्तन वा वातिम करा इवेते  
निवृत्त करित्वे ना, उद्वे अद्विनद इवेकम ज्याइनव  
अन्य आनीत टकान विवेच यदि अमन टकान विवेच  
प्राके किहवा ज्याहात अमन टकान कार्यकर्त्ता आके,  
मात्राक फल टकान सम्भवि इवेते ज्याहु इकित इन, किहवा  
ज्याहु कर्त्तव्यक टम्हा टकान श्विमूलनेव सविभान्नद्विधि  
इया, ताहा इवेन अनुकूल विवे सहमन्तव योदे समन्न-  
मरम्भाद अनूडन सूरे-इतीमार्गान्व जोते शूशीत वा  
इवेन अक्षरातिर जहना ताहा ज्याहुपतिव विकटे  
उपमूर्द्धित इवेदे ना ।



## ଚତୁର୍ଥ ଭାଗ

### ନିର୍ବାଚିତ ବିଭାଗ

#### ୧୩ ପରିଦ୍ରହନ- ରାଷ୍ଟ୍ରପତି

୪୮। (୧) ବାହନାଦେଶର ଏକଜ୍ଞ ରାଷ୍ଟ୍ରପତି ଗାକିଲେ, ଯିନି ଦ୍ଵିତୀୟ ତତ୍ତ୍ଵନିଲେ ସର୍ବିତ ବିଭାବରେ ଅନୁଯାୟୀ ସହମଦ-ସହମଧ୍ୟ କର୍ତ୍ତ୍ତକ ନିର୍ବାଚିତ ହେବେନ ।

(୨) ରାଷ୍ଟ୍ରପତିବିଭାବରେ ରାଷ୍ଟ୍ରପତି ଅନ୍ୟ ଅକଳ ନ୍ୟକ୍ତିର ଡେଣ୍ଡ୍ ମୂଳ ଲାଭ କରିବେନ ଏବଂ ଏହି ସହିତୀ ଓ ଅନ୍ୟ କୋନ ଆଇନେର ଦ୍ୱାରା ଔହାକେ ଅନ୍ତର୍ଭବ ଓ ଔହାର ଉପର ଅପିତ୍ତ ଅକଳ ଅଭିଭାବ ଓ କର୍ତ୍ତ୍ତବ୍ୟ ପାଲନ କରିବେନ ।

(୩) ଏହି ଜାହବିଧାନେର ୫୬ ଅନୁଦ୍ରହନେର (୩) ଦମା-ଅନୁଯାତର ଟକବଳ ପ୍ରଦୀନମନ୍ତ୍ରୀ-ମିଳାପେର ପ୍ରେସ୍‌ଆ ବ୍ୟାଚିତ ରାଷ୍ଟ୍ରପତି ଔହାର ଅନ୍ୟ ଅକଳ ଦାଖିଙ୍ଗପାଲମେ ପ୍ରଦୀନମନ୍ତ୍ରୀର ପରାମର୍ଶ-ଅନୁଯାୟୀ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବେନ;

ଅବେ ଶର୍ତ୍ତ ଯାକେ ମେ, ପ୍ରଦୀନମନ୍ତ୍ରୀ ରାଷ୍ଟ୍ରପତିକେ ଆଦୌ କୋନ ପରାମର୍ଶ ଦାନ କରିଯାଇଛୁ କି ନା ଏବଂ କରିଯା ଯାକିଲେ କି ପରାମର୍ଶ ଦାନ କରିଯାଇଛୁ, କୋନ ଆଦାଳତ ଯେହି ସମ୍ବନ୍ଧରେ କୋନ ଅଶ୍ଵେର ଅଦ୍ଦନ କରିବେ ପାରିଯନ ନା ।

(୪) କୋନ ବ୍ୟକ୍ତି ରାଷ୍ଟ୍ରପତି ନିର୍ବାଚିତ ହେବାର ମୋହ୍ୟ ହେବେନ ନା, ଯଦି ତିନି

(କ) ପ୍ରେସ୍‌ଆ ରହିଲେର କମ ବୟବ୍ଧ ହୁ, ଅଥବା

(ଖ) ସହମଦ-ସହମଧ୍ୟ ନିର୍ବାଚିତ ହେବାର ମୋହ୍ୟ ନା ହୁ; ଅଥବା

(ଘ) କଥନତ ଏହି ଜାହବିଧାନେ ଅଧୀନ ଅଭିଭାବ ଦ୍ୱାରା ରାଷ୍ଟ୍ରପତିର ପଦ ହିତେ ଅପରାଧିତ ହେଯା ଯାକେମ ।

(୫) ପ୍ରଦୀନମନ୍ତ୍ରୀ ରାଷ୍ଟ୍ରପତି ଓ ପରାମର୍ଶ ନୀତି-ମଧ୍ୟକୁ ବିଷୟାଦି ସମ୍ବନ୍ଧରେ ରାଷ୍ଟ୍ରପତିକେ ଅବହିତ ରାଖିବେନ ଏବଂ ରାଷ୍ଟ୍ରପତି ଅନୁରୋଧ କରିବେ ଯେ କୋନ ବିଷୟ ମହିମାଭାବ ବିବେଚନୀୟ କର୍ତ୍ତ୍ତ ଦେଶ କରିବେନ ।

୪୯। କୋନ ଆଦାଳତ, ପ୍ରେସ୍‌ଆନାମ ବା ଅନ୍ୟ କୋନ କର୍ତ୍ତ୍ତପତି କର୍ତ୍ତ୍ତକ ଅନ୍ତର୍ଭବ ଏବଂ ଏହି କୋନ ଦର୍ଶକମାନୀୟ ମହିମାଭାବ ଓ ବିରାମ ମଜ୍ଜୁର କରିବାର ଏବଂ ଏହି କୋନ ଦର୍ଶକ ମନ୍ତ୍ରକର୍ତ୍ତ,

ଅଧ୍ୟାତ୍ମମର୍ମର  
ଅଧିକାର

मूलित वा त्रास करिवार जगता राष्ट्रपति शक्ति ।

५०। (२) एই संविधानेत्र विवानाबदी-भालौक राष्ट्रपति कार्यजात्याहनेर तारिख इहेते पाँच वर्षावर मैसादे औहार पदे अधिक्षित शक्तिवन् ।

राष्ट्रपति-पदव  
मैसाद

उद्दे शर्त भालौक ये, राष्ट्रपति शक्ति ये मैसाद लेगा इत्या अद्वैत औहार उत्तराधिकारी कार्यजात्याहने ना करा पर्यन्त तिनि श्रीम पद-वहन शक्तिवन् ।

(२) एकादिक्रमे हठेक वा ना हठेक- मुद्रे मैसादेर अधिक राष्ट्रपति शक्ति तेज गुण अधिक्षित शक्तिवन् ना ।

(३) स्त्रीकाठेर उद्देशे मूलकरमूक भजमाल राष्ट्रपति श्रीम पद ज्ञान करिते शक्तिवन् ।

(४) राष्ट्रपति औहार कार्यजात्याहने- अहमद-समस्या निर्वाचित इहेवार योग्य हवेवन ना, अबह कोन अहमद-समस्या राष्ट्रपति निर्वाचित इहेवे राष्ट्रपति कले औहार कार्यजात्याहनेर दिन मैसाद औहार आग्नन शून्य हवेवे ।

राष्ट्रपति-शक्ति

५१। (१) एই संविधानेत्र ५२ अनुच्छेदह इनि ना अटोइया विवान करा इहेतेह ये, राष्ट्रपति औहार सायित्वालाले करिते तिन्हा किंवा अनुकूल विकल्पाम टकान कार्य करिया शक्तिवे वा ना करिया शक्तिवे तेहेक्कन्या औहारके टकान योग्यामते ज्ञावदिवि करिते इहेवे ना, उद्दे एই यहा जड़काठेर विकल्प कार्यधारा श्रेष्ठे टकान व्यक्तिव अधिकार शून्य करिते ना ।

(२) राष्ट्रपति कार्यजात्याहनेर औहार विकल्प टकान योग्यामते टकान अकार योजनाही कार्यवाचा द्वामेर करा वा छान्य ज्ञाना शहेवे ना अवह औहार उत्तराह वा काजावामेव कर्त्ता टकान योग्यामते इहेते नहेयाना छाही करा शहेवे ना ।

राष्ट्रपति अधिकार

५२। (१) एই संविधान स्वाम वा अनुच्छेद अभियोगा राष्ट्रपति के अधिभृति करा शहेते शक्ति वैहार शून्या ज्ञानविह अप्पेत व्यक्तित्व अनुकूल अभियोगेर विकल्प तिपिक्का करिया एकति अमुखवेर तोहिन असीकाठेर निकटे अदान करिते इहेवे; स्त्रीकाठेर निकट अनुकूल योग्याप्तमानेत्र दिन इहेते रोधे दिनेर शूर्व वा दिन दिनेर लह एই अमुख योग्याप्ति इहेते शक्तिवे ना;

एवं संसद् अविवेशनकृत ना भाकित्वा सभीकार  
अविवेष्ट संसद् आक्षयन करिवेन ।

(२) एই अनुच्छेदक अभीन तकान अवियाम  
अमन्त्रे कृत लन्त्रा संसद् कर्त्तक निमूळ वा आभ्यासित  
तकान आपानकृत, ग्राइड्रानाम वा वार्त्तपत्रे विकटे संसद्  
जाक्षेपत्रित जाचल्ले लोकह करिते भाविवेन ।

(३) अवियाम-विवेशनाकाले जाक्षेपत्रित उपस्थित  
भाकित्वा एवं अविनिवित्त-प्रबन्धने अविकार भाविवेन ।

(४) अवियाम-विवेशनात्र लक्ष्मोषे सदस्य-संभाव  
जावून मुहे-तीमार्श जोडे अवियाम "मध्यार्थ" बनिः  
घोषना करिया संसद् तकान अमुव त्रहने करिने  
अमुव शृंहीत इवाक्त जाविष्य जाक्षेपत्रि लक्ष्म शून्य  
हवेवे ।

(५) एই संविदानक २४ अनुच्छेद-अनुग्राही  
सभीकार कर्त्तक जाक्षेपत्रि दायित्वानवाकाले एই  
अनुच्छेदक विवेशनाकृती एই परिवर्तन-सालेक्त्र अवाक्षु  
हवेवे ये, एই अनुच्छेदक (१) दफाया सभीकारकृत उपस्थिति  
जाक्षेपत्रि सभीकारकृत उपस्थिति बन्त्र हवेवे एवं (२)  
दफाया जाक्षेपत्रि लक्ष्म शून्य इवाक्त उपस्थिति सभीकारकृत  
लक्ष्म शून्य इवाक्त उपस्थिति बन्त्र हवेवे; एवं  
(३) दफाया बन्ति तकान अमुव शृंहीत इवाक्त सभीकार  
जाक्षेपत्रि दायित्वानवाकाले विवृत हवेवेन ।

५० (१) नाहीत्रिक वा भावित्वा अप्राप्यर्थक कारने  
जाक्षेपत्रिके तीहाक्त लक्ष्म इवाक्त अप्राप्यर्थक कृता याईते  
भाविवेन; इहाक्त लन्त्रा संसदेत्र मोषे सदस्य-संभाविते  
अवलोक्त खाक्तके कथित अप्राप्यर्थक विवेशन निविद्या  
करिया एकटि अमुव लोक्ति सभीकारकृत विकटे प्रमान  
करिते हवेवे ।

अप्राप्यर्थक कारने  
जाक्षेपत्रि विवेशन

(२) संसद् अविवेशनकृत ना भाकित्वा लोक्ति  
आनुकूलाय सभीकार संसदेत्र अविवेशन आक्षयन करिवेन  
एवं एकटि चिकित्सा-पत्रद (अजापत्र एवं अनुच्छेद  
"पत्रद" बनिः अविहित) लोक्ति अमुव अविवेशन  
करिवेन एवं अप्राप्यर्थकीय अमुव उपस्थिति ओ शृंहीत  
इवाक्त लक्ष्म सभीकार उपस्थिति उक्त लोक्ति एकटि  
प्रतिमिति जाक्षेपत्रि विकटे उपस्थिति गुवमूर्ति करिवेन  
एवं तीहाक्त जाईत एवे सर्वे दायित्वापूर्व अनुकूलाय आपान  
करिवेन ये, अनुकूलाय अनुकूलाय-आपानकृत अविष्य इवाक्त  
लक्ष्म दिलेत्र मध्ये जाक्षेपत्रि येव लक्ष्मेत्र विकटे अविहित  
इवाक्त अन्त्र उपस्थिति हन ।

(३) अप्सारनेत्र अन्य असुवेदन वोटिं  
जीवीकारत्र विकटे असानेत्र नह इहेते कोइ  
दिनेत्र दूर्वे वा दिशा दिनेत्र नह असुवेदि  
त्राटे दमदमा माहेवे ना, एवं अनुकूल मेघालृ  
भवे असुवेदि उच्चापनेत्र अन्य दूनडामु संसद  
आशानेत्र अट्टमाज्ञन इवेने जीवीकार असमद  
आशान जरिबेन ।

(४) असुवेदि विवेचित इवेवार काले राष्ट्रपतिर  
उपस्थित आकिवार एवं अतिविविधवालृ अविकार  
आकिबेवे ।

(५) असुवेदि संसद उच्चापनेत्र दूर्वे राष्ट्रपति  
पर्वदेव दूरा नहीकित इवेवार कहन्य उपस्थित वा  
इवेया आकिले असुवेदि भोटे दमदमा गाइते पारिबे  
एवं असमदेव टोटे सदमा-संभ्यार असुवान मूहे-झोयाल  
भोटे आहा पूरीत इवेने असुवेदि पूरीत इवेवार  
तारिख्य राष्ट्रपतिर पद शुन्य इवेवे ।

(६) अप्सारनेत्र अन्य असुवेदि संसद उच्चापित  
इवेवार दूर्वे राष्ट्रपति पर्वदेव विकटे जीवीकित  
इवेवार अन्य उपस्थित इवेया आकिले संसदेव विकटे  
पर्वदेव इत्तम लेले करिवार सुयोग वा देओमा  
पर्वन्तु असुवेदि भोटे देओमा माहेवे ना ।

(७) संसद कर्त्तक असुवेदि ओ पर्वदेव विलाई  
(याहा एहे अनुच्छेदेव (२) दफ्तर-अनुसार नहीकार  
मात्र दिनेत्र मार्ये साधिल करा इवेवे एवं अनुकूल-  
वावे साधिल ना करा हिवेने आहा विवेचनार असोज्ञ  
हिवेवे ना ) विवेचित इवेवार पर्व संसदेव टोटे सदमा-  
संभ्यार अनुदान मूहे-झोयाल भोटे असुवेदि पूरीत  
हिवेने आहा पूरीत इवेवार आविष्म राष्ट्रपतिर पद  
शुन्य इवेवे ।

२४। राष्ट्रपतिर पद शुन्य इवेने किंवा असुविष्टि,  
असुवज्ञा वा अन्य एकाम काळने राष्ट्रपति द्वायित्वावान  
जासामर्व इवेने एकामक राष्ट्रपति विवेचित ना होया  
पर्वन्तु किंवा राष्ट्रपति शुनडाम शीर्ष कर्मिल ग्रहन  
ना करा पर्वन्तु जीवीकार राष्ट्रपतिर द्वायित्व पालन  
जरिबेन ।

असुविष्टि अत्यन्त  
काले राष्ट्रपति-पद  
आविष्म

## २५। परिच्छेद-अविनमत्ती ओ मन्त्रिसभा

२५। (१) अविनमत्तीक नेतृत्वे वाहनादेश्वर एकत्रि मन्त्रिसभा

अन्तिमज्ञा भाकिवे अवह श्रवणमस्तु ओ समये समये तिनि  
मेकप छुड़ करिवेन, सैरेक्ल अन्यान्य मस्तु खैसा  
एहे अन्तिमज्ञा पर्हित इहीवे ।

(२) अथानमस्तु कर्त्तक वा औहार कर्त्तव्य एहे संविधान-  
अनुभासी अकातक्त्रै निर्वाही फलता प्रयुक्त इहीवे ।

(३) अन्तिमज्ञा वौभावे असमद्व निकटे दामी  
भाकिवेन ।

(४) अरुकात्रेर अकल निर्वाही बुवमू राष्ट्रपतिः  
नामे गृहीत इहीमाछ बनिया अकाश करा इहीवे ।

(५) राष्ट्रपतिः नामे अनीत आदेशमस्तु ओ  
अन्यान्य छुडिपति किम्ल प्रजायित वा अमानीकृत  
इहीवे, राष्ट्रपति जाहा विविमस्तु-घारा निर्वाहने  
करिवेन अवह अनुकूलज्ञावे प्रजायित वा अमानीकृत  
एकान आदेश वा छुडिपति अथामज्ञावे अनीत वा  
अम्भायित इया नाहे बनिया जाहार ईरेक्ता अफर्के त्रान  
आदान्त्रे अन्न उभालन करा गाहिवे ना ।

(६) राष्ट्रपति अरुकात्री कार्यविमो जनेन ओ  
भविताननाऱ्य अन्य विविमस्तु अनेकन करिवेन ।

५५। (१) एकज्ञन अथामस्तु भाकिवेन एवह अन्तिमज्ञा  
अथामस्तु ईक्ल निर्वाहन करिवेन, सैरेक्ल अन्यान्य  
मस्तु, अति-मस्तु ओ फेलमस्तु भाकिवेन ।

(२) अथामस्तु ओ अन्यान्य मस्तु, अति-मस्तु ओ  
फेलमस्तु दिग्मके राष्ट्रपति नियोगदान करिवेन;

जहे शार्क घारक ये, सहसद-सदस्य ना इहीवे  
एहे अनुकूलत्र (३) द्वान-जापेष्ट्र त्रान व्यक्ति अनुसन  
नियोगदानेर योग्य इहीवेन ना ।

(४) ह्य सहसद-सदस्य सहसद्व अध्यापादिष्ठ  
अस्त्रेष्ट्र आनुभावहन बनिया राष्ट्रपतिः निकटे  
अतीम्भान इहीवेन, राष्ट्रपति औहारक अथामस्तु विष्णु  
करिवेन ।

(५) मस्तु-भद्र नियुक्त इहीवार असम्भु एकान  
व्यक्ति असम्भु-सदस्य ना भाकिवे यदि तिनि अनुसन  
नियोगदानेर जारिष्ठ इहीत्र रुप्य मानेत्र मर्त्य सहसद-  
सदस्य निर्वाहित ना हव, जाहा इहीवे तिनि मस्तु  
भाकिवेन ना ।

(६) सहसद भागिया यात्रिया अवह सहसद-  
सदस्यदहर अनुबहित शहवर्जी भावादने निर्वाहन-  
प्रनुष्ठानेर भविष्यत्तीकाने एहे अनुकूलत्र (२) वा  
(७) द्वान असीन नियोगदानेर अयोक्त एम्भा

दिले अहमद भाष्मिया माईवार अव्यवहित शुद्धे  
माँहारा अहमद-सदस्य हिनेन, एই सफार उद्देश्य  
जाविनकर्म तोहारा सदस्यक्षणे बहाल रहियाहैन  
बलिया गम्भु इहेवे ।

- ५७। (२) अधिनमन्त्रीक लद शून्य इहेवे, यदि  
(क) तिनि तोन अग्रये ताकुपतिर निकटे  
पद्धत्यागापत्र प्रदान करेन; असवा  
(ख) तिनि अहमद-सदस्य ना भाकेन ।

अधिनमन्त्रीक लद  
सेवास

(२) अहमदक अहम्याग्रिष्ठे असदस्यक अमर्त्यन  
आराइने अधिनमन्त्रीक लद्याग करिवेन किंवा अहमद  
भाष्मिया दिवार अहम्य ताकुपतिके प्रावश्यान करिवेन  
एवं तिनि अनुकूप प्रावश्यान करिवे ताकुपति अहमद  
भाष्मिया दिवेन ।

(३) अधिनमन्त्रीक उत्तराविकारी कार्यालय श्रहने  
ना करा अग्न्यु अधिनमन्त्रीके स्त्रीम पद बहाल भाकित  
ऐ अनुकूदेर तोन किछुई अग्न्योग्य करिवे ना ।

- ५८। (२) अधिनमन्त्री व्यक्तित अन्य तोन मन्त्रीक  
लद शून्य इहेवे, अदि

अन्यान्य मन्त्रीक  
लदेह अग्न्यु

- (क) तिनि ताकुपतिर निकटे लेश करिवार  
क्षेत्र अधिनमन्त्रीक निकटे पद्धत्यागापत्र  
प्रदान करेन;  
(ख) तिनि अहमद-सदस्य ना भाकेन;  
(ग) ऐ अनुकूदेर (२) सफार अनुसारे ताकु-  
पति अनुकूप निर्देश दान करेन;  
असवा  
(घ) ऐ अनुकूदेर (३) सफार येकूप विवाह  
करा इहेयाकू, जाहा कार्यकर इह ।

(२) अधिनमन्त्री ऐ तोन अग्रये तोन मन्त्रीक  
पद्धत्याग करिते अनुरोद करिते प्राविवेन एवं  
उक्त मन्त्री अनुकूप अनुरोदपालने असमर्थ इहेने  
तिनि ताकुपतिके उक्त मन्त्रीक नियोगेर अवसान  
योद्धावार प्रावश्य दान करिते प्राविवेन ।

(३) अहमद भाष्मिया आक्षया अवस्थात त्य लेन  
अग्रये तोन मन्त्रीके स्त्रीम पदे बहाल भाकित ऐ  
अनुकूदेर (२) सफार (क), (ख) ओ (घ) उप-सफार  
तोन किछुई अग्न्योग्य करिवे ना ।

(४) अधिनमन्त्री पद्धत्याग करिवे ना स्त्रीम  
पदे बहाल ना भाकिते मन्त्रीदेर अन्यके पद्धत्याग

कपिमाछन बलिया गंभीर है; तबे एहे परिच्छेदत  
विद्यावाली-आलेख औहामेह उत्तराविकाविषय कार्यालय  
द्युम्न ना करा पर्यंत औहाजा यह यह पद अहल  
आकिर्वेन।

(५) एहे अनुच्छेद "मनु" बनिते अति-मनु  
ও उपमनु अनुरूप।

### ३३ परिच्छेद- स्थानीय आजन

६१। (१) आईनामुखी विद्यालिक वृक्षिकर मम्बाट  
गठित अतिशालसमूहेह उपर अज्ञातद्वय अतेऽक  
प्रशासनिक अकाराइशेह मूलीय आजन अमान  
करा हैवेन।

स्थानीय शासन

(२) एहे संविधान ओ अन्य तोन आईन आलेख  
सहमद आईनेह घाजा येकप निर्दिष्ट करिवेन, एहे  
अनुच्छेदत (३) समग्र उत्तिष्ठित अनुरूप अतेऽक  
प्रतिशाल मध्यापमुख अशासनिक एककाइशेह अथे  
सेहेकल मध्यिक्ष आजन करिवेन एवं अनुरूप आईन  
निष्पत्तिष्ठित विषय-संकाकु मध्यिक्ष अनुरूप अनुरूप हैते  
पारिवेः

(क) अशासन ओ सरकारी कर्मचारीद्वय कर्म;

(ख) जनसूचना-उक्ता;

(ग) जनसाधारणेह कार्य ओ अर्थनीतिक उम्मयन  
अमर्कित सरिकलभासा-अन्यन ओ वास्तवायन।

स्थानीय शासन-संघ  
अतिशाल नमा

६०। एहे संविधानेह एन अनुच्छेदत विद्यावालीके  
पूर्व कार्यकरतादालेह उद्देश्ये संसाध आईनेह घाजा  
ऐक अनुच्छेद उत्तिष्ठित मूलीय आजन संकाकु प्रति  
शालसमूहके मूलीय अध्याक्षेह कर आतोप करिवाय  
अन्यकारण जाकेटे अनुरूपकरने ओ निकष्य उत्तिष्ठ  
नयावारप्रकार्णेर अमान अमान करिवेन।

### ४४ परिच्छेद- प्रतिक्रिया कर्मनिभाग

६२। आलादमेह अतिक्रम- कर्मविभागसमूहेह  
सर्वाविद्यामूकता नाकुप्रतिक्रिया उपर न्युन हैवेन एवं  
आईनेह घाजा जाहाज असाम नियन्त्रित हैवेन।

सर्वाविद्यामूकता

६२। (१) जहासद् आईनेरु मूर्ता विश्वविधित विषय-  
समूह निष्क्रिय करिवेन :

प्रतिरक्षा कर्मविभाग  
कर्ति अधिकारी

- (२) वाहनादेशेत् प्रतिरक्षा कर्मविभागसमूह  
ও उक्त कर्मविभागसमूहेत् जहास  
जहाससमूह नेटन ओ तकनीटेक्नोन;
- (३) उक्त कर्मविभागसमूह कमिशन मूर्त्ती;
- (४) प्रतिरक्षा-आहिनीसमूहेत् लोगोनदेश निष्क्रिय-  
दान ओ ऊहासद् लेटन ओ डाका विविधेन;  
एवं
- (५) उक्त कर्मविभागसमूह ओ संवर्धित जहास-  
समूह संकारु शुभामोर्मामक ओ अव्याह  
विषय !

(२) जहासद् आईनेरु मूर्ता एই अनुच्छेद (१)  
प्रभास्त वर्णित विषयसमूहेत् इन्य विवास ना करा  
पर्यन्तु अनुच्छेद द्ये जकल विषय प्रचलित आईनेरु  
अविवेन नहे, ताकुपति व्यादेशेत् मूर्ता (महे जकल  
विषयेत् इन्य विवास करिके पारिवेन ।

६३। (१) जहासद् जमाति बृजीत मूद्द टोक्सनी मूद्द  
करा याईवे ना किंवा प्रकृत्यनु कोन मूद्द अ॒श  
श्रहन करिवेन ना ।

(२) वाहनादेशेत् विक्रम इन, कूम वा आकाश-  
प्रस्त्रो अकृत वा आम्रपु आकमनेत् द्येन्ते ताकुपति  
वाहनादेशेत् तक्षा ओ प्रतिरक्षन इन्य ऊहास विवेचाय  
प्रयोगनीय द्ये तोन व्यवस्था श्रहन करिते लारिवेन  
एवं जहासद् टैबैठकृत ना प्राकिन्ते उङ्खोन्द जहासद्  
आहवान करा इहेवे ।

(३) मूद्द किंवा जाकुमने वा जहास विक्राहेत  
कालो इमनिदापत्ता निश्चित करिवारु ओ ताकुपति तक्षा  
करिवारु उदेशेत् विवास अकिवृत जहासद् विविक्ष  
तोन आईनेके एই जहासितेन तोन किछुई अविवै  
करिवे ना ।

## ५८ भरिष्ठम्— आगोर्नि-जेनारेल

६४। (१) मूद्दीम टोकाटेन विक्रम इहेवारु जाम्य  
तोन व्युक्तिके ताकुपति वाहनादेशेत् आगोर्नि-जेनारेल  
अद्य वियागदान करिवेन ।

आगोर्नि-जेनारेल

(२) आगोर्नि-जेनारेल ताकुपति कृत्यक प्रदृढ

जकल दास्तिष्ठ पालन करिबेन ।

(७) अग्राटेनि-हेनारेस्त्र दासिङ्गपालनेर जन्य  
जाह्नादेश्वर जकल आदानत ओहार वज्ञव्य पेश  
करिबार अधिकार भाकिबे ।

(८) झाँसुपति जाह्नादानुमासी जमज-जीमा  
नमकु अग्राटेनि-हेनारेन श्रीम पाद वहन भाकिबेम  
यवह झाँसुपति कर्त्तक निर्वाहित सारिश्रमिक लात  
करिबेन ।

## आईन सभा

### १म परिष्कृद— संसद

६७। (१) "ज्ञातीय संसद" नाम साहियाद्वये एकठि संसद घाकिवे अवै एहे संविधानेत्र विदानावयो-सापेश्च अज्ञातकृत आईनप्रान्तीन-क्रमता संसदेत उपर नामु इहेवे;

उवे शर्त घाके हये, संसदेत आईन-सारा हये टकान व्यक्ति ना कर्तृपक्षके जास्ता, विवि, प्रविधान, उप-आईन ना आईनात कार्यक्रमामध्ये अन्याय छुकिपत्र अनेकावले क्रमतार्थी इहेते एहे समाज टकान किल्ले संसदेत निवृत्त करिव ना।

(२) एकक आक्षयिक विवाचनी अवाकाशमूळे इहेते प्रत्यक्षे विवाचने ग्राविड्यम आईनानुभावी विवाचित तिन अज संसद्य व्येशा अवै देह अनुच्छेद (३) समाज कार्यक्रमाकाले उक्त समाज वर्तित संसद्य-विषये लहेशा संसद नाहिक इहेवे; संसदाने संसद-संसद्य विषया अविहित इहेवन।

(४) एहे संविधान-क्रबर्तने इहेते मध्य इसकान अविवाहित इवेवात काढवहित लहवठीकात्मे संसद वाखियां ना आकुसा लर्हकू नवदृष्टि जाग्रत्ते टकान इविधा-संसद्याज्ञे अन्य संत्रकित घाकिवे अवै उंशारा आईनानुभावी भूत्वर्ते संसद्यात्र मुारा विवाचित इहेवन;

उवे शर्त घाके हये, एहे समाज टकान किल्ले एहे अनुच्छेद (२) समाज कार्यीन टकान आग्रह टकान महिनाव विवाचन विवृत करिव ना।

(५) झाक्येनावोत्ते संसदेत जाग्रत्त घाकिव।

६७। (१) टकान व्यक्ति वाईनामुलत नामांकित इहेवे अवै उंशार वयम विवाच व्यवह शूर्व इहेवे एहे अनुच्छेदेर (२) समाज वर्तित विधान-जाग्रेके तिनि संसद्यात्र संसद्य विवाचित इवेवात अवै संसद-संसद्य घाकिवात व्याख्य इहेवन।

(२) टकान व्यक्ति संसदेत संसद्य विवाचित इवेवात अवै संसद-संसद्य घाकिवात व्याख्य इहेवन ना, यदि

संसद-प्रतिष्ठा

संसद विवाचित  
इवेवात व्याख्या  
अव्याख्या

- (क) तोन जेम्स्ट्रुक आमानत औहार क्षेत्रिय  
नियमा घोषना करने ;
- (ख) तिनि लैडेनिया घोषित हईवार भर  
दास इहात अव्याहति नां ना करिया  
भावेन ;
- (ग) तिनि तोन विदेशी बाह्यकारी नामरिक्ष्य  
अक्षय करने किहा तोन विदेशी  
बाह्यकारी अति आमुगत्य घोषना वा  
शीकार करने ;
- (घ) तिनि ऐतिक स्थलसंचयित तोन  
हफोजमारी अपराधिक द्वारी आवश्यु  
हईया अनुयान मुहे वृत्तिकारामुहे  
मुक्ति इन एवं औहात मुक्तिमात्रेन  
पर्यं पीछ वृत्तिकाम अधिवाहित  
वा "हईया" भावेन ;
- (ङ) तिनि १९७२ सालव वाहमानेश घोष-  
जात्यकारी (विहम उत्तीर्णनाम)  
वाहमानेश अधीन त्य तोन अलगाव्य  
जन्य मुक्ति हईया भावेन ;
- (च) जाहेनेव चाहा समाविकारीक अस्यु  
घोषना करितेहु ना, एवन पर्य व्यतीत  
तिनि अक्षयकुर्त कर्म तोन वाहक्तनक  
लहू अधिविहित भावेन ; अश्वदा
- (इ) तिनि तोन जाहेनेव चाहा वा अधीन  
अनुकूल निर्वाचनेव कर्य अस्यु हन ।

(३) एहे अनुकूलेन उद्देश्याधिनक्त्वे तोन  
व्यक्ति केवल मनु, अतिमनु वा जेम्स्ट्रु इहईवार  
कावनी अक्षयकुर्त कर्म तोन वाहक्तनक लहू  
अधिविहित नियमा गन्य हईवेन ना ।

(४) तोन स्थलस-सम्बन्ध औहार निर्वाचन भर  
एहे अनुकूलेन (१) मकार निर्विजय अधीन  
हईयाहेन कि ना किहा एहे संविवेशनेव १०  
अनुकूल-अनुमान तोन स्थल-सम्बन्ध अस्यन  
शून्य हईवे कि ना, त्य सकारक तोन वित्तक मध्या  
दिले शुतानी ओ निष्ठित जन्य अश्वदि निर्वाचन  
क्षमितानेव निकटे द्येवित हईवे एवं अनुज्ञा  
तोन वित्तक निष्ठात फूड़ानु हईवे ।

(५) एहे अनुकूलेन (६) मकार विवाहाद्यी  
ग्राहाते शूर्म कार्मकर्ता नां करिते भाड़, सेव  
उपर्युक्त निर्वाचन क्षमितानेव अस्य

महामद येकूप अंत्योक्तन् द्वारा करिवेन, आइवेद्र द्वारा  
सेइकूप विशेष करिते लागिवेन ।

६७। (१) द्वारा महामद-मदम्युङ्ग आमन् शून्य  
हईवे, मनि

महामद-आमन  
शून्य हड्डा

(क) ताँहार विर्वाचनेत्र अङ्ग महामद-अधिक  
देवठेकेत्र आरिभा हईते नवहै दिनेत्र  
मध्ये तिनि शून्य उक्तमित्र निश्चिति  
भवयात्तुहने वा द्वारा आमनी करिते ओ अप्पा-  
पत्ते वा द्वारा आमनीभवे द्वाक्षरदान करिते  
अमर्याह्य इन ;

तावे अर्त आके ये, अनुकूप मेघाद  
अचिवाहित हईवार द्वारे शौकार अपार्य  
कारुने आहा वर्तित करिते आगिवेन ;

(ख) महामद-अमूमति ना महिसा तिनि  
अकादिकरम नवहै देवठेक-दिवस अनु-  
पस्ति आकेन ;

(ग) महामद भाष्मिया आम्य ;

(घ) तिनि एই महविधानेत्र ६६ अनुक्तज्ञे  
(१) दफात्र अर्धीन अमोग्य रहिया  
मान ; अथवा

(ङ) एই महविधानेत्र १० अनुक्तदे वर्तित  
परिस्थितित्र ठेण्डुव इय ।

(२) कोन महामद-मदम्युङ्ग शौकारेव निकटे  
द्वाक्षरमूळ पत्रयोगे शौम्या पद ज्याप करिते पागिवेन,  
एवं शौकार- किंवा शौकारेव पद शून्य आकिले  
वा अन्य कोन कारुने शौकार शौम्य मामित्रुपालने  
अमर्याह्य इवेले टेपुष्टि शौकार- यधन उक्त पद  
आप्तु इन, अथवा इवेते उक्त मदम्युङ्ग आमन शून्य  
हईवे ।

६८। महामद-आहेव द्वारा तिहाया अनुकूपतावे  
निश्चिति ना हक्कया समर्कु राक्षुपति कर्तृक आदेशेत्र  
द्वारा येकूप निश्चिति इवेवे, महामद-मदम्युङ्ग येकूप  
वेतन, आता ओ विशेष- अविकार लाभ करिवेन ।

महामद-मदम्युङ्ग  
वेतन अकृति

६९। कोन व्यक्ति एই महविधानेत्र- विधान-  
अनुमायो शदप्यत्तुहने वा द्वारा आमनी करिवार एवं  
मप्पापत्ते वा द्वारा आमनीपत्ते द्वाक्षरदान करिवार  
पूर्व किंवा तिनि महामद-मदम्युङ्ग इवार योग्य नहेन वा

शप्तप्राप्त शूर्व  
आमनप्राप्त वा  
कोटेदार करिव  
मदम्युङ्ग अर्थात्

अयोग्य इहेयाहेन जानिषा संसद्-समन्वयाले आजन-  
श्वर्ण वा भौतिक विनि प्रति मिलन अनुबंध  
कार्यालय इन्द्र अकात्मक विकास देना शिखावे उपर्युक्त-  
मान्य एक शाशांत्रिका किंवा अपर्युक्त दक्षिणी  
इहेवेन।

७०। टेबल निर्धारित कोन शाशांत्रिक मालव  
आधिकारिक समानीत इहेया टेबल व्यक्ति संसद्-समन्वय  
निर्धारित इहेवे तिनि यदि

- (क) उक्त मालव इहेते अमंड्यास कलन अथवा  
(ख) संसद् उक्त मालव विलोक्य जापीत्वम  
कलन,

ताहा इहेवे संसद् ऊहार आजन शून्य इहेव, तदे  
तिनि सेवे कालने अवश्यकी तेबल निर्धारित संसद्  
समन्वय इहेवाह अयोग्य इहेवेन ना।

शाशांत्रिक माल  
इहेते समानीत वा  
मालव विलोक्य  
जापीत्वम ऊहार  
आजन शून्य इहेवा

७१। (१) टेबल व्यक्ति एकटे समये शून्य वा ऊहारिक  
निर्धारिती एनाकार अमंड्यास समन्वय इहेवेन ना।

टेबल-समन्वय  
वाचा

(२) टेबल व्यक्ति एकटे समये शून्य वा ऊहारिक  
निर्धारिती एनाका इहेते निर्धारितकार्यी इत्यास एवे  
अनुच्छेदेव (३) दफ्फास वर्तित टेबल किंवा अतिः  
दक्षकाता सृष्टि करिवेन ना, तदे तिनि यदि एकाधिक  
निर्धारिती एनाका इहेते निर्धारित इन लाश इहेवे

- (क) ऊहार दफ्फेव निर्धारिते दिव दिवेव  
ग्राह्य तिनि टेबल निर्धारिती एनाकार  
अतिविविष्ट किंविते इक्कुक, जाह ज्ञापन  
किंवा निर्धारित किंविते एकटे  
स्थानान्तरात् द्योग्यना अद्यान करिवेन  
एवह तिनि अन्य ये प्रकाय निर्धारिती  
एनाका इहेते निर्धारित इहेयाहिलन,  
अतःभव द्येहे प्रकाय एनाकार आजन  
समूह शून्य इहेव;

- (ख) एहे दफ्फार (क) उप-भक्ता मान्य करिते  
अप्रवार्थ इहेवे तिनि ये प्रकाय आमन  
निर्धारित इहेयाहिलन, द्येहे प्रकाय आजन  
शून्य इहेवे; एवह

- (ग) एहे दफ्फार उपर्युक्त विधानसमूह  
प्रत्याधानि अयोग्य, उप्राधानि आवन ना  
करा पर्युक्त निर्धारित व्यक्ति संसद्-समन्वय  
समन्वयात्मन वा द्योग्यना करिते ओ समझ-

अत्र वा व्याप्तिनीपदे ज्ञानवृत्तान् करित  
पारिवेन वा ।

१२। (१) जड़कारी विकृति-ज्ञाना ज्ञानेष्ठि सहस्र  
आश्वान्, मूलिक उभय करिवेन एवं सहस्र  
आश्वानकाले ज्ञानेष्ठि अथवा बैठेकरु समय ओरुन  
निश्चिन्मते करिवेन ।

उत्तर शर्त आके हो, सहस्रदृष्ट एक अविद्यानेत  
ज्ञानेष्ठि ओरुवली अविद्येनेत अथवा बैठेकरु मर्त्य  
आके द्विनेत अविद्यिक विकृति पारिवे ना ।

(२) एই अनुरूपदृष्ट (१) समान विद्यावनी  
ज्ञानेष्ठि सहस्र-सदस्यदृष्ट हो कोन सावित्रीनि निर्विहित  
ग्रन्थान्तर व्याप्तित उद्देवान् द्विनि द्विनि सर्वे बैठेक  
अनुरूपानेत इन्य सहस्र आश्वान् करा इहेवे ।

(३) ज्ञानेष्ठि शूदर जागिर्या ना दिया पारिव  
प्रथम बैठेकरु जागिर्य इहेते शीघ्र वृद्धि अविद्याहित  
इहेने सहस्र जागिर्या आहेवे ।

उत्तर शर्त आके हो, अकाउन्तु मुक्त जागिर्य  
काले सहस्रदृष्ट आहेवज्ञाना अनुरूप देवाद एककाले  
जनविक एक वृद्धि वर्धित करा मर्त्येते पारिव,  
उत्तर शूद्र समानु इहेवे वर्धित देवाद कोनकेते  
हय मासेत विविक इहेवे ना ।

(४) सहस्र उभ उद्देवान् सर एवं अमात्य शुद्धिती  
सावित्री विविचन अनुरूपानेत शूदर ज्ञानेष्ठि निकटे  
मदि अनुरूपज्ञनकाले अलोग्यान इय ये शशांकु अ  
मुक्त विष्णु ऋषियांचून, तेही शूद्रावस्थात विष्णवावतातु  
इन्य सहस्र शूद्रज्ञानान् करा अथवा, जाहा इहेने  
ये सहस्र जागिर्या दृष्ट्या इहेयाच्छून, ज्ञानेष्ठि अहा  
आश्वान् करिवेन ।

(५) एই अनुरूपदृष्ट (१) समान विद्यावनी  
सालेश्वर कामलनीबो-विविज्ञाना वा अनुज्ञावे सहस्र  
द्विकाल विवित्तुनि करिवेन, सहस्रदृष्ट द्वैष्टकमूह तेही  
कृष्ण समये ओरुने अनुरूपित इहेवे ।

१३। (१) ज्ञानेष्ठि सहस्र भाष्ये मान एवं वापी  
द्विनेत जारिते पारिवेन ।

सहस्र ज्ञानेष्ठि

सामान ज्ञानेष्ठि  
द्विने ओरुने

(२) सहस्र-सदस्यदृष्ट अलेक्षण सर्वादे विविहित  
पर अथवा अविद्येनेत शूद्रानु एवं अलेक्षण वृद्धि  
अथवा अविद्येनेत शूद्रानु ज्ञानेष्ठि सहस्र भाष्ये मान  
द्वान् करिवेन ।

(३) ज्ञानेष्ठि कर्तृक असुन्त भाष्ये द्वाने वा

द्वितीय वर्षीय आप्तिरुप अहं महामृते उक्त जापने वा  
वानी लग्नार्थक वाहनाचना करिबेन।

१४१ (१) टकान माविदाने निर्वाचनहूँ तर महमत्तु  
अभास ईबोटेक महमद-मदमजुमदहूँ मध्य इहोटे अहमद  
एकजून स्त्रीकारूँ ओ एकजून डेखुषि स्त्रीकारूँ निर्वाचित  
करिबेन, एवं एहे पुरुषे महसूह त्वे टकानद्वि शून्य  
इहोटेवे जाप मिलनहूँ महेत्यु किंदा वे महात्मा महमद  
ईबोटेक वृत्ति वा प्राकिद्ये अहम ईबोटेक जाह  
पूर्णे करिबारू अह्य महमद-मदमजुमदहूँ मध्य इहोटे  
एकजूनहूँक निर्वाचित करिबेन।

(२) स्त्रीकारूँ वा डेखुषि स्त्रीकारूँहूँ तद शून्य  
इहोटेवे, मदि-

- (क) तिनि महमद-मदमजु ना ग्राकेन;
- (ख) तिनि मक्तु-पद अहने कर्तव्य;
- (ग) तद इहोटे ऊंशाह अलमानने सावी करिया  
मोटे महमद-मदमजुहूँ संश्यागिर्हि झोटे  
जग्धिति टकान अमुद (अमुदद्वि उभा  
पनहूँ अडिलायु लालन करिया अनुन  
चोटि दिलहूँ नोहिन अलालहूँ अह)
- (घ) तिनि आडेपतिहूँ विकटे ब्राह्मण्युक भक्त  
मोटें ऊंशाह तद ज्ञान कर्तव्य;
- (ङ) टकान माविदाने निर्वाचितहूँ तद अन्य टकान  
मदमजु ऊंशाह वार्षिकारू अहने कर्तव्य;
- (च) डेखुषि स्त्रीकारूँहूँ इहोटेवे, तिनि स्त्रीकारूँहूँ  
पदम योगदान कर्तव्य।

(३) स्त्रीकारूँहूँ तद शून्य इहोटेवे वा तिनि  
झाडुपतिहूँ माहित्युलालने उक्त आकिद्ये किंदा अन्य  
टकान काहने तिनि झोटा माहित्युलालने अजगर्ह  
वलिया महमद निर्वाचित हृतिवेन स्त्रीकारूँहूँ तदकल  
माहित्यु डेखुषि स्त्रीकारूँ लालन करिबेन, किंदा  
डेखुषि स्त्रीकारूँहूँ भद्रउ शून्य इहोटेवे महमदहूँ तकार्ह  
प्रभावीविधि-अनुग्रामी टकान महमद-मदमजु ताहा  
लालन करिबेन; एवं महमदहूँ टकान ईबोटेक  
स्त्रीकारूँहूँ अमूलमिति डेखुषि स्त्रीकारूँहूँ किंदा  
डेखुषि स्त्रीकारूँहूँ अनुपस्थिति प्राकिद्ये महमदहूँ  
कार्यप्रभालो-विधि-अनुग्रामी टकान महमद-मदमजु  
स्त्रीकारूँहूँ माहित्यु लालन करिबेन।

स्त्रीकारूँहूँ डेखुषि  
स्त्रीकारूँ

(८) महामदन देवठेक स्तोकारुके औहारु  
पर्यं इहेते अपनाकृष्णे वा देवन अमुव विवेचना-  
कारुन स्तोकारु (किंवा उभूषि स्तोकारुके औहारु  
पर्यं इहेते अपनाहनेते वा देवन अमुव विवेचना-  
कारुन उभूषि स्तोकारु) जेमस्तुति आक्रित्वा प्रजापतिष्ठ  
कर्तिवेन ना एवं पर्यं अनुच्छेदन (९) महामद बनित  
ज्ञात्वा पर्यं स्तोकारु वा उभूषि स्तोकारुते अनुभविति-  
कानीन देवठेक गमनेके अमोहन विवेचनावें अनुगम  
अत्यज्ञवर देवठेकते केवल अमोहन इहेवे ।

(१०) स्तोकारु वा उभूषि स्तोकारुते अपनाहनेते  
वा देवन अमुव गमनेद विवेचित इहेवारु कान्दे  
ज्ञात्वा पर्यं स्तोकारु वा उभूषि स्तोकारुते वा विवाह  
४ महामदन कार्यविवाह अनुज्ञाते अशंख्याते अविकासु  
आक्रित्वा एवं तिनि देवन अमम्याते होमेशानेते  
आविकासी इहेवेन ।

(११) एवे अनुच्छेदन (१२) महामद विवेचनावें  
संक्षेप ज्ञात्वा पर्यं स्तोकारु वा उभूषि कोकारु औहारु  
उडवाविकासी कार्यविवाह अहने ना करा शर्तु वीष  
पद्म वहान इश्याहन विविषा गम्य इहेवे ।

### ७६ (१) एवे महाविवाह-प्राप्तिक

(क) महामद कर्त्तुक अनीति कार्यविवाह-विवि-  
द्यारा एवं अनुकूल विवि अनीति ना  
इत्यां शर्तु शाकुपति कर्त्तुक अनीति  
कार्यविवाह-विवि द्यारा महामदन कार्य-  
अनीति विष्ट्रित इहेवे ;

(ख) उपमिति ओडेशानकासी अमम्याते  
महाभ्यामविक्ति होमेश गमनेद मिक्कानु  
श्वीकृत इहेवे उद्वा गमनाश्वयुक्त होमेश  
देवज शृणुति जडापति होमेश कर्तिवेन  
ना एवं अनुगम देवठेति तिनि विर्मायक  
होमेश गमन कर्तिवेन ;

(ग) महामदन देवन अमम्याते शून्य इश्याहन,  
देवन एवे काहावे किंवा महामद उपमिति  
इहेवारु वा होमेशानेते वा अन्य देवन  
उपमात्मा कार्यविवाह अशंख्याते अविकासु  
ना वाका ज्ञात्वा देवन वाका अनुकूल  
कार्य कर्तिवाहन, देवन एवे काहावे  
गमनेद देवन कार्यविवाह अहीवै  
इहेवे ना ।

कार्यविवाह-विवि,  
कोकारु उभूषि

(२) जैमनदेह टैब्लेक छलाकाले टकाव जममें  
उपमितुं जमजा-जमभ्या आटेड़ कम नविशा अदि  
जमालतिहरू क्षेत्र आकर्षने कहा इस, जहा इसेन्द्र  
तिनि अनूचान बाए जून जमजा उपमितुं ना इउग्या  
नमर्कु टैब्लेक जुमितुं जापिवेव किए जूलडवो करिवन।

१७० (३) जैमनदेह अत्युक अविवेशनहरू अथवा  
टैब्लेक जैमनदेह अविय इहेते जमजा ज्वेषा  
जैमनदेह निम्बनिधितुं ज्वासी कमितिमस्तुह नियाम  
करिवेन :

जैमनदेह ज्वासी  
कमितिमस्तुह

- (क) जमकाहो हिजाव कमिति ;
- (ख) विखान अविकाह कमिति ; अवह
- (ग) जैमनदेह कार्यज्ञवाहो विधितुं विनियोग्य  
ज्वासी कमिति ।

(४) जैमनदेह एहे अनुच्छेदेह (२) दफ्तार उपमितुं  
कमितिमस्तुहरू अविवितुं अन्यान्य ज्वासी कमिति नियाम  
करिवेन एवह अनुक्रमणावेव निम्बुक टकाव कमिति एहे  
जैमनदेह ओ अन्य टकाव आहेन-मालेहक

- (क) भाजका दिव ओ अन्यान्य आहेन लाल  
अमुवाच पडीकाव करिते नापिवेव;
- (ख) आहेनहरू वलवहूकरने मर्गीवाहना एवह  
अनुक्रम वलवहूकरने इन्यु व्यवस्थासि  
प्रहेनेर प्रमुख करिते नापिवेव;
- (ग) इन्युकुकुसमध्या जनिया जैमनदेह टकाव  
विप्रया ग्रम्भर्क कमितिक अविवित करिवे  
ग्रेहे विषये टकाव मनुनीवयेह जारी  
वा अशामने समर्के अनुमत्याव वा  
उद्युक्त करिते नापिवेव एवह टकाव  
मनुनीवयेह निकटे इहेते अमात्यासु  
प्रतिनिविहरू माझ्यामे आमजिक उघ्यासि  
जैमनदेह एवह अश्वासित टमोचिक वा  
लिपिक उत्तरवाचक व्यवस्था करिते  
नापिवेव;
- (घ) जैमनदेह कर्तृक अवितुं अन्य टकाव  
दाखिले पावन करिते नापिवेव।

(५) जैमनदेह आहेनहरू ज्वासी एहे अनुच्छेदेह  
अविवीन निम्बुक कमितिमस्तुहक

- (क) ज्वासीदेह इक्षिता वलवहूकरिवाह एवह  
शपथ, द्वावधी वा अन्य टकाव घेवाहेव  
अविवीन करिया औहादेह नाप्याश्रहनेव,

(४) मिलिन्सक नामित करिते काशु अविवाह  
भ्रमता असान कठित पारिबेन ।

७१। (१) महसद् आईनक शुद्धा न्यायपालवेह पद न्यायपाल  
अतिकार कर्तु विवाह करिते पारिबेन ।

(२) महसद् आईनक शुद्धा न्यायपालके देवन  
मन्त्रीमध्य, सरकारी कर्मचारी वा मंदिरिवद्धि भरकारी  
कर्तुलिखित देव देवन कार्य समर्थक उम्मुक्षियामनाव  
उम्मुक्षियाव योग्य भ्रमता किंवा योग्य दावित असान  
कठितेन, न्यायपाल देवदेवन भ्रमता असान ओ भावित  
आसन कठितेन ।

(३) न्यायपाल जांहार पारिक्षिपालम जमर्के  
जाएतिक विलोटि अनेयम कठितेन एवह अनुकूल  
विलोटि जाएतु उपशापित इतिवे ।

७२। (१) महसदेत् कार्यवाहार देविता समर्के  
देवन कार्यवाहार अभ्य उभापन करा पाईवे ना ।

महसद् अभ्यप्र  
विभव-विवाह ओ  
भावितेन ।

(२) महसदेत् देव अप्य वा कर्मचारीत् देवत  
महसदेत् कार्यप्रभावीविग्रहम, कार्यप्रियामना वा  
कार्यप्रियाकृतात् भ्रमता न्युत् भाविते, तिनि एই अकम  
उम्मुक्षियाकृत्याम-सकारिते देवन ब्राह्मण लोक आसनलु  
पारिम्याकृत अवीन इतिवेन ना ।

(३) महसद् वा महसदेत् देवन कमिटिते किंवा  
वना वा उचितामति कर्तु देवन महसद-महसदेत् विलोटि  
देवन आधाराते कार्यवाहा प्राप्ते करा पाईवे ना ।

(४) महसद् कर्तुक वा महसदेत् कर्तुक देवन  
विलोटि, कार्यक्षमव, देवते वा कार्यवाहा अकालेत्  
कर्तु देवन न्युक्ति विलोटि देवन आसनाते देवन  
कार्यवाहा प्राप्ते करा पाईवे ना ।

(५) एই अनुकूल-मापेते कमिटिसमूहेत् एवह  
महसद-महसदेत् विशेष-अधिकारि विर्भावके करा  
पाईते पारिवे ।

७३। (१) महसदेत् विकृष्टि सहितामय भाविते ।

महसद-महसदेत्

(२) महसदेत् प्रियवामये कर्मचारीसङ्ग विकृष्टि  
ते कर्तु उत्तमम् महसद् आईनेत् शुद्धा विकृष्टि  
कठिते पारिवेन ।

(३) महसद् कर्तुक विवाह-प्रोति ना इत्या  
भ्रमतु स्तीकारेत् सहित भ्रमापर्कर्मे द्वाषुपेति

महामदेर सचिवालये कर्मचारीदेव नियोग ओ कर्मेव  
शक्तिसूख निर्भवने करिषा विवि अनेकन करिते  
सारिवेन एवं अनुकूलतावे प्रभीत विविसूख ये  
कोन आइनेव विवाह-सापेक्षा कार्यकृ इहेवे।

## २५ परिच्छूद— आईनप्रबन्धन ओ आर्थ-संतुष्टव गद्धति

८०। (१) आईनप्रबन्धनेर उद्देश्ये महाद् आमीत आईनप्रबन्धन-गद्धति  
प्रत्यक्ष्यति अनुवाद विव-आकारे उभापित इहेवे।

(२) महाद् कर्तृक तेव विव शृणीत इहेने  
समातिति इन्य ताहा डाक्ट्रिपत्रि निकटे देश-करा  
इहेवे।

(३) डाक्ट्रिपत्रि निकटे तेव विव लेख करिवाय  
पर लगात दिलेर मर्यादा तिनि ताहाते समातिदान  
करिवेन किहा अधिविव व्यतीत अम्य कोन विवेर  
ओये विवति वा ताहात तेव विवेष विवाह  
पुनर्विवेचनात किहा डाक्ट्रिपत्रि कर्तृक निदेशित  
तेव अहेशार्थनी विवेचनात अमुदार्दि अपन उद्घास  
एकति वार्तामह तिनि विवति महाद् औरु दिते  
पारिवेन; एवं डाक्ट्रिपत्रि ताहा करिते अमार्थ  
इहेने उक्त ईश्वारदेव अववाह तिनि विवतित  
समातिदान करियाछून विवाह गम्य इहेवे।

(४) डाक्ट्रिपत्रि यदि विवति अनुकूलपत्रात्वे  
महामदे फरुए शाठान, ताहा इहेने महाद् डाक्ट्रिपत्रि  
वार्तामह ताहा पुनर्विवेचना करिवेन; एवं महाविवे-  
मह वा महाविवनी व्यतितेके महाद् पुनर्वाप्ति विवति  
प्रहने करिवे ममातिति इन्य ताहा डाक्ट्रिपत्रि निकटे  
उमसूभित इहेवे एवं अनुकूल उपस्थापनेर मात  
दिलेर मर्ये तिनि विवतिते ममातिदान करिवेन;  
एवं डाक्ट्रिपत्रि ताहा करिते अमार्थ इहेवे उक्त  
ईश्वारदेव अववाहे तिनि विवतिते ममातिदान  
करियाछून विवाह गम्य इहेवे।

(५) महाद् कर्तृक शृणीत विवतित डाक्ट्रिपत्रि  
ममातिदान करिवे वा तिनि ममातिदान करियाछून  
विवाह गम्य इहेवे ताहा आइल अभिमेत इहेवे  
एवं महामदे आईन विवाह अधिकृत इहेवे।

८१। (६) एहे ताते “अधिविव” विविते ईकठन आधिविव  
निष्प्रनिष्टि विवस्त्रमसूहते मकन वा ये तेव नक्ति

- त्रिविक्ति विद्यानादन्ते अवधिति विद्या त्रुमार्गेनः
- (क) टकान कड़ आदान, निष्ठानुर्भूति त्रुमवस्था, मञ्जुकुफ वा उहितकर्त्तव्य;
  - (ख) सत्त्वकान्त वर्णक अभिवित्तव्य वा टकान लग्नात्ति धान, किंवा सत्त्वकान्त अवधिति अवधिति आद-मासिक्ति अवधिति आदेन त्रुमवस्था;
  - (ग) अःमूर्ख उहितिव्यत त्रुमार्गेन्द्रेन, अनुज्ञन उहितिव्य अभिवित्तव्य वा अनुकुप्त उहितिव्य उहेत्क अर्थ धान वा निर्दिष्टकर्त्तव्य;
  - (घ) अःमूर्ख उहितिव्यत उन्नत मध्य आदान विद्या अनुज्ञन टकान नाम त्रुमवस्था वा विद्यान्।
  - (ङ) अःमूर्ख उहितिव्यत वा उहितिव्यत सत्त्वकान्ति हितिव्य आदान अभिवित्ति, किंवा अनुकुप्त अर्थ त्रुमार्गेन्द्रेन वा धान, किंवा सत्त्वकान्त उहितिव्यत-विद्योऽस्मा;
  - (च) उभय-देह उन्न-सूक्ष्मासमुद्देश निर्दिष्टि या टकान विशेषज्ञत अभिवित्तव्य अभिवित्तव्य अनुज्ञितक विद्या।
- (2) टकान उहितिव्यत वा अन्न अर्थमूर्ख आदान वा त्रुमवस्था, किंवा नाइट्रोजन-फ्री वा टकान लाईट अन्न फ्री वा उभयुल आदान वा अन्न टकान निष्ठानीय उभयुल्यासार्थकान्त टकान निष्ठानीय कर्त्तव्य वा अंतिहान वर्णक टकान कड़ आदान, निष्ठानुर्भूति त्रुमवस्था, मञ्जुकुफ वा उहितिव्यत विद्यान कहा उहेप्राच्छ, टकान वहे काहिने टकान विद्या अभिवित्तव्य विद्या अन्न उहेव ना।
- (३) त्राक्षुपतिति अष्टाहिति अन्न तीहाति निकाटे लेन कठिनात्तु अभिवित्तव्य आहेत्क अभिवित्तव्य अष्टिकान्त गुणाकार वहे अर्थ एकत्रित अष्टिकिकृते आकिते या, ताहा एकत्रित अभिवित्तव्य, एवह अनुज्ञन अष्टिकिकृते अकान विशेष छुकात्तु उहेव एवह टमहे असरके टकान आदानात्तु अभ्य उभयासन कहा आहेव ना।

४२। सत्त्वकान्ति अर्थव्युत्कर्त्तव्य अभ्य अवधिति उहितिव्य, आमन टकान अभिवित्तव्य वा विद्या त्राक्षुपतिति त्रुमाहिति अज्ञीत मध्यमे उभयासन कहा आहेव ना;

जाते नाही आके या, टकान कड़ त्रुम वा विद्यालय विद्याय अवधिति टकान अहम्बावेन्द्री उभयासने अन्न वहे अनुज्ञन अभिवित्तव्य अभिवित्तव्य अनुज्ञन इहेव ना।

अधिक मध्यमे त्रुमाहिति

८३। संसदेव कोन आईवेर मारा वा कर्त्तुं  
बुलीत टकान कर आवोम वा संप्रद करा माईव ना।

संसदेव आवेर बुलीत  
करावाले वाबा

८४। (१) जरकाह कर्त्तुं आपु सकल राज्य, सरकार  
कर्त्तुं संगठीत अकन आने एवं कोन आनेविलोध इहेत  
जरकाह कर्त्तुं आपु सकल अर्थ एकटि भाष  
उहविलेव अहेत निर्वत इहेव एवं तांडा "संमूक  
उहविल" नाम अभिहित इहेव।

संमूक उहिल उ  
अज्ञातकुर सरकारी  
हिमाव

(२) सरकाह कर्त्तुं वा सरकारेव पाक्ष आपु  
अन्य सकल सरकारी अर्थ अज्ञातकुर सरकारी  
हिमाव जमा इहेव।

८५। सरकारी उर्द्वेति राजनीतेवन, उच्चायत  
संमूक उहविल अर्थप्रदान वा तांडा इहेत अर्थ  
प्रज्ञाहार किवा अज्ञातकुर सरकारी हिमाव अर्थ-  
प्रदान वा तांडा इहेत अर्थप्रज्ञाहार एवं उल्लिङ्ग-उक्त  
विश्वसमूहेव अहित संश्लिष्ट वा आनुषिक सकल  
विश्व संसदेव आईव-मारा एवं अनुकूल आईव  
विवाह ना इउसा पर्मु जाङ्गेति कर्त्तुं अभीत  
विश्वसमूह-मारा निष्ठित इहेव।

सरकारी उर्द्वेति  
निष्ठित

८६। अज्ञातकुर सरकारी हिमाव जमा इहेव—  
(क) राज्य किवा एहे संविधानेव ८४  
आनुकूलेव (१) सकार कालने विकाल  
अर्थ संमूक उहविलेव अहेत निर्वत  
इहेव, तांडा बुलीत अज्ञातकुर कर्त्तुं  
नियुक्त किवा अज्ञातकुर विश्वावलीव  
नियुक्त संश्लिष्ट टकान बुलीत कर्त्तुं आपु  
वा बुलीत निकटे जमा रहियाछ, एवेक्षण  
सकल अर्थ; अथवा

अज्ञातकुर सरकारी  
हिमाव अनुय अर्थ

(ख) मे तेव द्याकम्भा, विश्व, हिमाव  
वा बुलीत वावद मे टकान आदालत  
कर्त्तुं आपु वा आदालतेव निकटे  
जमा रहियाछ, एवेक्षण सकल अर्थ।

८७। (१) अरक्तुं अर्थ-वृस्त समार्क उक्त वृस्त  
अन्य सरकारेव अनुशिक आम उ बुम-संविति  
एकटि विवृति (एहे तांडा "वार्षिक आर्थिक विवृति"  
नाम अभिहित) संसद उपस्थापित इहेव।

वार्षिक आर्थिक  
विवृति

(२) वार्षिक आर्थिक विवृतिते मृथक गृथकातावे

- (क) ऐसे संविधानेव छाता वा अदीन संयुक्त उत्तरियेव उपर दाखल बनिः व्याप-  
निर्वाचक इन्द्र अस्याकृतीय अर्थ, एवं  
(ख) संयुक्त उत्तरिय इति व्याप कृता इति व,  
अहेतु अस्याविल अन्यान्य व्यापनिर्वाचक  
जन्म अस्याकृतीय अर्थ

अमूलिभिः इति एव अन्यान्य व्याप इति जाक्षम्भालत  
व्याप पृथक किंश्च अमूलिभिः इति ।

४८। संयुक्त उत्तरिय उपर दाखल व्याप  
नियमान् इति :

संयुक्त उत्तरिय  
उपर दाखल

- (क) द्वाषुषीपतिके दैन्य नाविश्वमिक ओंकार  
समुत्त-अह श्रिके अन्यान्य व्यापः;  
(ख) (अ) अदीकार्त ओ लभुष्टि अदीकार,  
(अ) सूष्टीम लकार्टेर विलाकारणे,  
(इ) ग्रहा हिमाव-निरीक्षक ओ निश्चन्द्रक,  
(ऐ) मिर्चाचन लमिशनाहजन्त,  
(ठे) सरकारी कर्म लमिशनर सद्मुद्दिगत  
दैन्य नाविश्वमिकः;  
(ग) संजस्त, सूष्टीम लकार्ते, ग्रहा हिमाव-निरीक्षक  
ओ निश्चन्द्रकेर समुत्त, मिर्चाचन कमिशन  
एव सरकारी कर्म लमिशनर कर्मचारी-  
दिगके दैन्य नाविश्वमिकसह अनानन्दिक  
व्यापः;  
(घ) सूद, लविसोव-उत्तरिय दाखल, सूधीन  
लविसोव वा लाहार लक्ष-लविलादे  
एव अनेज्ञाह-व्यापदेशे ओ संयुक्त  
उत्तरिय अस्यान्ते शृष्टीत अनेज्ञ  
त्रोचन-संज्ञानु अन्यान्य व्यापासह  
सरकारेव अन-संज्ञानु सक्त लेनार  
दाखलः;  
(ङ) लकान आमावत वा त्रोहेत्यनाम कर्त्तव्य  
प्रकारत्वेव विकृष्ट अदृत लोक दाखल,  
जिते वा त्रोहेत्यनाम कार्यक्रम लविलार  
जन्म अस्याकृतीय त्य कोन लविलाने अर्थः  
एव ए  
(च) ऐसे संविधान वा संसदेव कार्य-छाता  
अनुकूल संयुक्त बनिः श्रिति अनु  
त्य लकान व्यापः ।

८९। (१) संस्कृत उद्दिनेन दासमूर्ति व्याप्र  
प्रस्तुकित जाग्रिक आधिक विवृतिर अस्ति संसाद  
आनन्दाचमा करा हईवे, किन्तु जाहा भावेन आशुल  
मूर्ति हईवे ना ।

जाग्रिक आधिक विवृति  
प्रस्तुकित मूर्ति

(२) अन्यान्य व्याप्र प्रस्तुकित जाग्रिक आधिक  
विवृतिर अस्ति संस्कृती-मावीह काकाले संसाद उपस्थि  
ति हईवे एवं टोन संस्कृती-मावीह संष्किमानेन  
वा संष्किमाने अस्तीकृतिर किहा संस्कृती-मावीह  
विवृतिर अर्थ त्रास-प्राप्तेन जाहाके संष्किमानेन  
आयता संसादेन शाकिवे ।

(३) राष्ट्रीयतिर सूलारिश व्याजोक टोन संस्कृती  
मावी करा याईवे ना ।

९०। (१) संसाद कर्तुक एই संविधानेन ८९  
अनुच्छेदेन अवैन संस्कृती-मावीह लक- संस्कृत  
उद्दिन इतेते निष्प्रतिष्ठित व्याप्रिवाहेह कृन्य  
टोप्याज्ञनीय सकन अर्थ विद्युतेकरनेन विधान  
संविधित एकत्रि विल मध्याकीय संसाद उपासन  
करा हईवे :

विधिवेकनां अपेक्षा

- (१) संसाद कर्तुक अपृष्ठ अनुकूल संस्कृत;  
एवं
- (२) संसाद उपस्थृतिर विवृतिर अपृष्ठित  
अधैर्ता अवरिक संस्कृत उद्दिनेन  
दासमूर्ति व्याप्र ।

(२) अनुकूल संविल विल सम्भवेते संसाद  
एप्ना टोन संतोषावोह अस्तुवा करा हईवे ना,  
माहात्म फले अनुकूलजावे अपृष्ठ टोन संस्कृतीह  
परिवान वा उपदेश्य किहा संस्कृत उद्दिनेन  
उपतः दासमूर्ति व्याप्र भविवान नविवरिति हईया  
आक ।

(३) एই संविधानेन विधानावनी-प्राप्तेन  
संस्कृत उद्दिन इतेते एই अनुच्छेदेन विधानावनी-  
अनुग्रामी शृणुत आहेनेन घारा निर्दिष्टेकरन व्याजोक  
टोन अर्थ अज्ञाहात करा हईवे ना ।

९१। टोन अर्थ-वृम्ह असर्व अदि देखा  
मास्त दर,

संस्कृत व अस्तित्वा  
संस्कृती

- (१) उनित अर्थ-वृम्ह निषिद्धे टोन  
कर्त्तविभागेन वृन्य अनुग्रामित व्याप्र  
करपर्वाणु इतेयाते किहा वृम्ह वृम्ह

आधिक आधिक विवृतिले अनुच्छेद  
इन्हे नाहि, अमने टकान नूसम कर्ता-  
विजानेवा इन्हे व्यापविनीहेतु असाहे  
ज्ञानोपत्ता ददेशा दिशाहे, अथवा

- (म) टकान अर्थात् वृत्तवे तोन कामविजातमेत्त  
इन्हे मञ्जुरीकृत अर्थात् आधिक आधि  
वे वृत्तवे तेक कामविजातमेत्त इन्हे  
व्यापित ईडेशाहे,

आहा इदीने एही प्रविधानेत्त घासा वा अभीम संपूर्ण  
उत्तरियेत्त तेपत्र ईशातक मासमूळे करा इतक वा ना  
इतक, महारुदा तहविन इहेत्ते एही व्यापविनीहेतु  
काही अमान कविवार ज्ञानोपत्तिले प्राक्किंवे  
एवह ज्ञानोपत्ति इत्तद्यगत एही व्यापविनीहेतु अनुच्छेद प्रविधान-  
संवलित एकदि उम्मुक्तक आधिक विवृति किंवा  
आठिकृत व्यापविनीहेतु प्राक्किंवे एकदि आठिकृत  
आधिक विवृति प्रविधान उपस्थापितेत्त व्याप्ता करितेन  
एवह व्याधिक आधिक विवृतिव नाम तेलिंडेत्त विवृतिव  
तेष्ये (प्रव्याहरीमा उपस्थापितकृपाप्रह) एही प्रविधान  
८७ इहेत्ते ८० नम्रवा अनुच्छेदममूळे व्याप्ता होवा.

६२। (१) एही प्रविधानेत्त तेलिंडेत्त विवाहामलीत्त  
आहा व्या ईडेशाहे, आहा महेत्त

- (क) मञ्जुरीत्त तेपत्र डोजेनान अकार्के एही  
प्रविधानेत्त ८० अनुच्छेद विवृतिले  
प्रकृति समाप्त वा इत्या सर्वतु एवह  
वे व्यापविनीहेतु अनुच्छेद विवाहा,  
तसी अनुयायी जाईन श्रद्धेत्त वा इत्या  
नम्रवा टकान अर्थात् वृत्तवे तोन अपाह  
इन्हे अनुच्छेद व्यापविनीहेतु अप्युमा संपूर्ण  
साठेन्त ज्ञानोपत्ता प्रविधान भाकिवे;

- (ख) टकान कामेत्त विवाहामलीत्त वा अनिमित्त  
तेलिंडेत्त इन्हे व्याधिक आधिक विवृतिले  
प्रविधानेत्त अनुच्छेद विवृतिले वृकातेत्त  
प्रकृति अनुकूल तार्ग-प्रविधान व्यापारी  
विवृतिले ज्ञानोपत्ता प्रविधान वा इत्या  
तक्तुत समाप्त इहेत्ते अनुकूल अप्युमा प्रिति  
व्यापविनीहेतु इन्हे मञ्जुरीमध्येत्त ज्ञानोपत्ता  
प्रविधान व्यापविनीहेतु आधिकवे;

- (ग) टकान आर्थवाचमत्त चनित व्याधात आण नाम  
एवेत्त व्युतिकृषी मञ्जुरीमानेत्त ज्ञानोपत्ता

विवाहामलीत्त  
प्रविधानेत्त

अमृतदेव आकिर्वे;

एवं त्यो जेन्द्राण्यु अनुकूल मञ्चुरीदान कहा इहेपाछे,  
जाहा आवेनकट्टन्म संयुक्त जहविल इहेत आईलह  
मूरा अर्थ अध्याहारत्व कर्त्तव्यानालत्र फ़र्गता संसर्वत  
आकिर्वे।

(२) नार्थिक आधिक विष्टिते उन्निधित  
टकान ब्रह्म-सम्भकित मञ्चुरीदानत्र जेन्द्र पव अनुकूल  
बाह्य निर्वाहेत जेन्द्राण्यु संयुक्त जहविल इहेत  
अर्थ विद्वितेकरनेत्र कर्त्तव्य अदानक ज्ञान अभीजव्य  
आईलह फ़ैल्ते एहे अध्यविलान्म ८२५ ने० अनुकूलत्र  
विवेनावनी येज्ञाना लक्षिय इहेवे, बर्तगान अनुकूलत्र  
(३) मृणाल अवीन टकान मञ्चुरीदानत्र फ़ैल्ते पव एवं  
मृणाल अवीन अभीजव्य टकान जाईनेत्र फ़ैलेत जेक  
अनुकूलस्त्र मृणालते कार्यकर इहेवे।

### तथा भवित्वाद्— अध्यादेशप्रश्नश्चन-फ़र्गता

लेत। (१) अद्यादेव अविवेनकान जाऊते टकान  
मृणाल जाऊपतित विकटे जान्मु व्यवस्थाप्राप्तेत्र अनु  
अट्याकूलनीय भवित्विति विवेनाव तहितात् जविया  
उत्कृष्टावज्ञनकानाव लज्जियग्राव इहेवे तिनि उक्त  
लवित्विति त्यज्ञान अट्याकूलनीय जविया मृण  
कविवेन, त्येज्ञान अध्यादेश अनेकन ओ जहाँ  
कवित्वे लाहित्वेव एवं जाही इहेवाल मृण इहेत  
जानुकूलजावे अभीज अध्यादेश संसर्वत्र जाईनेत्र  
न्याय फ़र्गता सम्भव इहेवे;

अविवेनप्रश्नव-  
फ़र्गता

तदेव शर्त भावक त्ये, एहे मृणाल अवीन टकान  
अध्यादेशने एवं टकान विवेन कहा इहेवे ना,

(क) माहा एहे अध्यविलान्म अवीन संसर्वत्र  
जाईन-मृणाल जाईनमृणत्वावे कहा  
माय मा;

(ख) माहाते एहे अध्यविलान्म टकान विवेन  
भवित्विति वा त्वश्चित्त इहेमा माय; अथवा

(ग) माहाल मृणाल शूर्व जाऊते टकान अध्या-  
देशेत्र त्ये टकान विवेनक अव्याहक-  
तावे जलदै कहा माय।

(2) एहे अनुकूलत्र (१) मृणाल अवीन अभीज  
टकान अध्यादेश जाही इहेवाल मृण अनुहित संसर्वत्र  
अथवा देवतेक जाहा उत्तम्यापित इहेवे एवं इतःशूर्व

वातिना ना हैमा शाकिले अर्द्धादेशदि अनुकूलजावे  
उपसूक्ष्मनेत्र पत्र दिल दिन अतिराहित हैले किंवा  
अनुकूल त्वयाद् जेतोर्भु इहेवात् पूर्व ताहा अनुकूलाम्न  
करिया सहसदे अमुव शृंहीत इहेवे अर्द्धादेशदि  
कार्यकर्ता नोप नाहिबे ।

(३) सहसद जागिल्ला माझ्या अवमूर्ति कोन  
समये जाणूपतित निकटे बुद्धमूर्त्याहिते जहन्यु  
अग्नोज्ञनीय अक्रियुति विद्युमाव तहियातू बनिया  
मठोपज्ञनकावे अग्नीश्वाव इहेले तिनि एवजन  
अर्द्धादेश अनेघन ओ ज्ञाती करिते लातिवेन,  
याहाते सहविवाव-हाता संश्युक्त उहविलह जेपत्र  
कोन बुझ दायमूळे इडेक वा ना अडेक, जेतु  
उहविले इहेते सेहेजप व्यापविर्वाहित कर्त्तु अमान  
करा याहेवे एवज अनुकूलजावे अभीत कोन अर्द्धादेश  
ज्ञाती हैवात् समस्त हैते ताहा सहसदे आहेले  
त्याय अमजासम्भव हैवे ।

(४) एहे अनुच्छेदेर (३) दफाव अंदीन ज्ञाती-  
कृत एज्येक अर्द्धादेश धधाशील्ल सहसद उपसूक्ष्मित  
हैवेवे एवज सहसद शुनग्हित इहेवाव लक्ष्य इहेते  
यिन्ह दिनेव सधेय एहे प्रविवावेव ८१,८२ ओ ८३  
अनुच्छेदसंज्ञहित विवावल्ली अग्नोज्ञनीय उपशम्पो-  
कर्तनेसह शान्ति इहेवे ।

শষ্ঠ ভাগ

## বিচারবিভাগ

### ১ম পরিষেবাদ—সুপ্রীম কোর্ট

৯৪। (১) “বাহ্নাদেশ” সুপ্রীম কোর্ট নামে বাহ্না  
দেশের একটি সর্বোচ্চ আদালত থাকিবে এবং  
আপীল বিভাগ ও হাইকোর্ট বিভাগ নইয়া তাহা  
গঠিত হইবে।

(২) প্রধান বিচারপতি (যিনি “বাহনাদেশের  
প্রধান বিচারপতি” নামে অভিহিত হইবেন)  
এবং অত্যেক বিভাগে আসনশ্রহন্তের জন্য রাষ্ট্ৰ-  
পতি প্রেক্ষণ সংস্থাক বিচারক নিয়োগের অন্তর্ভুক্ত  
বৈধ করিবেন, তেইকৃপ সংস্থাক অন্যান্য বিচারক  
নইয়া সুপ্রীম কোর্ট গঠিত হইবে।

(৩) প্রধান বিচারপতি ও আপীল বিভাগে  
নিযুক্ত বিচারকসদ কোর্ট উকু বিভাগে এবং  
অন্যান্য বিচারক কোর্ট হাইকোর্ট বিভাগে আসন  
গ্রহণ করিবেন।

(৪) এই সংবিধানের বিশ্বাবনী-সামগ্রে  
প্রধান বিচারপতি এবং অন্যান্য বিচারক বিচারকার্য-  
পালনের প্রেক্ষে স্বার্থীন থাকিবেন।

৯৫। (১) প্রধান বিচারপতি রাষ্ট্রপতি কৃত্তি নিযুক্ত  
হইবেন এবং প্রধান বিচারপতির মতিপ্রদর্শন করিয়া  
রাষ্ট্রপতি অন্যান্য বিচারককে নিয়োগদান করিবেন।

(২) কোর্ট ব্যক্তি বাহ্নাদেশের সামরিক না  
হইলে এবং

(ক) সুপ্রীম কোর্টে অনুচন দশ বৎসরকাল  
অ্যাক্তিভেকট না থাকিয়া থাকিবে, অথবা

(খ) বাহ্নাদেশের রাষ্ট্রীয় সীমানার মধ্যে  
অনুচন দশ বৎসর কোন বিচারবিভাগে  
নদী অবিক্রান্ত না করিয়া থাকিলে কিংবা  
অনুচন দশ বৎসরকাল অ্যাক্তিভেকট  
না থাকিয়া থাকিলে, এবং অনুচন  
কিন বৎসর ত্রুট্য-বিচারকের ক্ষেত্রে  
নির্বাচ না করিয়া থাকিবে

তিনি বিচারকসদ নিয়োগদাতের মোত্ত হইবেন না।

(৩) এই অনুচনে “সুপ্রীম কোর্ট” এলিজে

সুপ্রীম কোর্ট অভিহিত

বিচারক-নিয়োগ

एते ग्रन्थिनाम-प्रबर्तनेर सूर्ये ये कोन समये वाचा-  
देशेर जाक्षीम् श्रीमानारु मर्देये द्ये अग्रान्त  
हाइकोटे हिमारे एधतिहारु प्रमाण करियाछ,  
मेहि आग्रान्त अनुज्ञुक इहिवे ।

१६। (३) एहे अनुकूलदेह विद्वावनी-साधके  
कोन विचारक जास्ति नहमरु वस्त्र शूर्पं हजमा  
पर्यन्त शीमा लदै वहान थाकिवेन ।

विचारक लदा  
वस्त्रम्

(४) अमानित अग्रान्त वा अग्रामर्थीर  
कारने नहमदेह द्योटे नमस्त-अहभ्यारु अनुज्ञन  
सूर्य-हृतीशाहम् लरिष्टजारु घारा प्रग्राहिति नहमदेह  
प्रस्तावक्त्रये अदृत जाक्षीपतित्र खोदेश दृतीत कोन  
विचारकके अपसारित करा याहिवे ना ।

(५) एहे अनुकूलदेह (२) सज्जन अष्टीर अग्राव  
सम्भिति पद्धति अवह टकान विचारकेर अग्रान्त वा  
वा अग्रामर्थी सम्भके उदृत ओ अग्रालीरु पद्धति  
नहमद आईनेर घारा नियन्त्रने करिते पारिवेन ।

(६) कोन विचारक जाक्षीपतित्र उद्देश करिया  
सूक्षेवमुक्त गवत्यागे शीमा लदै त्यज करिते पारिवेन ।

१७। अविन विचारपतित्र लदै शूर्प इहिले किथा  
अनुपस्थिति, अनुमृता वा अन्य कोन काढले अविन  
विचारपति लौहार दासित्वालान अग्रमर्थ वनिया  
जाक्षीपतित्र निकटे भट्टोष्टज्जनकजावे अजीम्मान इहिले  
शेत्रज्ञ अन्य टकान वृक्ति अनुकूल लदै द्योग्रान  
ना करा लम्हन्ति किंवा अविन विचारपति शीमा कार्य-  
उड़ गुनराम श्रीहन ना करा लम्हन्ति आसीन विभागेर  
अन्यान्य विचारकेर सध्ये मिलि कर्म-खसेपत्र, तिनि  
अनुकूल कार्यान्त भालन करिवेन ।

अस्त्रामी विधान  
विचारपति नियाम

१८। एहे ग्रन्थिनाम-प्रबर्तनेर १४ अनुकूलदेह विद्वावनी  
सत्रुत अविन विचारपतित्र सहित लदामर्श करिया  
जाक्षीपतित्र निकटे शूर्पीम कोटेर कोन विभागेर  
विचारक-नहमर्या नामयिकजावे शृङ्खि करा उचित  
वनिया भट्टोष्टज्जनकजावे अजीम्मान इहिले तिनि  
ग्रामर्थ द्योग्रानकाम्भ एक वा एकाविक वृक्तिक  
जेनविक तुइ वहमरेह जहारु अठिरिक्त विचारक विशुक्त  
करिते पारिवेन, किंवा तिनि उपमुक्त विवेचना  
करिले हाइकोटे विचारेह कोन विचारकके ये  
कोन अग्रामी मेयादेह वृम्य आलीन्व विचारेह

मुद्दां लोटिर  
अविन विभागेर

आमन्त्रयाहनेर व्यवस्था करिते पारिबेन;

तबे शक्ति थाके द्ये, अतिरिक्त विचारकक्षपे  
निमूळ कोन व्यक्तिके एই संविधानेर १५ अनुच्छेदर  
तरीन विचारकक्षपे निमूळ हइते किंवा वर्ज्ञान  
अनुच्छेदर अर्थीन आरु एक देशादेर अन्य  
अतिरिक्त विचारकक्षपे निमूळ हइते वर्ज्ञान  
अनुच्छेदर कोन किछुते विवृति करिबे ना।

१९९। तोन व्यक्ति (एই संविधानेर १८ अनु-  
च्छेदर विधानाबनी-अनुज्ञाते अतिरिक्त विचारकक्ष  
दायित्वालन व्यक्ति) विचारकक्षपे दायित्वालन  
करिया याकिने उक्त पद हइते अवगत्याहनेर वा  
अपश्चात्ति इवार तर तिनि कोन आदानक वा  
कर्त्तव्यक्षेर निकट उकालति वा कर्म करिबेन ना  
एवह अजात्कुरुते कर्म नियोजनातेर योग्य हइबेन ना।

अवगत्याहनेर पर  
विचारकक्ष अधिक्षम

२००। दायित्वालीते सूधीम कोटेर मूसी आजन  
माकिबे, तबे राक्षेपति अनुमोदन नहिया अधिकान  
विचारपति समझे समझे अन्य द्ये मूल वा यून-  
समूह निर्वाचन करिबेन, मैडे मूल वा मूलमसूहे  
हाइकोटे विभागेर अविवेशन अनुकृति हइते  
मारिबे।

सूधीम कोटेर आजन

२०१। एই संविधान वा अन्य तोन आईबेर  
यात्रा हाइकोटे विभागेर उल्ल त्यक्तप आमि,  
आपीन ओ अन्यप्रकार एथियार ओ अपता अपितु  
हइमाछ, डेक विभागेर मैडे त्यक्तप एथियार ओ जपता  
माकिबे।

हाइकोटे विभागेर  
एथियार

२०२। (१) तोन आनुच्छेद व्यक्ति आवेदनक्षम एই  
संविधानेर तुलीम तातोदूर मूल अपितु अविकार-  
समूहेर द्ये तोन एकाटि बनबाह करिबाह कर्त्त्य  
अजात्कुरुतेर विभागाबनीति निकृति अभिकृति तोन  
दायित्वालनकानी व्यक्तिस्थ द्ये तोन व्यक्ति वा कर्त्त्य-  
प्राप्तके हाइकोटे विभागेर उपमूळ नियोजनाबनी वा  
ज्यादेशाबनी रहन करिते भारिबेन।

सौधीक अपिकार  
एवकाकर्त्त्य अविकार  
द्याह करिबाह  
आवेदन ओ विभागे  
त्यक्ति-माल तोन  
हाइकोटे विभागेर  
भारिबा

(२) हाइकोटे विभागेर निकटे मनि जनकुअ-  
क्षनकाभाबे अणीम्हान इक्ष द्ये, आईबेर मूल आमु  
तोन जगज्ञनप्रद विधान करा इय नाहे, ताहा हइले

(क) द्ये तोन सहभूक्त व्यक्ति आवेदनक्षम

(अ) आकाशका वा झूनीम कर्त्तव्यविभावनीका अहित संश्लेषे तथा टकान सामिक्षण्यालयने उक्त बुद्धिक आईनेवा घृता अनुमानित नम्य, एवन टकान कार्य कडा इति विभृत ग्राहिदात्र जन्म किंवा आईनेवा घृता ऊहात्र कर्त्तव्य कर्त्तव्य कर्त्तव्य जन्म निर्देश अदान करिया, अथवा

(आ) आकाशका वा टकान सूनीम कर्त्तव्यविभावनीका अहित संश्लेषे तथा टकान सामिक्षण्यालयने उक्त बुद्धिका कृक टकान कार्य वा गृहोत्र टकान कार्यदात्रा आईनमध्यात कर्त्तव्य बुद्धिके कडा इतिपाछे वा गृहोत्र इतिपाछे उ ऊहात्र टकान आईनमध्यात कार्यकर्त्ता नाई विभृत घोषने करिया

उक्त विभाग आदेशदान कर्त्तिते भावितव्य, अथवा

(भ) ये टकान बुद्धिक आवेदनकर्म

(अ) आईनमध्यात कर्त्तव्य बुद्धिके वा वैआईनी उपाय टकान बुद्धिके प्रहङ्गाम आटेक ग्राम्य इस्त्रा नाई विभृत याहात्र उक्त विभागेव निकटे प्रान्तोपकरणकार्त्रे अतीमध्यान इतिते लालौ, सेहेकन्या प्रहङ्गाम आटेक उक्त बुद्धिके उक्त विभागेव प्रान्तोपकरणकार्त्रे अनुकूलत्र निर्देश प्रदान करिया, अथवा

(आ) टकान प्रदकारी पदे आमीन वा आमीन विभृत विभृतित टकान बुद्धिके तिनि टकान कर्त्तव्यविभावना अनुकूल प्रदानमध्यात अधिकारीने द्वावी कर्त्तितेहन, ऊहा अदर्शने निर्देश प्रदान करिया

उक्त विभाग आदेशदान कर्त्तिते भावितव्य।

(३) उपकृ-उक्त मफाममूहे याहा वला इतिपाछे, ऊहा सत्रुउ एवे संविधानेव ४७ अनुकूल

प्रत्योक्ता इस, परेक्स कोन आईनेरु केवल बर्द्धान अनुच्छेदरु अवीन कोन आदेशमानेरु भएपता हाईकोटे विभागेरु आकिर्वे ना ।

(४) एই अनुच्छेदरु (५) मृका किंवा एই अनुच्छेदरु (६) मृकारु (क) उप-मृकारु अवीन कोन आवेदनक्रमे ये टक्के अनुर्दिती आदेश आवर्ता कर्वा हाईमार्हे अब अनुक्तप अनुर्दिती आदेश

(क) देखाने जमाक्तान्त्रिक कर्मसूची वासु वासुलेरु कृन्या कोन व्यवस्थारु किंवा कोन उपस्थनमूलक कार्यरु प्रतिकूलता वा वार्ता सृष्टि करिते पारे, अथवा (ख) देखाने अन्य कोनकारु कनज्ञात्यरु परेक्स प्रतिकरु हाईते पारे,

मेहेभाने अग्रपिनि-ज्ञानालयके लेणु आवेदन जमार्के गुणित्वान्तरु द्वाचित्प्रदान अब अग्रपिनि-ज्ञानालयेरु (किंवा एই विभागे लोहारु "मुखा" जाहशासु अन्य कोन अग्रात्तोकरेह) वक्तव्य अवधे ना करा भव्यतु अब एই मृकारु (क) वा (ख) उप-मृकारु उभित्वा प्रतिक्रिया सृष्टि करिते ना विभा हाईकोटे विभागेरु निकटे संक्षार्जनकारु अलीम्यान ता इया पर्याप्तु लेणु विभाग कोन अनुर्दिती आदेश मान करितेव ना ।

(७) प्रत्येक अग्रोक्तु अनुक्तप ना हाईव एই अनुच्छेद "व्युत्कृष्ण" विभिन्न ग्रन्थकारी कर्तुपत्रक ओ जाहशादेशरु प्रतिक्रिया कर्मविभागामध्ये ग्रहजानु अवाईनेरु अवीन अग्रिहित हाज आदानपत्र वा त्रिविन्युनाम व्युत्कृष्ण किंवा एই जह विभानेरु ११७ अनुच्छेद अग्रोक्तु इस, परेक्स कोन त्रिविन्युनाम व्युत्कृष्ण ये टक्के अदानपत्र वा त्रिविन्युनाम अनुर्दिता हाईवे ।

१०३। (१) हाईकोटे विभागेरु राष्ट्र, किंवा, आदेश वा मठादेहारु विभागे आमीन शुनानीरु ओ जाहा विभिन्नि एधित्यारु आमीम विभागेरु आकिर्वे ।

(२) हाईकोटे विभागेरु राष्ट्र, किंवा, आदेश वा मठादेशेरु विभागे आमीन विभागेरु निकटे मेहे रक्षणे अधिकारुवर्त्तव आमीन करा आईवे, ये टक्के हाईकोटे विभाग

(क) एই ग्रन्थ जातिक्रिकटे मान करितेव ये, माझलात्तित्र अहित एই जह विभान-

आमीन विभागेरु अधित्यारु

व्याख्यात विषये आईनेरु मुकुल्पूर्न  
प्रथा कृति इसाहै; अश्वा

(भ) टोन सूक्ष्मदत्त वहन किसाहै तिथा  
टोन व्यक्तिके सूक्ष्मदत्त वा मादक्षेवन  
कारादत्त कृति इसाहै; अश्वा

(ग) उक्त विजापत्र अवगाननाहै लग्न वहन  
व्यक्तिके सूक्ष्मदत्त किसाहै;

एवं ग्रन्तमें आईन-स्वाहा यजूल विवाह कहा हैवे,  
सेहेक्षण जानान्तरु देखेये।

(३) हाईकोर्ट विजापत्र जाय, तिकी, आदेश  
वा सूक्ष्मदेशों विकल्प ये मामनाय एवे अनु-  
कृदत्त (२) दूजा प्रयोज्य नहे, केवल आपील  
विजापत्र आपीलेन अनुमतिदान किसेन एवे  
मामनाय आपील प्रिवेट।

(४) ग्रन्तमें आईनेरु स्वाहा घोषना कित्ते  
पारिवेन ये, एहे अनुकृदत्त विवाहमधूह हाईकोर्ट  
विजापत्र अपेक्षा यजूल यजूल प्रयोज्य, अन्य कोन आपात  
वा उपर्युक्तानेन एवेओ ताहा यजूल प्रयोज्य  
हैवे।

१०४। टोन व्यक्तिर हाजिरा किथा फेन मूलिन-  
पत्र उप्पादेन वा दाखिल किवाहै आदेशमह  
आपील विजापत्र निकटे विजापत्रीन ये टोन  
मामना वा विषये सम्बूर्न न्यायविचारेन इन्य  
यजूल प्रयोज्यनीया हैते नाहे, उक्त विजापत्र  
सेहेक्षण निर्देश, आदेश, तिकी वा दोषे काही  
करिते नारिवेन।

१०५। ग्रन्तमें एवे टोन आईनेरु विवाहादनी-  
मापेक्षे एवं आपील विजापत्र कर्त्तक अनीत ये  
टोन विवि-मापेक्षे आपील विजापत्र टोन  
घोषित जाया वा प्रदत्त आदेश पुनर्विवेचनात  
प्राप्ता उक्त विजापत्र आकिवे।

१०६। यदि टोन मध्ये जाकुपतिक निकटे  
अजीमान इस ये, आईनेरु एहेक्षण टोन अश्वा  
उप्पादित इसाहै वा उप्पादेन सम्भावना देखा  
दियाहै, याहा अमर विवेचन वा अमर जैनकृत-  
सम्भव ये, एवे सम्भवे सुलीम ऐट्टेन गतापात  
करन कहा अश्वाहै, ताहा इसेन तिनि अद्यति

आपील विजापत्र  
प्राप्ताया जाही  
विवेच

आपील विजापत्र कहि  
जाय वा आदेश  
पुनर्विवेचना

सुलीम ऐट्टेन  
उप्पादेन सम्भव  
विवेचना

आपोन विभागेह विवेचनार्थ इन्यु ट्रेनर्स कठित  
पाहितेन एवं उक्त विभाग स्थीय विवेचनाम् डेपमूर्क  
शुभानीर लक्ष्य प्रश्नादि सम्बन्धे राष्ट्रीयिक स्थीय  
अतामत उडापन कठित पाहितेन ।

१०७। (१) जहान्मद कर्त्तक श्रीमीत ये लोग आईन-  
मालेखे मुख्यीम टोकट्टे राष्ट्रीयिक अनुसूचन लैदेशा  
अतेक विभागेह एवं अविस्तुन ये लोग आदानपत्र  
स्थीति ओ लक्ष्य-नियमन्त्रलेह इन्यु विविस्त्रूह अनेकम  
कठिते पाहितेन ।

(२) मुख्यीम टोकट्टे एहे अनुसूचनादत (१) दफ्तर  
एवं एहे जहान्मीनेन्द्र ११३, ११५ ओ ११६ अनुसूचन-  
मालाहेह अविन जाग्रिष्ठप्रमूहेह जार उक्त आदानपत्र  
लोग एकदि विभागेक किहवा एक वा एकाधिक  
विभागकके अपर्ण कठित पाहितेन ।

(३) एहे अनुसूचनादत अविन अवीक विविस्त्रूह-  
आपेक्षेन लोगन् लोग विभागकले लैदेशा लोग  
विभागेह लोग देश गाठिक इहेद्वा एवं लोग लोग  
विभागक लोग उद्देश्य आपन श्रहने कठितेन, ताहा  
लोगान विभागले निर्धारणे कठितेन ।

(४) अविन विभागले मुख्यीम टोकट्टे ये लोग  
विभागेह कर्त्त्व अवीनेत्व विभागकके देशे विभागे  
एहे अनुसूचनादत (३) दफ्तर किहवा एहे अनुसूचनादत  
अविन अवीक विविस्त्रूह-ज्ञाना अधिक ये लोग  
कागजाअप्पोलेह जार अपान कठिते पाहितेन ।

१०८। मुख्यीम टोकट्टे एकदि “लोके यद्य लोके”  
हहेवेन एवं हेशाह अवभाननार इन्यु तदतुक आदेश  
दान वा दक्षादेशमालेह ज्ञानामह आईन-मालेखे  
अनुसूचन आदानपत्र लक्ष्य अधिकारी शाकितेन ।

मुख्यीम टोकट्टे  
विविस्त्रूह-ज्ञाना

“लोके यद्य लोके”  
काल मुख्यीम टोकट्टे

१०९। हाहेकोट्टे विभागेह अविस्तुन लक्ष्य आपानत  
ओ श्रोइनुमालेह उल्लु उक्त विभागेह उक्तविवान ओ  
नियमन्त्र-क्रमजा शाकितेन ।

आपानकम्भमुहुर्त  
केन्द्र ज्ञानामह  
ओ नियमन्त्र

११०। हाहेकोट्टे विभागेह निकटे पदि अनुसूच-  
क्षनकजावे अवीमपान इस्त ये, उक्त विभागेह लोग  
अविस्तुन आदानपत्रे विभागाधीन लोग ज्ञानामह  
एहे अविवेकान्द्र व्याख्या-प्रकान्तु आईनेह एमन  
शुक्र-इमूर्न उक्त वा एमन इनाशुक्रप्रमाणन्त्र विशेष

अविस्तुन आदानपत्र  
हाहेकोट्टे विभागेह  
ज्ञानामह

अधिकृत दृश्याच्छा, मंश्विष्ट मासनार शीमांसार  
जून्य माझार सम्बर्के निष्ठातुष्ठने प्राप्तोऽहन,  
ताहा हैटेव शाहीकांडे विजाग ऊक आदानवत  
हैतेजे माघलाचि अव्याहार कविष्ठा लहेदेव  
एवं ।

- (क) मुग्ध आघलाचिं शीमांसा कविदेव;  
अशब्दा  
(ख) ऊक आईवेव अश्विं निष्ठिं कवि-  
देव एवं ऊक अश्व सहाय शाईलेटे  
विजागेव वात्सर लक्नमह ये  
आदानवत हैतेजे माघलाचि अव्याहार  
कवा हैश्वाचिल, मेह आदानवत (वा  
अन्य तोन अव्युन आदानवत)  
माघलाचि केव आठाईदेव एवं  
ताहा प्राप्त हैवार खव मेह व्याध-  
नव ऊक वात्सर महिं मध्यातिरका  
कविष्ठा माघलाचिं शीमांसा कविते  
प्रवृत्त हैदेव ।

१११। आपोन विजाग कर्तृक घोषित आहेन  
हैतेकोटे विजागेव जून्य एवं मुष्टीम कोटेव  
ये तोन विजाग कर्तृक घोषित आहेन अव्युन  
मुक्त आदानवत जून्य अव्युभानवनीय हैदेव ।

मुष्टीम कोटेव  
उपमह विजागामीक  
आदानवत

११२। अजातकुर जाङ्गीम शीमानार अनुरूप  
मुक्त विजाही ओ विजाह विजाहीम कर्तृपक मुष्टीम  
कोटेव गहासजा कविदेव ।

मुष्टीम कोटेव  
गहासजा

११३। (१) अंगान विजाहमति किंवा ऊहार  
निर्देशकम अन्य तोन विजाहन वा कर्भाचारी  
मुष्टीम कोटेव कर्भाचारीदिशके विशुक कविदेवन  
एवं जाङ्गीमति शूर्वामुमानक्तनम ज्ञातीम कोटे  
कर्तृक अनीत विविजमूर्त अनुभासी एवं निझाजान  
कवा हैदेव ।

मुष्टीम कोटेव  
कर्भाचारीन

(२) अंसदेव ये तोन आईमत विजाना-  
वनी-आपेक्ष मुष्टीम कोटे कर्तृक अनीत विविजमूर्त  
गमत्तम विर्वाहित हैदेव, मुष्टीम कोटेव कर्भाचारीपद  
कर्तृत वात्तव्यनी देवेत्तम हैदेव ।

## ২য় পরিষেবা—অধিকৃন্ত আদালত

১১৪। আইনের দ্বারা মেরুপ প্রতিষ্ঠিত হইবে, সুষ্ঠীম কোটি ব্যক্তি সেই কল্প অন্যান্য অধিকৃন্ত আদালত প্রাপ্তিবে।

অধিকৃন্ত আদালত  
সমূহ প্রতিষ্ঠা

১১৫। (১) বিচারবিভাগীয় শব্দ বা বিচারবিভাগীয় দায়িত্বপ্রাপ্তদেরকারী স্বাক্ষিরেট-শব্দ

অধিকৃন্ত আদালত  
বিকল

(ক) ক্ষেত্র-বিচারকের ক্ষেত্রে সুষ্ঠীম খেত্রের সুপারিশকর্ম, এবং

(খ) অন্য কোন ব্যক্তির ক্ষেত্রে উপযুক্ত প্রত্যক্ষকারী কর্ম কমিশন ও সুষ্ঠীম কোটির সহিত প্রামাণ্যকর্মে রাষ্ট্রপতি কর্তৃক উক্ত উদ্দেশ্যে প্রদত্ত বিবিসমূহ-অনুযায়ী

রাষ্ট্রপতি নিয়োগদান করিবেন।

(২) কোন ব্যক্তি ক্ষেত্র-বিচারক-শব্দ নিয়োগদাতের মোগ্য হইবেন না, যদি তিনি

(ক) নিয়োগদাতের জন্যে প্রকল্পকর্ত্তা কর্ম করত থাকেন এবং উক্ত কার্য অনুযান জাত ব্যস্তকার্য বিচারবিভাগীয় শব্দ বহান না প্রাপ্তিবে থাকেন; অথবা

(খ) অন্যান্য দুর্বল ব্যস্তকার্য আঁকড়ে কোটি না প্রাপ্তিবে থাকেন।

১১৬। বিচার-কর্মবিভাগে নিযুক্ত ব্যক্তিদের এবং বিচারবিভাগীয় দায়িত্বপ্রাপ্তদের কৃত স্বাক্ষিরেটের নিয়ন্ত্রণ (কর্মসূচি-নির্বাচন, পরমান্বতিদান ও কুটি-মঙ্গল সহ) ও শৈক্ষণ্যবিদ্যান সুষ্ঠীম কোটির উপর ন্যস্ত প্রাপ্তিবে।

অধিকৃন্ত আদালত  
সমূহের বিষয়ের  
ও শৈক্ষণ্যবিদ্যা

## ৩য় পরিষেবা—প্রশাসনিক প্রাইভেটনাল

১১৭। (১) ইকাইপুর্বে যাহা ব্যবা হইয়াছে, তাহা প্রাপ্তেও নিয়ুক্তিপ্রিত স্বাক্ষিরেট সম্ভার্ক বা স্বাক্ষির হইতে উচ্ছৃঙ্খল বিষয়াদিত উপর অভিযোগ-প্রাপ্তের জন্য সহস্র আইনের দ্বারা এক বা একাধিক প্রশাসনিক প্রাইভেটনাল প্রতিষ্ঠিত করিতে পারিবে;

প্রশাসনিক প্রাইভেট  
নাল সমূহ

(ক) নবজ্ঞ জাতি বিষয়াদিত এবং

जन्मेदक्षु वा अना दृष्टसह अव्याख्यात  
कर्म निमूल भृत्यिदेव कर्मेव  
भास्त्रिनो ;

- (भ) मे कोन झाकुमुख उद्याम वा  
प्रविविद्वद्ध ग्रन्थकारी कर्त्त्वमध्येत  
चालना ओ बुवमूलना परव अनुकूल  
उद्याम वा प्रविविद्वद्ध ग्रन्थकारी  
कर्त्त्वमध्येत कर्मसह तकान आईनेत  
द्वारा वा अधीन ग्रन्थकारी उपर्युक्त  
न्युमु वा ग्रन्थकारी द्वारा भवित्वित  
तकान ग्रन्थिद्वारा अर्थन, अव्याख्य  
बुवमूलना ओ विनि-बुवमूः ;  
(ग) ये आईनेत उपर्युक्त परवे प्रविविद्वद्ध  
१०२ अनुकूलदेव (०) अक्षय एव्याकृ  
हक्क, ग्रन्थिप तकान आईन।

(२) तकान लक्ष्ये एवे अनुकूलदेव अधीन  
तकान अशास्त्रिक द्वारैन्द्रानाम् अतिकृत इटेन  
अनुकूल द्वारैन्द्रानामेव अतिकृत्यावेव अनुकूल  
तकान विवर्ण्य आन्य तकान आद्यानत तकानेत्प  
कामित्वाहा प्राप्ते करित्वेन ना वा तकान आद्ये  
प्राप्तावे करित्वेन ना ;

ज्येष्ठ शत्र्य भारक ये, अहम्म आईवेत द्वारा  
अनुकूल तकान द्वारैन्द्रानामेव मिक्कातु पुनर्विवेचना  
वा अनुकूल मिक्कात्तेव विवर्ण्य आमोल्येव विवेच  
करित्वे भास्त्रिवेन ।



## निर्बाचन

(१) प्रेसान् निर्बाचन कमिशनाऱ्हके नाइया  
एवं राष्ट्रपति अस्त्रम् अधारा एकला निर्देश  
करिवेन, ऐसेकला प्रभुक अन्यान्य निर्बाचन  
कमिशनाऱ्हके नाइया बाह्याद्येत् एकठि रिक्त  
चन् कमिशन आकिवा एवं उक्त विषये अनीत  
टकान् आईनेत् विधानावली-सापेक्षे राष्ट्रपति  
प्रेसान् निर्बाचन कमिशनाऱ्हके ए अन्यान्य निर्बाचन  
कमिशनाऱ्हके नियोगदान करिवेन।

निर्बाचन कमिशन  
प्रबंधा

(२) एकाधिक निर्बाचन कमिशनाऱ्हके नाइया  
निर्बाचन कमिशन प्रिति इहेत्ये प्रधाव विर्बाचन  
कमिशनाऱ्ह ताहारा प्रधापतिकाले कार्य करिवेन।

(३) एहे संविधालै विधानावली-सापेक्षे  
टकान् निर्बाचन कमिशनाऱ्हे पद्मेत् मेघाद् अंशारु  
कार्यज्ञारप्रहट्टेर आविष्ट इहेते पाँच बास्तुकाल  
इहेवे एवं

(क) प्रधाव निर्बाचन कमिशनाऱ्ह पद्म  
अविक्षित हिलेन, अमन जान व्यक्ति  
प्रकातक्त्रुत कर्त्ते नियोगनालेह योग्य  
इहेवेन ना;

(ख) अन्य टकान् निर्बाचन कमिशनाऱ्ह अनु-  
कूल पद्म फर्मावलानेत् पर अविन  
निर्बाचन कमिशनाऱ्हकला प्रियेत्वालेह  
योग्य इहेवेन, तरे अन्य केनलाले  
प्रकातक्त्रुत कर्त्ते नियोगनालेह योग्य  
इहेवेन ना।

(४) निर्बाचन कमिशन सामिख्यालालेह केवल  
माधीन आकिवेन एवं टकेल एहे संविधान  
उ आईनेत् अवैतीन इहेवेन।

(५) संसद् कर्त्तक अनीत ये वेव आईनेत्  
विधानावली-सापेक्षे निर्बाचन कमिशनाऱ्हदेह  
कर्त्तेर अर्जावली राष्ट्रपति आदेशेत् छाडा  
एकला निर्बाचन करिवेन, ऐसेकला इहेवे;

तरे गर्त थाके ये, झुम्लीम कोर्टेर विचारक  
एकला पद्मक्ति उ कारणे अपमाहित इहेत नालान,  
ऐसेकला पद्मक्ति उ कारणे व्यक्ति टकान् निर्बाचन  
कमिशनाऱ्ह अपमाहित इहेवेन ना।

(६) तकान निर्वाचन कमिशनराहु जास्तुपत्रिके  
उद्देशे करिया ग्राफरम्युक्ट लज्जायाहे सोय प्रद  
अग्राम करिते प्राप्तिवेन ।

११९। (१) सहस्रदेव अवधि निर्वाचनराहु जान्म-  
जानिका अस्तुतकर्त्तव्ये तकावधान, विद्युत ओविड्युन  
एवं सहस्रदेव निर्वाचन ओ जास्तुपत्रिपत्र विराचन  
पत्रिकालनाहु द्यामिष्ट निर्वाचन कमिशनराहु तेलव  
ग्राम्य आकित्वे एवं निर्वाचन कमिशन वै सहविधान  
ओ आईनानुभाष्टी

(२) जास्तुपत्रिपत्र निर्वाचन अनुसार  
करिवेन ।

(३) सहस्रदेव-सहस्रदेव निर्वाचन अनुसार  
करिवेन; एवं

(४) सहस्रदेव निर्वाचनराहु जन्म निर्वाचनी  
एवाकाहु ग्रीष्माना विशेषत्वे ओ भाष्टाक  
जानिका अस्तुत करिवेन ।

(२) उपवि-उक्त संशासनाहु विधानित द्यामिष्ट-  
समूहेव अविधिक ट्रेक्स्ट-द्यामिष्ट वै सहविधान  
वा अग्राम तकान आईनेहु द्याग्रा विधानित हैवे,  
निर्वाचन कमिशन मैट्रेक्स्ट द्यामिष्ट प्राप्त वैवेन ।

१२०। एडे भागेहु अवधीन निर्वाचन कमिशनराहु  
उपवि न्युक्ट द्यामिष्ट शासनराहु जन्म ट्रेक्स्ट कर्मचारीहु  
प्रत्येक्ष्ये हैवे, निर्वाचन कमिशन अनुलोधी करिन  
जास्तुपत्रिनिर्वाचन कमिशनराहु ट्रेक्स्ट कर्मचारी  
अप्राप्त व्युवहार करिवेन ।

निर्वाचन कमिशनराहु  
कमिशनराहु

१२१। सहस्रदेव निर्वाचनराहु अग्रामके  
आकित्वे निर्वाचनी एवाकाहु एकाटि करिया भाष्टाक  
जानिका आकित्वे एवं खर्द, जात, वर्ग ओ जाती-  
ग्राम्यमालदेव विधित्वे भोपालदेव विन्युम्यु करिया  
तकान विशेष द्याप्रित्वे जानिका अन्वेषन तका  
वाईवेन ना ।

अविधि व्याकार वा  
वाक्यान्वय विधेय-  
जानिका

१२२। (१) आकुत्तरम्यात्कर्त्तव्य-विधित्वे  
सहस्रदेव निर्वाचन अनुष्ठित वैवेन ।

भोपाल-जानिका  
वाक्यान्वय विधेय

(२) तकान व्युक्ति सहस्रदेव निर्वाचनराहु जन्म  
निधानित्वे तकान निर्वाचनी एवाकाहु भाष्टाक-जानिका-  
त्वे वैवेष्ट अविकासी हैवेन, यदि

- (क) तिनि बाह्यादेशीक भागिक हनः;  
 (भ) जैशास्त्र वसुद्वा अधिकार वहन्तरत कम  
ना इसः;  
 (ग) लोक व्याप्त आदानत कार्यक जैशास्त्र  
समर्थक अप्लक्षित्वा उलिया व्याप्ति  
इहान ना भाकिया भाकः;  
 (घ) तिनि ऐ निर्वाचनी अवाकाश अधिवासी  
वा अवैष्टव चुवारा वै निर्वाचनी  
एवाकाश अधिवासी विवेचित हनः  
एवः  
 (ङ) तिनि १९७२ ज्ञानेन बाह्यादेश व्याप्त-  
ज्ञानकारी (विष्णु एवैष्टव्याप्त)  
आदेशीक अधीन लोक अपदावेत  
क्षय अनुष्ठित ना हईया भाकेन।

१२७। (१) राष्ट्रीयति-पद्मद व्याप्त-अवाकाशत कर्त्तव्ये  
उक्त पद शून्य हटेन व्याप्त-समाप्तिर जाहिष्य  
नवाहे दिन शूर्व शून्यपद पूर्वते इन्द्र निर्वाचन  
अनुष्ठित हवेदः।

निर्वाचन-अपुर्वाप्त  
सम्भवः

तदे शर्त भाके मे, ये भद्रदेश भद्रसुप्त द्वारा  
तिनि निर्वाचित हवेयाच्छेन, मेरे सहमत्व व्याप्त-  
कार्य राष्ट्रीयति त्र कार्यकाल भेद हटेन सहमत्व  
पत्रवत्ती प्राप्तात्रन निर्वाचन ना इत्या भर्त्यु अपूर्व  
शून्यपद शूर्व करिवार इन्द्र निर्वाचन अनुष्ठित हवेव  
ना, एवं अपूर्वप्र भावाहन निर्वाचनेर लत  
सहमत्व अभव दैवतेकड़ दिन हवेते तिथ  
मिन्नेर भवेय राष्ट्रीयति शून्यपद पूर्व करिवार  
इन्द्र निर्वाचन अनुष्ठित हवेव।

(२) दृष्ट्य, पद ज्ञान वा अपाकाशन्ते फल  
राष्ट्रीयति पद शून्य हवेव अद्यि शून्य हवेवात  
पत्र नवाहे दिनेर भवेय जाहा पूर्व करिवार इन्द्र  
निर्वाचन अनुष्ठित हवेव।

(३) सहमत्व-समझादेश भावाहन निर्वाचन अनु-  
ष्ठित हवेव-

- (क) व्याप्त-ज्ञानावेत कर्त्तव्ये ज्ञानपद  
ज्ञानिया भावेवार ज्ञाने ज्ञानिया  
भावेवार शूर्ववत्ती नवाहे मिन्नेर भवेय;  
एवः  
 (ख) व्याप्त-अवाकाश वृजीत अन्द्र लोक  
कार्यात्र भद्रसु ज्ञानिया भावेवार

ज्ञाने भाषिका मात्रातः शब्दवर्ती  
नवाई दिवकृ मर्येत्;

जहाँ अर्ज थाके त्ये, एके दिवकृ (क) उप-मुख  
-अनुभासी अनुष्ठित आविरतने निर्बाचने विर्बाचित  
व्यक्तिगत तेके उप-मुखामा उप्पिति (मध्याद् समाप्त  
मा इत्या नमन्तु प्रसद-प्रदम्यकले कार्यकार श्रहने  
कहिवेन ना।

(४) महसद् आभिका मात्राता व्यक्तीत अनु  
टकाम् कारुण्यं प्रसदम्यकृ टकाम् जमसम्पद् शून्य इतिवे  
पदचि शून्य इतेवात् नवाई दिवकृ मर्येत् तेके शून्य-  
पद् शून्य कहिवारु अन्य निर्बाचन अनुष्ठित इतिवे।

११४। एके महविशालने विद्यानावनी-प्राप्तेक  
महसद् आईने शून्या निर्बाचनो एवाकार् औमा  
निर्बाचने, लाघोर-आविका अनुकृतकडने, निर्बाचन  
अनुष्ठानं पवर प्रसदम्यकृ प्रथामध्य खटेवेव कृन्य  
शत्याकृतीय अव्याप्ते विश्वसने ह प्रसादृ निर्बाचन-  
महकारु वा निर्बाचने प्रहित सम्पर्कित गकम  
विष्टये विद्यान अनेसम् कहिते लाहिवेन।

निर्बाचन सम्पर्क  
प्रसादृ विश्व  
सम्पर्कवेन जाहना

११५। एहे प्रसदित्याले मात्रा बना इतेयाहू, अहा  
प्राकृते

निर्बाचनो आईन-  
निर्बाचने वैवेत्ता

(क) नहे प्रसदित्याले >१४ अनुकृतेव अपेन  
प्रनीत वा अनीत चनिया विविचित  
निर्बाचनो एवाकार् औमा निर्बाचने,  
किहा अनुमान निर्बाचनी एमाकार् कृता  
आप्य-दक्षेत जम्पर्कित त्ये टकाम  
आईने दैवेता जम्पर्के केव आप्य-  
मत्ते अन्य उप्याप्तन कडा याहिवे ना;

(ख) प्रसदृ कर्त्तक अनीत (केव आईने)  
श्वासा वा अवीन विद्यान-अनुभासी  
कर्त्तव्यकृ निकषे पवर अनुमानावे  
निर्बाचित अभावीत निर्बाचनो दृग्यामु  
व्यक्तीत जाकुलिति-पद् निर्बाचन वा  
महसदम्यकृ टकाम निर्बाचन उपभूते  
टकाम अन्य उप्याप्तन कडा याहिवे ना।

निर्बाचन अभिवेक  
निर्बाचनी कर्त्तव्यकृ  
अनुभासावा

११६। निर्बाचने कम्पित्याले पामित्युपावसे प्रश्नयका  
कडा जम्पर्क निर्बाचनी कर्त्तव्य इतिवे।

## अष्टोम जाग

### महा हिंसाव-निरोक्षक ओ निश्चयक

१२७। (१) बाह्यादेशन अकाल्य महा हिंसाव-  
निरोक्षक ओ निश्चयक (जलापत्र "महा हिंसाव-निरोक्षक"  
मात्रम् आठिंश्च) आक्रित्वेन अवश ऊर्ध्वाके इच्छुभवि  
निष्ठोत्तमान करित्वेन ।

महा हिंसाव-निरोक्षक  
निष्ठा अवश

(२) एই संविधान ओ लैमद उर्ध्वक अधीत  
त्वे लकान आईनेन्द्र विधानावन्मी मालाके महा  
हिंसाव-निरोक्षकके उर्ध्वक अवश्वी इच्छुभवि आदे-  
शन द्वारा देखान विधान्विदों करित्वेन, स्वेच्छा इतेवे ।

महा हिंसाव-निरोक्षक  
प्रगिष्ठ

१२८। (१) महा हिंसाव-निरोक्षक अक्षात्कृते  
प्रवकाशी हिंसाव अवश अकाल्य, स्वेच्छाकी  
कृप्तिपक्षा ओ कम्भिर्वाडी ग्रवकाशी हिंसाव निरोक्षा  
करित्वेन ओ अनुकूल हिंसाव अमर्तक लिपादें मान  
करित्वेन अवश त्वे उत्तम्लेप्ति तिनि किंवा त्वे इ  
अत्मोक्तने ऊर्ध्वाड द्वारा अप्रभाग्यामुकोन वृक्षि  
अक्षात्कृते कर्त्ता निशुक्त त्वे एकान वृक्षिन्द्र दृथल-  
कुक्त मकान नथि, वहि, इमिद, मनिम, नगद, अर्थ,  
स्त्रियाम, जामिन, जाकारु ना अव्युप्रकारु ग्रवकाशी  
ग्रम्भाति प्रवीकारु अधिकाशी इतेवे ।

महा हिंसाव-निरोक्षक  
प्रगिष्ठ

(२) एই अनुच्छेदन (१) दफ्तार वर्ति विधाना-  
वनीत इनि ना करिया विधान करा इतेवे ये,  
आईनेन्द्र द्वारा अप्रभाग्यावे अतिंश्चित लकान त्योथ  
संहार एकदेव आईनेन्द्र द्वारा देखान वृक्षि कृप्ति  
उक्त महात्मा हिंसाव निरोक्षाव ओ अनुकूल हिंसाव  
ग्रम्भके लिपादेन्द्रात्मक वृक्षमूर्ता करा इतेया चाके,  
स्वेच्छाम वृक्षि वर्त्तक अनुकूल हिंसाव विधान  
ओ अनुकूल हिंसाव ग्रम्भके लिपादें मान करा  
मात्रेवे ।

(३) एই अनुच्छेदन (१) दफ्तार निर्धारित  
सामिक्षमयूर वृक्षीत ग्रहमद आईनेन्द्र द्वारा देखान  
निर्धारिते करित्वेन, महा हिंसाव-निरोक्षकके देइ-  
कूल मामिक्षजारु अर्थवे करित्ते पात्रित्वेन अवश  
एই दफ्तार अधीन विधानावन्मी अधीत ना इतेया  
पर्मुक्त इच्छुभवि आदेशन द्वारा अनुकूल विधानावन्मी  
प्रभेयन करित्ते पात्रित्वेन ।

(४) एই अनुच्छेदन (१) दफ्तार अधीन सामिक्ष-

मावनेक कोवे महा हिमाव-निरीक्षकके अवृ  
त्तान् व्यक्ति वा काल्पनिकते लिखानवा वा लियाकुलेरु  
अधीन कर्ता इहेवन ना ।

१५३। (१) एहे अनुच्छेद-प्राप्तेक महा हिमाव-  
निरीक्षक आसे संस्कृत वाय्यम शूर्ण श्वेता शर्मन्तु  
काहारु लद्दु वहाव आकितेव ।

महा हिमाव-निरीक्षक  
आकृत व्याप्त

(२) गूणीम टाकर्देव कोव विचारक द्यक्ष लक्ष्मि  
उ काल्पनि अपमाहित इहेते पात्रेक लेहेत्तु लक्ष्मि  
उ काल्पनि व्यक्ति महा हिमाव-निरीक्षक अपमाहित  
इहेवन ना ।

(३) महा हिमाव-निरीक्षक उत्तुभित्ति त्रिष्ठु  
कर्वया श्रावकरम्भु लज्जामात्रा श्रीय लद्दु ज्ञान कर्तित  
पात्रितेव ।

(४) कर्वाचमानेत्रु लद्दु महा हिमाव-निरीक्षक  
अकालकुरु कर्ता अमा कोव लद्दु विमुक्त इहेवारु  
योग्य इहेवन ना ।

१७०। लेखने समाये महा हिमाव-निरीक्षके लद्दु  
शून्य आकिते किवा अनुपस्थिति, अस्तुमृता वा  
अन्य टकाव काल्पने तिनि कार्यकालमानेन अक्षम  
दनिया उत्तुभित्ति विक्षेपे मन्त्रावज्ञवक्तव्ये अलीक्षः  
मान इहेत्तु लेखन्ति एहे संविवानेव १७ अनुच्छेद  
अधीन टकाव नियोगदान ना कर्ता शर्मन्तु किवा महा  
हिमाव-निरीक्षक शुनवाय श्रीय दायित्वे प्रहवे ना  
कर्ता शर्मन्तु उत्तुभित्ति कोव व्यक्तिके महा हिमाव-  
निरीक्षककर्त्त्वे कार्य कर्तिवारु जृन्य एव उक्त लद्दु  
दायित्वात् लालवेत्रु जृन्य नियोगदान कर्तिते  
पात्रितेव ।

अस्तुमृता महा  
हिमाव-निरीक्षक

१७१। उत्तुभित्ति अस्तुमोमनक्तये महा हिमाव-  
निरीक्षक द्यक्ष निर्विद्वन कर्तितेव, लेहेत्तु लक्ष्मि  
आकारु उ पक्षतिते अकालकुरु हिमाव उक्षित  
इहेवे ।

प्रकाशक्तु उत्तुभित्ति  
हिमाव लक्ष्मि आकारु उ  
पक्षति

१७२। अकालकुरु हिमाव ग्रामकिति महा हिमाव-  
निरीक्षके उत्तुभित्ति उत्तुभित्ति विक्षेपे लेश कर्ता  
इहेवे एव उत्तुभित्ति जाहा संहस्रे लेश कर्तिवारु  
व्यवस्था कर्तितेव ।

मामाय महा हिमाव-  
निरीक्षक उत्तुभित्ति  
संहस्रान्त

## बालादेशेर कर्मविभाग

### १३ अनियतकाल—कर्मविभाग

१३३। एहे महविवादेह विदानावली-माप्तके  
महसद आईतेह द्वारा अकातक्के रार्डे कर्मावली-  
मेत्र नियोग ओ कर्मेत्र शर्तावली नियुक्ते करिते  
साहितेन;

विभाग ५ कर्मविभाग

जेव शर्त भाटके ये, एहे उद्देश्य आईतेह  
द्वारा वा अधीन विदान अधीत ना हउणा नयकु  
अनुकूल कर्मावलीमेत्र नियोग ओ कर्मेत्र शर्ता  
वली नियुक्ते करिता विविसमृक्ष-पर्वतावली अमता  
आनुभविति थाकिवे एव अनुकूल ये कोन आईतेह  
विदानावली-माप्तके अनुकूल विविसमृक्ष कार्यकृत  
इहेवे।

१३४। एहे महविवादेह द्वारा अनुकूल विदान  
ना करा इरेहा थाकिले अकातक्के रार्डे नियुक्त  
अडेक युक्ति आनुभविति संतुष्टानुयायी सम्प्रीति  
पर्यंते द्वीप नदे बहान थाकिवन।

कर्मेत्र येणाद

१३५। (१) अकातक्के रार्डे असामटिक नदे  
नियुक्त द्वारा व्युक्ति औहार नियोगक्ती कर्तृपक्ष-  
आपका अस्तुन कोन कर्तृपक्षेह द्वारा वहान  
वा अपमार्दित वा नमावनमित इहेवन ना।

असामटिक नदेहो  
कर्तृपक्षीयेत्र  
व्युक्ति अनुभविति

(२) अनुकूल नदे नियुक्त कोन व्युक्ति  
औहार जम्बके अस्तुवित व्यवसूत्रात्तेह विक्रमे  
कात्तने दर्शाईवाह सूक्तिसञ्चात मूल्यावदान ना करा  
नयकु औहारक वहानु वा अपमार्दित वा नदे-  
वनमित करा याईवे ना;

जेव शर्त भाटके ये, एहे दूसरा त्रै नदे नदेन  
फेये अन्योक्ते इहेवे ना, येखाने

(अ) कोन वाकि ये आहरनेह फहने  
फोक्तसही अलगावे नतित इहे-  
मात्रेन, त्रै आहरनेह जन्य औहारक  
वहानु, अपमार्दित वा नदेवनमित  
करा इहेयात्त; अथवा

(आ) कोन व्युक्तिके वहानु, अपमार्दित

या भद्रादनमिति कविवारः कृष्णामस्मृत्वा  
कर्तृपक्षेरुं विकटे सत्त्वासकृत्वक्षाते  
प्रज्ञेयमान् इम् ये, केवल कवयत्वे—  
माहा उक्त कर्तृपक्ष लिपिबद्ध कवितेन—  
उक्त व्यक्तिके कार्य दर्शाइवाऽ मूल्यान्  
मान कर्ता गुरुकृतिमान्तरावे सम्भव  
नहे; अथवा

(२) राष्ट्रपक्षित्र विकटे सत्त्वासकृत्वक्षाते  
प्रज्ञेयमान् इम् ये, राष्ट्रेरुं विहासतात्  
मूल्येऽ उक्त व्यक्तिके अनुकूल मूल्यान्  
मान अग्रीमीन नहे।

(३) अनुकूल वेगन व्यक्तिके एই अनुच्छेदे  
(२) दक्षाय विभिन्न कार्य दर्शाइवाऽ मूल्यान्मान  
कर्ता गुरुकृतिमान्तरावे सम्भव कि ना, एইकृत  
अश्च उक्तापिति इहैले मैरे समर्के जीहातक  
वत्प्रभास्तु, अपमानिति या भद्रादनमिति कविवार  
आमतामस्मृत्वा कर्तृपक्षेरुं सिद्धान्त हृषान्त हैवे।

(४) ये क्षेत्रे वेगन व्यक्ति कार्य लिपित्रि  
चुकित्र अर्थीन अज्ञातक्त्रेरुं कर्त्ता निष्ठुरुं इहैयात्तन  
एव उक्त चुकित्र अर्तीवलो अनुमानी यथायथ लाभि  
त्प्रेरुं स्वाक्षरा चुकित्रि अवजाव घटोन इहैयात्त,  
मैरे क्षेत्रे चुकित्रि अनुकूल अवजालेरुं जन्य  
किनि एहे अनुच्छेदेरुं उद्देश्यमार्दिनक्तेन लम  
हैत्ते अपमानिति इहैयात्त विभाग्य अम् हैवे ना।

१३६। आईनेरुं स्वाक्षरा अज्ञातक्त्रेरुं कर्त्तविभाग्य—  
समूहेर मृष्टि, झैयुक्तकर्त्ता ओ एकीकर्त्तविभाग्य धूम-  
गौडीनेरुं विधान कर्ता याईवे एव अनुकूल आईन  
अज्ञातक्त्रेरुं कर्त्ता निष्ठुरुं कोन व्यक्ति कर्त्तविभाग्य  
अर्तीवलोरुं कार्यमात्र कविते ओ ताह यदि कविते  
मार्दिवे।

कर्त्तविभाग्यमान्यतामें

### २५ भविष्यत्कृद— सत्त्वकान्ती कर्म कर्मिशन

१३७। आईनेरुं स्वाक्षरा वाह्याद्येवे जन्य एक  
या एकाधिक अर्तकाज्ञी कर्म कर्मिशन प्रतिष्ठात्र विधान  
कर्ता याईवे एव एककृम अज्ञापतिके ओ आईनेरुं  
स्वाक्षरा यकृम पर्याप्ति इहैवे, अहैत्त अन्यान्  
विद्यमयके नहीं आठेक कर्मिशन लाभित हैवे।

विधान-प्रसिद्ध

१७८। (१) प्रत्येक सरकारी कर्म कमिशनर अधिकारि अनन्या नये सदस्य इकूलिंग कर्त्तव्य इहेवन;

उद्दे शर्त याके (ये प्रत्येक कमिशनर एकूल सम्बन्ध आर्थिक (उद्दे अर्थेटकड़ कर्म नहीं) अधिक सदस्य एमन बुकिंग इहेवन, याहाड़ा बुकिंग सम्बन्ध ना उत्तोषिकरण वाहनादेशेर इकूलीय सीमानारूप अद्येय ये टकान अमर्ये कार्यकृत टकान अडकालेर कर्म टकान पद्द अधिकिंत छिवेन।

(२) अधमद कर्त्तव्य कर्मीत ये टकान आईन-मालेजे टकान सरकारी कर्म कमिशनर अधिकारि अन्या नये सदस्य कर्मीह शर्तबदी इकूलिंग आदेष्य सुहारा ट्रेनिंग विविध करिवन, अर्हेक्षण इहेवे।

१७९। (१) एहे अनुच्छेदेर विदानादवनी-मालेजे टकान सरकारी कर्म कमिशनर अधिकारि वा अन्य टकान सदस्य ऊहाड़ मासिकूलश्लेष जारिए इहेत नीच बदले वा ऊहाड़ वापरि बदले दस्त लून्ह इउमा— ईहाड़ सद्ये याहा अद्ये घट्टे, ऐहे काम पर्युक्त खोज लाद वहान आकिवेन।

(२) सुखीय टकार्टेर टकान विचारक ट्रेनिंग सदृकि वा कारब्ले अप्रावित इहेते आदेष्य, अर्हेक्षण सदृकि वा कारब्ले बुलीत टकान सरकारी कर्म कमिशनर अधिकारि वा अन्य टकान सदस्य अप्रावित इहेवन ना।

(३) टकान अरकारी कर्म कमिशनर अधिकारि वा अन्य टकान सदस्य इकूलिंग के लिए करिया सुखन्नामूलक प्रयोगाले खोज लाद ज्ञान अर्हित आकिवेन।

(४) कर्मीवज्ञानेर भर टकान सरकारी कर्म कमिशनर अधिकारि वा अन्य टकान सदस्य अवाकाशकर्त्तव्य कर्म लून्हदाय नियुक्त इहेवारू प्रोग्राम आकिवेन ना, उद्दे एहे अनुच्छेदेर

(५) सफा-मालेजे  
 (क) कर्द्दावज्ञानेर भर टकान प्रभाविति एक ट्रेनिंगादेत इन्ये सुनर्नियोगनालेर योग्य आकिवेन; एवं  
 (ख) कर्मीवज्ञानेर भर टकान सदस्य (अधिकारि वुलीत) एक ट्रेनिंगादेत इन्ये किंवा टकान सरकारी कर्म कमिशनर प्रभाविति क्षेत्रे नियोगनालेर योग्य आकिवेन।

१८०। (६) टकान सरकारी कर्म कमिशनर मासिकूलश्लेष विविध अधिकारि वा अन्य

इतिवेद

- (क) अक्षात्क्रुत कर्म विद्योगमदान इन्द्र  
उपसूक्त व्यक्तिप्रियके मानोन्मनेर  
जेन्द्रेश्च याचारे ओ लडीका भवित्वामवा;
  - (ख) एवं अनुच्छेदे (२) सूक्त-अनुभावी शुद्ध-  
प्रति कर्त्तक त्रोत विषय जन्मार्क  
कमिशनेर पदामर्श छात्राः इहिमे  
किंवा कमिशनेर सात्त्व-सौकान्त  
त्रोत विषय कमिशनेर विकारे उपर्यन्ते  
कर्त्ता इहेन्म सेहि सम्बन्धे राष्ट्रपतिके  
उपर्योगदानः एवः
  - (ग) आहेन्म द्वारा निर्धारित अन्यान्  
सामिक्षण्यानन्।
- (२) संप्रद कर्त्तक अभित्र त्रोत आहेन एवं  
त्रोत कमिशनेर इहित पदामर्शकिमे राष्ट्रपति  
कर्त्तक अभित्र त्रोत अविवादेव (याहा अनुमत  
आहेन्म इहित असराञ्यम नहे) विवादावली-  
आपेक्षे राष्ट्रपति विष्णुनिषिद्ध ग्रन्थमूळे त्रोत  
कमिशनेर इहित पदामर्श करिवेनः
- (क) अक्षात्क्रुत कर्मेत्र इन्द्र योग्याः ओ  
आहाते नियोगेत्र पद्धति जन्मकिंत  
विषयादिः;
  - (ख) अक्षात्क्रुत कर्म नियोगदान, उज्ज  
कर्मेत्र एक व्याप्ता इहेत्र अन्य व्याप्त  
पदावतिदान ओ वद्यिकर्त्तव्ये एवः  
अनुमत नियोगदान, पदावतिदान  
वा वद्यिकर्त्तव्ये इन्द्र आर्थित्र उप-  
योगिता-विर्द्ध जन्मार्क अनुमतीय  
वीतिसमूहः;
  - (ग) अवसर-कात्तर अविकारमह अक्षात्क्रुत  
कर्मेत्र अर्तवलोके अकादित करेत्र,  
परेकाप विषयादिः एवः
  - (घ) अक्षात्क्रुत कर्मेत्र शूष्मनामूलक  
विषयादिः।

१४१ (१) अत्येक कमिशन अति वैमत मार्च  
मासेत्र अथव दिवसे वा आहात शुर्व शुर्वकर्त्ते  
एकदिशे तिमेसुत्रे समाप्त एक वैमत मौम  
कार्यवली सम्बन्धे तिलादे असुत करिवेन एवः  
आहा राष्ट्रपतिः विकारे उपर्यन्ते करिवेन।

वार्षिक विलाप

(२) रिपोर्टेर महित एकटि शारकमिसि  
याकिवे, याहाते

- (क) कोन सेव्हे कमिशनेरु केवल परामर्श  
दृष्टीत वा हिम्मा आकिये देसहे  
जेवज एवं परामर्श दृष्टीत वा  
हिम्मारु कारने, एवं  
(ख) ये अकन्त सेव्हे कमिशनेरु महित  
परामर्श करा उचित छिल जाखाच  
परामर्श करा हय नाई, मेही सकन  
जेवज एवं परामर्श ना करिवार  
कारने

सञ्चालन यजद्वर अवधत, जजद्वर मिसिवङ्ग  
करिवेन।

(३) ये बडमर रिपोर्ट लेख करा हिम्मालै,  
मेही बडमर एकत्रिष्ठ मार्चेरु पर अनुष्ठित मंस्तके  
प्रथम बैठेके राष्ट्रपति उक्त रिपोर्ट ओ शारक-  
मिसि महाप्रदे उपस्थापनेर व्यवस्था करिवेन।



दृश्यम् भाग

जन्मविद्यान्-संतोषाध्यन

१४२। एहे ज्ञानविद्यान् जाहा वया? इहेचारु, आहा  
अट्टेता

ज्ञानविद्यान् विद्याव  
ज्ञानविद्या वा  
ज्ञानविद्याविद्या

- (क) संसदेत्र आहिने चाचा एहे ज्ञानविद्यान्  
त्कान विद्यान् ज्ञानविद्याविद्या वा इहित  
इहेते लाभितें;  
जहाव शर्त घारके ये,
- (ख) अनुकूल संस्थापनी वा इहितकडसेत्र  
ज्ञाने आवेत्ता त्कान विद्याव समूर्ख  
शिक्षानामाया एहे ज्ञानविद्यान् त्कान  
विद्यान् संस्थापनी वा इहित ज्ञान  
इहेतव विनिया ज्ञानकूलपे उत्तेजन  
ना आकिन्दे विनियि विवेचनारु कृत्य  
धीरने करा प्याहेते ना;
- (ग) संसदेत्र रोडे जन्मस्य-संभाग  
जन्मान् दुहे-इच्छावाद्या भाटे शृणीत  
ना इहेने अनुकूल त्कान विद्या  
ज्ञानविद्यान् ज्ञाने जाहा वाणुपतित  
विकटे उपस्थूपित इहेवे ना;
- (घ) उपत्रि-उकु उपस्थूप त्कान विद्या शृणीत  
इहेवारु पडे सम्भातित ज्ञाने वाणुपतित  
विकटे जाहा उपस्थूपित इहेने उपस्थू-  
प त्कान जाहा दिवेत्र मरवेत्र तिनि विनि-  
यिते सम्भातिदान करिवेन, अनवह  
तिनि जाहा करिते असमर्थ इहेने  
जिकु टमाशादेत्र अवज्ञाने तिनि विनि-  
यिते सम्भातिदान अविसाचूम विनिया  
जर्वे इहेवे।

एकादश भाग

ବିଭିନ୍ନ

१४० (२) आईनमध्यात्मक अज्ञातद्वय उपर्युक्त अकात्मक सम्बन्धित न्युन ये कोन सुमि वा जगति व्युत्ति निष्प्रियित अज्ञातिसमूह अज्ञातद्वय उपर्युक्त न्युन हैं वे :

- (क) बाह्यादेशेर द्य कोव चुमित अनुःम्  
अकूल अनिकू ओ अन्यान्य मूल्यमस्त्र  
मामद्वी।

(ख) बाह्यादेशेर द्याक्षीय कृतप्रीमात्र अनु  
र्धी प्रश्नामत्तेर अनुःम् किंवा  
बाह्यादेशेर महोत्मालालत उपरिम्  
महामामत्तेर अनुःम् जकन चुमि  
अनिकू ओ अन्यान्य मूल्यमस्त्र  
मामद्वी; वैवह

(ग) बाह्यादेशे अवधित अकूल मानिकू  
दिक्षित द्य कोव प्रभाति।

(२) मैसम्म समये समये काइनेह चुहा  
बालाद्वित्र जाकुप्रीय श्रीमानारु पवह बालाद्वित्र  
जाकुप्रीय झन्डीमा ३ महोमापाटनकु श्रीमा-निर्भा-  
उल्लव विकास करित खाडिद्वन ।

१४८। अज्ञातकुरु निर्वाहो कर्त्तव्ये अस्ति  
प्रहन, विक्रम, इमुतुर, बक्कमान ओ विमि-बुवमा,  
टो टोन कारवार वा बुवमाय-आवना परह टो  
कोन उक्ति अवधन करा माईदे।

અધ્યાત્મ  
સાહિત્ય

३४६। (२) अकाउटेंट के विवाही कर्त्तव्य अनीति मुक्ति ३ समिक्षा प्रकल्प दूसिंह ओ मध्यिम डाक्टर शिवाजी कर्त्तव्य का अनीति विवाही अकाउट करना इहेट एवं डाक्टर शिवाजी ग्रेजुएशन विदेशी वा भारतीय कालानाम करिवेन, और हाथ पकड़े ग्रेजुएशन बुक्स कर्त्तव्य के अग्रेजुएशन विवाही करना असमानित होते हैं ।

(२) अकात्क्रुत निराही कृति केन इक्षि  
या दन्विल्ल प्रभूम् या प्रमाणन करा हैले उक्त  
कृत्त्वे अदूक्ष्म इक्षि या दन्विल्ल प्रभूम् या  
प्रमाणन करिबाट ज्ञना इच्छेपति किंवा अबा  
टकेन युक्ति बुक्तिभजाते दायी हैवेन ना, उद्दे

एहे अनुच्छेद सरकारेन विकल्प यांचामध्ये कार्य  
आज्ञा आवश्यक रकान बुकिन अधिकार मूळ  
करिवे ना ।

१४७। "बाह्यादेश"— एहे नामे बाह्यादेश  
सरकार नव्हूक वा बाह्यादेश सरकारेन विकल्प  
यांमध्ये "माझेत" करा याहेत आविष्ट ।

बाह्यादेश नाम  
आविष्ट

१४८। (१) एहे अनुच्छेद अंत्याक्ष्य हया, एहेकुप  
टोकान पद्द अधिकृत वा कर्मरूप बुकिन आर्थिकीक,  
विशेष-अधिकार ओ कर्मरूप अव्याकृ शर्त सहस्रमत्त  
आहेतेह द्वारा वा अधीन विशेषित हईवे, तर्वे  
अनुकूलजाते निश्चित ना इत्यां लर्यु

विशेष आर्थिकीक  
निश्चित लक्षि

(क) एहे संविधान-प्रकर्तनर अव्यावहित  
पूर्वे क्रयमत सहशिष्टे पद्द अधिकृत  
वा कर्मरूप बुकिन टोकान आहा येण्या  
अंत्याक्ष्य हिन, सेईकाप हईवे; अथवा

(ख) अव्यावहित पूर्ववर्ती डेप-दफ्ता अंत्याक्ष्य  
ना हईले द्वाक्षेपति आदेशे द्वारा  
येण्या निर्देश करिवेद, सेईकाप हईवे ।

(२) एहे अनुच्छेद अंत्याक्ष्य हय, एहेकुप गोन  
पद्द अधिकृत वा कर्मरूप बुकिन कार्यालयकाले  
तांशातु आर्थिकीक, विशेष-अधिकार ओ कर्मरूप  
अव्याकृ शर्तेर एमन जानकारी करा याहेत ना,  
याहा तांशातु पक्षे अनुविश्वाज्यक हईते यात्रा ।

(३) एहे अनुच्छेद अंत्याक्ष्य हय, एहेकुप  
कोन पद्द निमुक्त वा कर्मरूप बुकिन कोन नाउ.  
कृतक पद्द किंवा वेतनादिग्रुङ पद्द वा मर्यादाया  
वहाल इवेतेन ना किंवा मूलाकालातेह ऊदेश्य-  
युक्त टोकान टोकानानी, अमिति वा प्रतिकानव  
बुवास्यापवाया वा परिचालनाया टोकानकुप अंश  
प्रवर्ते करिवेत ना;

तर्वे शर्त याके तो, एहे मर्यादा ऊदेश्यमाधिन,  
कठेद ऊपरवर्त अभ्यासितिक पद्द अधिकृत वा  
कर्मरूप बुकिन आहेत, तर्वा एहे काऱ्ये टोकान बुकिन  
अनुकूल नाभज्यक पद्द वा वेतनादिग्रुङ पद्द वा  
मर्यादाया अधिकृत बनिया पर्यु इवेतेन ना ।

(४) एहे अनुच्छेद निमुक्तिक पद्दमूळे  
अंत्याक्ष्य इवेते :

(क) द्वाक्षेपति,

- (अ) श्रीरामसन्तोषी,  
 (ब) अमीरकारा वा केषुषि अमीकारा,  
 (ग) अनुषी, अचि-मन्त्री वा उपमन्त्री,  
 (घ) मूलीम ट्वार्टेन विचारक,  
 (ज) अहा हिमाव-निर्मीकरक ओ नियन्त्रक,  
 (क) निर्वाचन कमिशनारा,  
 (ल) संस्कारी कर्म कमिशनर नमदय।

१४८। (१) इत्तीमु जफ्फमिन्द ऐम्बिथित ये कोन परद विर्वाचित वा नियुक्त व्यक्ति कार्यभारप्राहलेन्द  
पूर्वे उन्हें उफ्फमिन्द-अनुशासी अपभ्राहने वा द्वावानी  
(ऐसे अनुच्छेद "अपभ्राह" उलिया अडिहित) करिवेन  
एवं अनुकूप अपभ्राहले वा द्वावानीलये मुक्तवदान  
करिवेन।

(२) ऐसे महविवानेन अधीन विदिष्ठे कोन  
व्यक्तिन् निकटे अपभ्राहने आवश्यक इहेन्वे एवं  
त्वान कारणे उसें व्यक्तिन् निकटे अपभ्राहने प्रसुव  
ना इहेन्वे अनुकूप व्यक्ति ट्वाकूप व्यक्ति ओ मुन  
निर्धारन करिवेन, ट्वेकूप व्यक्तिन् निकटे ट्वेकूप  
स्थाने अपभ्राह एवं कर्ता प्रहिते।

(३) ऐसे महविवानेन अधीन ये क्षेत्रे कोन  
व्यक्तिन् परके कार्यजारप्राहलेन्द पूर्वे अपभ्राहने  
आवश्यक, जेहे उपकूप आहेन ऐसे महविवानेन  
अधीन अनीत आहेनेन घारा महेशाधित वा  
उहित इहेते साहिवे।

१४९। ऐसे महविवानेन विवानावली-झालेजे  
मकान अफलित आहेनेन कार्यकर्ता अव्याहित  
आकिवे, उव्वे अनुकूप आहेन ऐसे महविवानेन  
अधीन अनीत आहेनेन घारा महेशाधित वा  
उहित इहेते साहिवे।

अपवित्र आहेनेन  
इहेतुक

१५०। ऐसे महविवानेन असु त्वान विवान  
महेत उपकूप उफ्फमिन्द जर्वित आकुकानीन  
ओ असुसासी विवानावली कार्यकर्ता इहेवे।

कार्यकर्ता ओ  
असुसी विवानावली

१५१। झालेपतित विवानितिते आदेशवस्तुह  
अत्याकारा उहित कर्ता इहेवे:

उहितकर्ता

(क) आहेनेन भाग्यावाहिका करवृक्तने  
आदेश (१९७१ मात्रेन २०हे प्रथिय

आदित्य अभीतः);

- (अ) १९७२ मालवे वाहनादेश अमूर्खो  
संविधान आदेश;
- (ब) १९७२ जानवर वाहनादेश हाइकोर्ट  
आदेश (१९७२ जानवर नि. ३. नं. २);
- (ग) १९७२ जानवर वाहनादेश महा हिमाच-  
लिंगांक ओ नियमक आदेश (१९७२  
जानवर नि. ३. नं. २५);
- (४) १९७२ जानवर वाहनादेश गोपनियाद्  
आदेश (१९७२ जानवर नि. ३. २५);
- (५) १९७२ जानवर वाहनादेश विराजन  
कमिशन आदेश (१९७२ जानवर  
नि. ३. नं. २५);
- (६) १९७२ जानवर वाहनादेश अरकारी  
कर्म कमिशन समूह आदेश (१९७२  
जानवर नि. ३. नं. ३४);
- (७) १९७२ जानवर वाहनादेश (अरकारी  
कर्म समाधन) आदेश (१९७२  
जानवर नि. ३. नं. ३८);

१०२। (१) विषय वा प्रमाणेन अम्भाकृत अनुकूल ग्राम्य  
ना होने वही संविधान-

“अविवेशन” (मानव-प्रमाण) अर्थ वही  
संविधान-प्रबल्लिने पर किंवा एकवार  
सूचित होनावार वा उचित्या याहोनाव  
पर मानव मध्ये अथवा विवित हृषि,  
तथा होते मानव जूमित होया  
वा उचित्या याहोनाव वैष्टक-  
समूह;

“अनुकूल” अर्थ वही संविधान जोन  
अनुकूल;

“अवमत्ता-जाता” अर्थ आशिकतावे आदेश  
होने वा ना होने, तर जोन अवमत्ता-जाता,  
याहा जोन व्यक्तिके वा  
व्यक्तिने होने देस; अवह जोन अविवेशन-  
उचित्ये होना वा होना सूचित मान-  
वीकृत अतिरिक्त अर्थ अवमत्ता-जाता  
देस अवमत्ता-कानीन देतन वा अनु-  
जातिक देहाव अनुकूल होना;  
“अर्थ-वैपर्य” अर्थ जूनारे मानव अथवा

द्वितीय वर्षान्ते आहेत;  
 “आहेत” अर्थ कोन आहेत, आव्याहार, आदृश,  
 विधि, अविधान, लेप-आहेत, विकल्प  
 के अव्याहार आहेतमुळे मनिन असह  
 वाह्याद्वये आहेतनेहा व्यापकाममत्र  
 तर कोन प्रथा वा जीवि;  
 “आपोन विचार” अर्थ मूष्टीम जागेह आपोन  
 विचार;  
 “तेप-मक्षा” अर्थ त्या मुक्तास शब्दिं व्यवहृत,  
 तेह मक्षात्र एकदि तेप-मक्षा;  
 “ग्रन्थांतरे” विचित्र वादविक्रिक किमिते भर्ति  
 शोध्याम्य आप्यांतरे अनुचूर्ण इतेव;  
 अवर “क्षने” विचित्र उद्युक्तम अर्थ  
 दुकोहेव;  
 “कर्त्तावाप” विचित्र साधारणे, मूलनीय वा विलम्ब-  
 त्या कोन कर्त्ता, आकृता, शक्त वा  
 विशेष कर्त्तव्य आवाप अनुचूर्ण  
 इतेव; अवर “कर्ता” विचित्र उद्युक्त-  
 कृप अर्थ दुकोहेव;  
 “भास्त्रान्ति” विचित्र त्वयं उद्योगेह मूलाणा  
 निर्धारित भर्तिमाणेह अपेक्षा कम  
 इतेन आहार जन्य अर्थ अदान  
 कर्तिवार वार्यवाचिकाळा—याश एहे  
 मूर्द्विवेद-प्रवर्तनेहा घटर्व शृणीव  
 इतेहाच्छ—अनुचूर्ण इतेव;  
 “कृमा-विचारक” विचित्र अविचित्र कृमा-विचारक  
 अनुचूर्ण इतेवेन;  
 “उक्फमिन” अर्थ एहे मूर्द्विवेद त्वयं उक्फमिन;  
 “मक्षा” अर्थ त्या अनुचूर्ण शब्दिं व्यवहृत, तेह  
 अनुचूर्णेह एकदि “मक्षा”;  
 “दूना” विचित्र वादविक्रिक किंदिं शिखावे  
 मूलविवेद भर्तिशोधेह जन्य त्या कोन  
 वार्यवाचिकाळांवित्ति मास अवर त्या कोन  
 भास्त्रान्तिमूक मास अनुचूर्ण इतेव;  
 अवर “दूनातु मासा” विचित्र उद्युक्तम  
 अर्थ दुकोहेव;  
 “मासविक्रिक” अर्थ नामविक्रिक-प्रमूकित आहेतानु-  
 पासी त्या वाक्य वादवाद्वये नामविक्रिक;  
 “काळवित्र आहेत” अर्थ एहे मूर्द्विवेद-प्रवर्तनेहु  
 अवर्यविक्रिक घटर्व वादवाद्वये ताहौस्य

मीमानासः वा ज्ञेयः अन्तिमे  
आहेन्द्र शमतामभूति किं वर्णकला  
संक्षिप्त भाषुक वा ना भाषुक, अमन  
ये कोन आहेत;

“अज्ञातकृ” अर्थं अनेकज्ञातकृ वाच्मादेशः;  
“अज्ञातकृत कर्म” अर्थं अज्ञातकृत वा अविदिक  
शमतामः वाच्मादेशं अनुकृति अनुकृतु  
ये तेजन कर्म, अनुकृती वा पद् एवह  
आहेन्द्र द्वारा अज्ञातकृत कर्म रविधा  
त्र्यावित इहेते पाठ्य, एवेत्यप अनु कोन  
कर्मः;

“अवीन निर्विन रविधात्रु” अर्थं एहे माविधात्रु  
२१८ अनुकृदेत अवीन उक्त पदे निष्ठु  
कोन व्यक्तिः;

“अवीन विचारपति” अर्थं वाच्मादेशत अवीन  
विचारपति;

“प्रशासनिक एकत्रात्म” अर्थं हेत्वा किंवा एहे  
ज्ञ विवाहेत ५७ अनुकृदेत जेष्युसाविन-  
काले आहेन्द्र द्वारा अविहित अनु  
टका देवाका;

“विचारक” अर्थं सुधीम त्र्यात्रे तेजन  
विचारेत तेजन विचारकः;

“विचार-कर्मविजाग्य” अर्थं हेत्वा-विचारक पदेत  
अनुकृते कोन विचारविजामोम् शरद  
अधिष्ठित व्यक्तिदेत नरेसा अठित  
कर्मविजाग्यः;

“ट्रेटक” (अनुद-प्रमाणे) अर्थं सूचको ना  
कविधा अनुम यत्कर्त्तव्यावाहिक-  
तात्व ट्रेटकवत् याकेन, एवेत्यप  
देवमादः;

“ज्ञान” अर्थं एहे माविधानेत तेजन ज्ञानः;

“दाक्षयानी” अर्थं एहे माविधानेत ६ अनुकृदे  
दाक्षयानी विविते ये अर्थं कर्ता  
इहेसात्तेः;

“दाक्षनेतिन स्त्री” विविते अमन एकादि  
उपविष्ट वा व्यक्तिसमर्थे अनुकृतं,  
ये उपविष्ट वा व्यक्तिसमर्थे प्रसदेत  
अनुकृतुते वा वाहिते याज्ञायामृक  
तेजन नामे कार्य कर्त्रन एवह तेजन  
दाक्षयानीक मत अचारेत वा तेजन

राज्यैनतिक अधिकार विभाग वाले  
उम्मेदवाले अन्यान्या अधिकारी होते हैं  
पृथक् तकान अधिकारी हिसाबे विक-  
ासके अकाल करने;

“जातु” बनिते संसद, मंत्रकारी उपरिवर्ष  
मंत्रकारी कर्तृपाल अनुरूप;

“जातुपति” अर्थ ऐसे प्रविधानदं अधीन  
विवाचित वाहनाद्यत्र जातुपति किया  
सामग्रीकरणे उक्त नाम करिते तोन  
बाति;

“शूभ्रला-वाहिनी” अर्थ

(क) मूल, जो वा विभाव-वाहिनी;

(ख) शूनिश-वाहिनी;

(ग) आईनेर शासा ऐसे मंत्रालय के तोन  
अनुरूप बनियां शाखिक ये तोन  
शूभ्रला-वाहिनी;

“शूभ्रलामूलक आईन” अर्थ शूभ्रला-वाहिनी  
शूभ्रलानियन्त्रनकारी तोन आहिन;

“प्रविधिवर्ष मंत्रकारी कर्तृपाल” अर्थ ये तोन  
कर्तृपाल, अमूला वा शुक्रियां, आहार  
कार्यविनी वा अवाद अवास कार्य  
तोन आईन, अधिकारी, वायन वा  
वाहनाद्यत्र आईनेर कर्तृपाल इति-  
पत्र-शासा अधिक इस;

“संसद” अर्थ ऐसे प्रविधानदं ५२ अनुरूप-  
शासा अधिकारी वाहनाद्यत्र संसद;

“समधि” बनिते मंत्रम शूभ्रद ए अमूलद,  
वमुलत उ निर्विमुलत अकल्य अकाल  
समधि, वानिकाक उ निमुलत अमूल  
एवह अनुरूप समधि वा उपायाद  
समधि संक्षिप्ते ये तोन सूत्र वा अर्थ  
अनुरूप इत्येव;

“मंत्रकारी कर्तृपाल” अर्थ अकालकुर कर्मे  
वतनाद्यत्र भास अधिकारी वा कर्तृत  
तोन बाति;

“मंत्रकारी विकास” अर्थ वाहनाद्यत्र विकासे  
शकालिक तोन विकास;

“विकाडिति” बनिते मंत्रक अनुरूप इत्येव;

“मूष्टीप टकाई” अर्थ ऐसे प्रविधानदं ५४  
अनुरूप-शासा गठित वाहनाद्यत्र मूष्टीप टकाई;

"स्त्रीकाङ्ग" अर्थं वहे महिलानेहूँ १४ अनुच्छेद  
 अनुग्राहक आमभिक्षुजात्वे ज्ञानीकाङ्गहूँ  
 परद अधिक्षित चर्चित ;  
 "हाइकोट विडाम" अर्थं सूलीम ट्रॉपेट्र हाइकोटे  
 विडाम ।

- (३) १८७९ जानवर कृत्तिवास अनुच्छेद  
 (क) महिलाद्वय कोन आईनेहूँ फैले यजूप  
 शायाका, वहे महिलानेहूँ फैले यजूप  
 शायाका हडीवे ;  
 (ख) महिलाद्वय कोन आईनेहूँ घाजा त्रिति  
 कोन आईनेहूँ फैले यजूप शायाका,  
 वहे महिलानेहूँ घाजा त्रिति कित्ता  
 वहे महिलानेहूँ कारने बातिच वा  
 कार्मकरतानुषु एकम आईनेहूँ फैले  
 यजूप शायाका हडीवे ।

१५७। (१) वहे महिलानेहूँ "पञ्चकृत्तु वाह्या  
 देशेर" महिलाम "वनिमा ऊँचाप" करा हडीवे  
 अबह १७७२ सालेहूँ तिसेवूहूँ माझेहूँ १६ तात्रिप्प  
 इहा वनवर हडीवे, पाहाके वहे महिलाम "महिलाम  
 प्रदर्शन" वनिमा अधिक्षित करा हडीशाढ़ ।

उपर्युक्त, अंग्रेज ओ  
मिस्ट्रियल्या पाठ

(२) वाह्याभा वहे महिलानेहूँ एकदि निर्भयोग्य  
 पाठे ओ इहाजीते अनुदित एकदि निर्भयोग्य अनु-  
 द्योग्यि पाठे थाकिवे अबह ऊँचम नाठे निर्भयोग्य  
 वनिमा पनभिक्षुजात्वे ज्ञानीकाङ्ग मार्टिफिकेटे अदान  
 करिवेन ।

(३) वहे अनुच्छेद (२) मृक्षा-अनुशाशी मार्टि-  
 फिकेटे मूँझ एकम नाठे वहे महिलानेहूँ विभानावलीहूँ  
 हृषाकु अमान वनिमा भन्ने हडीवे ;

तर्वे शर्त थाके त्प, वाह्या ओ इहाजी पाठेहूँ  
 अवो विलापेहूँ फैले वाह्या नाई प्राप्तिम् नाईवे ।



## प्रथम उपसिल

[ ४७ अनुच्छेद ]

### अन्यान्य विधान संस्कार कार्यक्रम आहेन

१९७० जानेवरी मुर्बीला झूमिदारी संघर्ष ओऱजा-  
स्तु आहेन (१९७१ जानेवरी आहेन नं. २८)।

१९७२ जानेवरी वाहनादेश ( लिंग ओ वानिज्य  
प्रतिकान्मयावृहेता नियमकून ओ व्यवस्थापनारा दाखिल-  
आहेन ) आदेश (अमूर्मो झाक्टेपत्रित १९७२ जानेवरी  
आदेश नं. १)।

१९७२ जानेवरी वाहनादेश यापमाळकाठी (विलय  
प्रैटेस्याव) आदेश (१९७२ जानेवरी पि. ओ. नं. ८)।

१९७२ जानेवरी वाहनादेश मरकाह (कर्विडाम-  
समूह) आदेश (१९७२ जानेवरी पि. ओ. नं. ९)।

१९७२ जानेवरी वाहनादेश शिल्प कलात्मकान  
आदेश (१९७२ जानेवरी पि. ओ. नं. १०)।

१९७२ जानेवरी वाहनादेश ( उद्घाक्त समति  
पूनरुक्तारा ) आदेश (१९७२ जानेवरी पि. ओ. नं. ११)।

१९७२ जानेवरी वाहनादेश मरकाही कर्मचाऱ्यी  
(अवजराहेण) आदेश (१९७२ जानेवरी पि. ओ. नं. १२)।

१९७२ जानेवरी वाहनादेश लिंग्युक्रम अधिकृति  
(नियमकून, व्यवस्थापना ओ विलिंग्यासा ) आदेश  
(१९७२ जानेवरी पि. ओ. नं. १३)।

१९७२ जानेवरी वाहनादेश व्यापक (राष्ट्रीयकरण)  
आदेश (१९७२ जानेवरी पि. ओ. नं. २५)।

१९७२ जानेवरी वाहनादेश शिल्पाद्यागा (राष्ट्री-  
यकरण) आदेश (१९७२ जानेवरी पि. ओ. नं. २७)।

१९७२ जानेवरी वाहनादेश अन्यकरीने जूलयान

कल्पीत्रेण आदेश (१९७२ जानेव्रि पि. ३. नं. २८)।

१९७२ जानेव्रि बाह्यादेश (समक्ति ओ परिसर्वाद्य न्यासुकरने) आदेश (१९७२ जानेव्रि पि. ३. नं. २९)।

१९७२ जानेव्रि बाह्यादेश नीमा (क्रमती विश्वास-वली) आदेश (१९७२ जानेव्रि पि. ३. नं. ३०)।

१९७२ जानेव्रि बाह्यादेश नित्यव्यवहार्य त्रिव्य सरबराह आदेश (१९७२ जानेव्रि पि. ३. नं. ३१)।

१९७२ जानेव्रि बाह्यादेश उक्षितिकूक्त अपराध (विशेष ट्रोइट्युनाल) आदेश (१९७२ जानेव्रि पि. ३. नं. ३२)।

१९७२ जानेव्रि त्राणीमुक्त ओ देवसत्रकारी संपर्क-समूह (कर्मचारीसंघ वेतन-नियन्त्रण) आदेश (१९७२ जानेव्रि पि. ३. नं. ३४)।

१९७२ जानेव्रि बाह्यादेश पाटे इन्हानी संस्था आदेश (१९७२ जानेव्रि पि. ३. नं. ३५)।

१९७२ जानेव्रि बाह्यादेश पानि ओ क्लियू उद्दयन सर्वेदिसमूह आदेश (१९७२ जानेव्रि पि. ३. नं. ३६)।

१९७२ जानेव्रि बाह्यादेश सरकार (प्रार्जिसेक्य स्क्रीनिं) आदेश (१९७२ जानेव्रि पि. ३. नं. ३७)।

१९७२ जानेव्रि बाह्यादेश सरकार 'हाट' ओ नाच्छत्र (वारप्रूपन) आदेश (१९७२ जानेव्रि पि. ३. नं. ३८)।

१९७२ जानेव्रि बाह्यादेश सरकार ओ आधिक आमंत्रणामिति अतिक्षामसमूह (कर्मचारीसंघ वेतन-नियन्त्रण) आदेश (१९७२ जानेव्रि पि. ३. नं. ३९)।

१९७२ जानेव्रि बाह्यादेश नीमा (त्राणीमुक्तकरने) आदेश (१९७२ जानेव्रि पि. ३. नं. ४०)।

१९७२ जानेव्रि बाह्यादेश कुमि छिनात (सीमा-वक्तुकहने) आदेश (१९७२ जानेव्रि पि. ३. नं. ४१)।

१९७२ जानेवर बांग्लादेश विसान आदेश  
(१९७२ जानेवर पि. ओ. नं. २२६)।

१९७२ जानेवर बांग्लादेश ब्रुक्स आदेश  
(१९७२ जानेवर पि. ओ. नं. २२७)।

१९७२ जानेवर बांग्लादेश शिळ्प और संस्कृता  
आदेश (१९७२ जानेवर पि. ओ. नं. २२८)।

१९७२ जानेवर बांग्लादेश शिळ्प ब्राह्मण आदेश  
(१९७२ जानेवर पि. ओ. नं. २२९)।

एवह ब्राह्मणपत्रिका आदेशमह प्रचलित आইनের  
দ্বারা কৃত উপরি-কেন্দ্র আইন' ও আদেশসমূহের  
অকল' প্রতিশোধনী' ।



## द्वितीय उपसिल

[ ४८ अनुच्छेद ]

### जाटुपति-निर्बाचन

१। प्रथान निर्बाचन कमिशनारू (ऐ उपसिल “कमिशनारू” बनिया अधिहित) जाटुपति-पदेर द्ये कोन निर्बाचन अनुसूलान ओ परिचायना करिवेन अवै अनुभूप निर्बाचने निर्बाचनी कर्ता हीवेन।

२। ऐ उपसिल-अनुसारे अनुष्ठित संसद-सदस्यदेर ईवांके जडापति-करिवाव जन्य कमिशनारू एकजून जोटेकेस्त-कर्ता नियुक्त करिवेन।

३। कमिशनारू सहकारी विष्पुर मार्ग्यमे मनोनग्ननपत्र मार्ग्यिन, परीक्षा, प्रश्नाहार अवै (अयोजन हीले) भाटेप्रहनेर समय ओ मून निर्बाचन करिवेन।

४। मनोनग्ननपत्र मार्ग्यवाव जन्य निर्धारित दिने द्वितीयते पूर्वे द्ये कोन समये कोन संसद-सदस्य जाटुपति-पदेर निर्बाचित हीवाव योग्यानुसूल कोन व्यक्तिके ए नामेर जन्य मनोनीत करिया निर्बाचनी कर्ताव निकाटे एकटि मनोनग्ननपत्र अदान करिते आविवेन, द्ये मनोनग्ननपत्र प्रमुखक हिमाव ऊहार खाकड़ आकिवे अवै प्रमर्शक हिमाव अनु एकजून संसद-सदस्याव मुाकड़ आकिवे; मैरे मध्ये पिनि जाटुपति-पदेर जन्य मनोनीत हीले माहितेचून, ऊहारात उक्त मनोनग्ननपत्र मुाकड़क हुक्किति विहृति आकिवे;

उवे शर्त आके द्ये, अमुदावक हिमावे वा संसद्यक हिमावे कोन व्यक्ति कोन एक निर्बाचन एकटि-अधिक मनोनग्ननपत्र मुाकड़ करिवेन ना।

५। कमिशनारू ऊहार मुाकड़ निर्धारित असम ओ मूने मनोनग्ननपत्र परीक्षा करिवेन, अवै परीक्षा पर आद एकजूनेर मनोनग्नन ईवाव आकिवे उक्त व्यक्तिके निर्बाचित बनिया योग्यवा करिवेन, उवे एकाधिक व्यक्ति-पदेर मनोनग्नन ईवा-

ग्राकिने सरकारी विष्णुपुर मार्गेतम् बैवज्ञावे  
महानोड़ व्यक्ति (परे उक्सिल “प्राची” नाम  
अंजिहित)-देव नाम द्वाशना करिवन ।

४। आधिर्भद्र अज्ञाहारव इव निर्वाचित दिन  
द्विष्टाहत्तर शूर्व त्य एकान् समये कान आची भोटे-  
केन्द्र-कर्त्ता विकटे श्वासनमुक्त लाटिश साखिम विभा  
निकृह आधिर्भद्र अज्ञाहार विकृत लाविवन, एवं  
कान प्राची असुखपञ्चावे श्वोऽय आधिर्भद्र अज्ञाहार  
करिले ऊहाके ऐ लाटिश आविकृत विभा  
इहेवे ना ।

५। यदि एकवन व्यजीत सक्त आची आधि-  
भद्र अज्ञाहार विभा आकेन, जाह इहेल विभानाव  
एसे एकवनके निर्वाचित व्यापना करिवन ।

६। यदि एकान आची आधिर्भद्र अज्ञाहार  
ना करिभा आकेन किहवा अज्ञाहारव नर मूहे  
वा उठाविक आची आकिभा आन, जाह इहेल  
सरकारी विष्णुपुर मार्गेतम् विभानाव अनुकूल  
आचीटदत एवं ऊहाटदत असुनवक ओ समर्थकदत  
नाम द्वाशना करिवन, एवं सरवर्जी अनुष्ठानसूत्रे  
विभानावली-अनुमामी लालन लालेत मार्गेतम् निर्वाचन  
अनुकूलनव व्यवस्था करिवन ।

७। निर्वाचन-मध्यान्ति शूर्व यदि बैवज्ञावे  
महानोड़ एकान आचीर शूक्र इय एवं भोटेकेन्द्र-  
कर्त्ता ऊहार मूक्तद विभाटे आसु इन, जाह  
इहेले भोटेकेन्द्र-कर्त्ता ऊकु आचीर मूक्त महाक  
निर्विक इहेवाव नर भोटेष्ट्रे वातिन करिवन ओ  
विभानावके ऐ सम्भाकु जानाहेवन एवं ऊकु  
निर्वाचन समर्थित कामिवाहा मूक्तन करिभा आरम्भ  
इहेवे ।

८। संसद-महामाटदत बैवेक भोटेष्ट्रे अनु-  
र्धित इहेवे एवं विभानाव अनुमानक्षम भोटे-  
केन्द्र-कर्त्ता कर्त्तक नियुक्त कमात्तीटदत महायकाम  
भोटेकेन्द्र-कर्त्ता भोटेष्ट्रे विभावना करिवन ।

९। संसददत बैवेक भोटेष्ट्रे कृन्तु उपर्युक्त

प्रत्येक मृग-मद्दज (एই ज़फरिन "जाटेमाता" नाम से अभिहित)-के आश्रींदह नाम-अहंवनित एकटि करिया जाएमज्ज अमान करा इहेठ एवं तिनि द्या आश्रींके जाटेमान करिते ईदूक, औराज नामवर पार्वती देवा-चिक्क दिया बुक्किमतजाते जाटेमान करिबेन।

१२। जाटेमज्ज वातिल इहेवे, मनि-

- (क) उंहाते नड़कारी सैध्या गुजीत अमन कोन नाम; अद् वा चिक्खाक, माह-मूरा जाटेमाताके सवाक्ष करा भास; अथवा
- (ख) उंहाते जाटेकन्नु-कर्जीन नामवर मूर्ख ना भाके; अथवा
- (ग) उंहाते देवा-चिक्क ना भाके; अथवा
- (घ) मूर्ख वा उत्तोषिक आश्रींन नामवर पार्वती देवा-चिक्क भाके; अथवा
- (ঙ) हकान आश्रींन नामवर पार्वती देवा-चिक्क देउया इहेमाछे, तस अम्भर्के कोन अनिश्चयुक्त भाके।

१३। जाटेप्रहन समाप्तिर पत्र अल्पक जाटेकन्नु-कर्जी आश्रींदह वा उंहातेन अमूर्मोदित अतिनिधि-देव भैरव इहेठे मौहारा उपमित थाकिते ईदूक, औंहातेन सम्मुख जाटेव वाङ्माणि धूमितन ओमानि करिया फलितेन, एवं एই सैदिवानि १४ अद्भुत्तेदह अवीन आइतेव मूरा दिर्दीपित असामीक ईवर्क जाटेमज्जमूरु अल्पक आश्रींन भलके जाटेव अहभ्या भभेना लितेन एवं अद्युक्तमातार आमुत जाटेमान सैध्या नविशनावके जापन करिबेन।

१४। मनि भात मूर्खेन आश्रीं भाकन, ताश इहेले मे थाथीं अविक-अहभ्यक जाटे नाड़ करियाछेन, तिनि निराचित इहेमाछे बलिया कमिशनात जोअनो करिबेन।

१५। मनि तिन वा उत्तोषिक-अहभ्यक आश्रीं भाकेन, ताश इहेले एकज्ञन आश्रीं अवभिष्ठे आपरिपर्म कर्त्तक आमुर सर्वमाते जाटे-महभ्या अपेक्षा अविक जाटे पाइया भाकिते तिनि

निर्वाचित इस्तेमालेन बनिया कमिशनाऱ्ह द्योषना करिवेन।

१६। मदि तिन वा उत्तोतिक-संभवक आधी आकेन एवं अव्यवहित पूर्ववर्ती अनुच्छेदमि प्रट्टमाङ्ग ना इम, आहा इहेले एहे उक्फिले बनित पूर्ववर्ती विवानावली-अनुयायी दूनदाय भोट्टप्रश्ने करा इडेवा एवं एहे भोट्टप्रश्ने जममे पूर्ववर्ती भोट्टप्रश्नेत फले ये आधी प्रवानिसू जंग्यक घोने आज कवियाहिलन, जैशके वाप देवया हईले।

१७। अव्यवहित पूर्ववर्ती तिन अनुच्छेदव विवानावली-अनुयायी आसाक्षीय भोट्टप्रश्ने एवं उपनवर्ती ये तोन भोट्टप्रश्नेत फले ए मकल अनुच्छेदव विवानावली आमाङ्ग इडेवा।

१८। ये फेटे तोन भोट्टप्रश्नेत फले प्रुइ वा उत्तोतिक संभवक आधी समान भोट्टप्राहिवेन, त्वारीकरण फेटे-

(क) मदि मात्र दूहेजव निर्वाचिताधी आकेन; अथवा

(ख) मदि एहे उक्फिले १६ अनुच्छेदव आधीन तोन भोट्टप्रश्ने सम-संभवक भोट्टप्राप्त आधीरदव मव्य इडेते पक्कनेतके वाप दिवाव अद्याक्षन इम, आहा इहेले फेटावल निर्वाचितव जन्य वा वाप दिवाव जन्य आधी वाहाई लांडीव द्वावा हईवे।

१९। तोन भोट्टप्रश्नेत खड भोट्टप्रश्नेना समाप्त इहेले एवं भोट्टप्रश्नेत गलाफल मिळीकृत इहेले कमिशनाऱ्ह उक्कनीए उपचित व्याजिदेव समूद्देश फलाफल द्योषना करिवेन एवं उक्कनीए सरकारी विकास-द्वावा आहा द्योषनीव व्यवस्था करिवेन।

२०। एहे उक्फिले उपदेश्यसमूद्देश कार्यकृत करिवाव जन्य वाक्षेपतित अनुयोदनक्रमे कमिशनाऱ्ह सरकारी विकास-द्वावा विविसूह अनेकन करिते आविवेन।

## ତୃତୀୟ ଅନୁମଳ

[ ୧୯୧୮ ଅକ୍ଟୋବର ]

### ଶପଥ ଓ ଶୋଷନା

୧। ରାତ୍ରିପତି— ଆମୀନ ବିଚାରପତି— କର୍ତ୍ତକ  
ନିମ୍ନନିଧିକ ଫରମଦ ଶପଥ (ବା ଶୋଷନା) —ପାଠ  
ପରିଚାଳିତ ହଇଲେ :

"ଆମି, ..... , ସାମ୍ରାଜ୍ୟରେ  
ଶପଥ (ବା ଦୂଦଭାବେ ଶୋଷନା) କରିଲେଛୁ ମୈ, ଆମି  
ଆଇନ-ଅନୁମାନୀ ବାହନାଦେଶେର ରାତ୍ରିପତି-ପଦେର  
କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ବିଶ୍ୱମୁଖଙ୍କ ସହିତ ପାଲନ କରିବି;

ଆମି ବାହନାଦେଶେର ପ୍ରତି ଅକୃତିମ ବିଶ୍ୱାସ  
ଓ ଆନୁମତ୍ୟ ଦୋଷର କରିବି;

ଆମି ଅଧିକାରୀଙ୍କ ରଜନୀ, ସମର୍ଥନ ଓ ନିରାପତ୍ତା-  
ବିଶ୍ୱାସ କରିବି;

ଏବହ ଆମି ଭେତ୍ତି ବା ଅନୁଗ୍ରହ, ଅନୁରାଗ ବା  
ବିରାପେର ବଳବତ୍ତି ନା ହେଲା ମରନେର ପ୍ରତି  
ଆଇନ-ଅନୁମାନୀ ସମ୍ମାନିତ ଆଚରନ କରିବି।"

୨। ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ ଏବହ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ମନ୍ତ୍ରୀ, ପ୍ରତି-ମନ୍ତ୍ରୀ  
ଓ ଉପମନ୍ତ୍ରୀ—ରାତ୍ରିପତି କର୍ତ୍ତକ ନିମ୍ନନିଧିକ ଫରମଦ  
ଶପଥ (ବା ଶୋଷନା) —ପାଠ ପରିଚାଳିତ ହଇଲେ :

(କ) ପଦେର ଶପଥ (ବା ଶୋଷନା) :

"ଆମି, ..... , ସାମ୍ରାଜ୍ୟରେ  
ଶପଥ (ବା ଦୂଦଭାବେ ଶୋଷନା) କରିଲେଛୁ ମୈ, ଆମି  
ଆଇନ-ଅନୁମାନୀ ମରନାରେ ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ (କିମ୍ବା ଉପମନ୍ତ୍ରୀ  
ମନ୍ତ୍ରୀ, ପ୍ରତି-ମନ୍ତ୍ରୀ, ବା ଉପମନ୍ତ୍ରୀ) -ପଦେର କର୍ତ୍ତବ୍ୟ  
ବିଶ୍ୱମୁଖଙ୍କ ସହିତ ପାଲନ କରିବି;

ଆମି ବାହନାଦେଶେର ପ୍ରତି ଅକୃତିମ ବିଶ୍ୱାସ  
ଓ ଆନୁମତ୍ୟ ଦୋଷର କରିବି;

ଆମି ଅଧିକାରୀଙ୍କ ରଜନୀ, ସମର୍ଥନ ଓ ନିରାପତ୍ତା-  
ବିଶ୍ୱାସ କରିବି;

ଏବହ ଆମି ଭେତ୍ତି ବା ଅନୁଗ୍ରହ, ଅନୁରାଗ ବା  
ବିରାପେର ବଳବତ୍ତି ନା ହେଲା ମରନେର ପ୍ରତି ଆଇନ-  
ଅନୁମାନୀ ସମ୍ମାନିତ ଆଚରନ କରିବି।"

(अ) द्वापरायान शपथ (वा घोषना):

“आमि, ..... समझौते  
शपथ (वा मृद्गावे घोषना) करितेहि ये,  
अरकारेह अभानमनुषी (किंवा अस्त्रमण मनुषी,  
ध्रुति-मनुषी, वा उपमनुषी) -हले ये सकल विषय  
आमार “विवेचनाकृ जन्म आनीत” हेवे वा  
ये सकल “विषय आमि अवसरत” हेवे, ताहा  
प्रभानमनुषी (किंवा अस्त्रमण मनुषी, ध्रुति-मनुषी,  
वा उपमनुषी) -हले ग्रामघाटावे आमारु कर्तव्य  
पालनेर अद्योक्त व्यक्ति अज्ञात वा परामर्शावे  
द्वान व्यक्तिके आपन करिब ना वा त्वाम व्यक्ति  
निकटे एकास वरिब ना।”

३। श्रीकारु-प्रवान विचारपति कर्तृक  
विष्णुनिषिक फळम शपथ (वा घोषना) -पाठ-  
पत्रिचालित हेवे:

“आमि, ..... समझौते  
शपथ (वा मृद्गावे घोषना) करितेहि ये, आमि  
आहेन अनुभायी संसदेर श्रीकारुरु कर्तव्य  
(एवं कर्मनुष आहुत इहेन झालेपतित कर्तव्य)  
विष्णुजारु प्रदित पालन करिब;

आमि वाहनादेशेर प्रति अकृतिम विश्वास  
उ आनुगत्य घोषने करिब;

आमि संविदानेर वक्तव्य, समर्थन ओ निरापत्ता  
विद्यान करिब;

एवं आमि तीक्ष्ण वा अनुष्टुत, अनुराग वा  
विहारेन वक्तव्ये ना हेसा अकर्मक प्रति आहेन  
अनुभायी ग्रामघित आचरने करिब।”

४। डेखुचि श्रीकारु-प्रवान विचारपति कर्तृक  
विष्णुनिषिक फळम शपथ (वा घोषना) -पाठ-  
पत्रिचालित हेवे:

“आमि, ..... समझौते  
शपथ (वा मृद्गावे घोषना) करितेहि ये, आमि  
आहेन अनुभायी संसदेर डेखुचि श्रीकारुरु कर्तव्य  
(एवं कर्मनुष आहुत इहेन श्रीकारुरु कर्तव्य)  
विष्णुजारु प्रदित पालन करिब;

आमि वाहनादेशेर प्रति अकृतिम विश्वास

ও আনুগত্য লোকন করিব;

আমি সংবিধানের রক্ষণ, সমস্তি ও নিরাপত্তা-  
বিধান করিব;

এবং আমি ভৌতি বা অনুষ্ঠান, অনুরাগ বা  
বিদ্যালয় বশকর্তী না হইয়া সকলের হতি আইন-  
অনুমানী প্রধানিতি আচরণ করিব।”

৩। সহসদ-সদস্য— সহসদের কোন বৈঠক  
সভাকার কর্তৃক নিম্নলিখিত ফরম পদ্ধতি (বা  
যোগস্থা) -পাঠে পরিচালিত হইবে:

“আমি, ..... , সহসদ-সদস্য  
নির্বাচিত ইস্যা সপ্তদিশিতে শপথ (বা দুর্বাবে  
যোগস্থা) করিত্বে যে,

আমি যে কর্তব্যাত্মক ধৰন করিতে পছন্দ কৰি,  
তাহা আইন-অনুমানী ও বিশ্বসুত্তাৰ সহিত  
পালন করিব;

আমি বাহ্যাদ্বেক্ষণ প্রতি অকৃতিম বিশ্বাস  
ও আনুগত্য লোকন করিব;

এবং সহসদ-সদস্যকে আমাত কর্তব্যপূরণকৰ  
ব্যক্তিমত প্রাপ্তি প্রাপ্তি আইন পালন করিব।”

৪। অধ্যান বিভাগপতি বা বিচারক— অধ্যান  
বিচারপতি একজন সুষ্ঠুপতি কর্তৃক এবং সুষ্ঠুপ  
কোর্টের কোন বিচারপতি একান বিচারকের ক্ষেত্  
্রে প্রধান বিচারপতি কর্তৃক নিম্নলিখিত ফরম  
শপথ (বা যোগস্থা) -পাঠে পরিচালিত হইবে:

“আমি, ..... , প্রধান  
বিচারপতি (বা প্রধান সুষ্ঠুপতি কোর্টের আপোন/হাইকোর্ট  
বিচারপতি বিচারক) নিম্নূক ইস্যা সপ্তদিশিত শপথ (বা দুর্বা-  
ভাবে যোগস্থা) করিত্বে যে, আমি আইন-অনুমানী ও  
বিশ্বসুত্তাৰ সহিত আমাত পদের কর্তব্য পালন করিব;

আমি বাহ্যাদ্বেক্ষণ প্রতি অকৃতিম বিশ্বাস ও  
আনুগত্য লোকন করিব;

আমি বাহ্যাদ্বেক্ষণ সংবিধান ও আইনের প্রকৰ,  
সমস্তি ও নিরাপত্তাবিধান করিব;

এবং আমি ভৌতি বা অনুষ্ঠান, অনুরাগ বা বিদ্যালয়  
বশকর্তী না হইয়া সকলের প্রতি আইন-অনুমানী  
প্রধানিতি আচরণ করিব।”

७। अथान निर्वाचन कमिशनाऱ्ह का निर्वाचन कमिशनाऱ्ह  
अधीन विद्यालयि कर्तृक निम्नलिखित उत्तरम् श्रमण  
(वा द्योषना) -पाठे अदिक्षावित् इहेवः

"आमि, ..... अथान  
निर्वाचन कमिशनाऱ्ह (वा उत्तरम् निर्वाचनाऱ्ह)  
निम्नकृ इंद्रिया संस्कृतिकृ श्रमण (वा शूष्टजाते द्योषना)  
करित्वेति ये, आमि आईन-अनुशासी ओ विश्वमुक्ताऱ्ह  
उत्तरित आमाऱ्ह उत्तर उत्तर्यु शालन करिदः

आमि बाह्यानुषेत्र अति अकृतिम् विश्वामि ओ  
आनुभव्य लोकने करिदः;

आमि जह्विधातेन्द्र उत्तर, श्रमण ओ निरापत्ता-  
विधान करिदः;

एव आमाऱ्ह महकारी कार्य ओ महकारी सिद्धान्तकै  
व्युक्तिगत शार्थे यात्रा अजावित् इतेत् मिव ना !"

८। अष्टा हिआन-निरीक्षक ओ निष्ठकृ- अथान  
विद्यालयि कर्तृक निम्नलिखित उत्तरम् श्रमण (वा  
द्योषना) -पाठे अदिक्षावित् इहेवः

"आमि, ..... महा-  
हिमाव-निरीक्षक ओ निष्ठकृ निम्नकृ इंद्रिया संशद्व-  
चित्ते श्रमण (वा शूष्टजाते द्योषना) करित्वेति ये,  
आमि आईन-अनुशासी ओ विश्वमुक्ताऱ्ह उत्तरित आमाऱ्ह  
उत्तरम् उत्तर्यु शालन करिदः;

आमि बाह्यानुषेत्र अति अकृतिम् विश्वामि ओ  
आनुभव्य लोकने करिदः;

आमि जह्विधातेन्द्र उत्तर, श्रमण ओ निरापत्ता-  
विधान करिदः;

एव आमाऱ्ह महकारी कार्य ओ महकारी सिद्धान्तकै  
व्युक्तिगत शार्थे यात्रा अजावित् इतेत् मिव ना !"

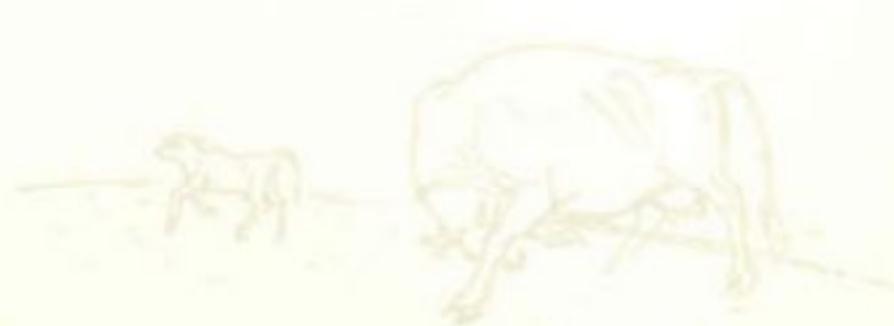
९। अत्तकारी कार्य काण्डालयेत्र उत्तरम्— अथान  
विद्यालयि कर्तृक निम्नलिखित उत्तरम् श्रमण (वा  
द्योषना) -पाठे अदिक्षावित् इहेवः

"आमि, ..... प्रदकारी  
कार्य कमिशनाऱ्ह उत्तर (वा उत्तरम् श्रमण) निम्नकृ इंद्रिया  
जह्विधातेन्द्र उत्तर (वा शूष्टजाते द्योषना) करित्वेति  
ये, आमि आईन-अनुशासी ओ विश्वमुक्ताऱ्ह उत्तरित

ज्याजारः पर्वतः कर्त्तव्यः साक्षन् कहिवः  
आमि बद्याटात्मेह त्रिति अकृतिम् विश्वास ओ  
ज्यानुपत्त्य लोकान् कहिवः

आमि उद्दिविदात्मतः इश्वरः, समर्थने ओ निरालडा-  
विविदान् कहिवः

परवह ज्याजारः जनकाहो कार्य ओ जनकाहो  
विष्वासकर्त्तु चक्रित्तु ग्रावर्ति द्वासा अजाविष्व  
इहेतु एहि ना ।"



## छतुर्थ उपनिषद

[ १७० अनुवाद ]

### अग्निकालीन ओ अनुशीली विश्वामित्री

१। अकाउड़ेर जृन्य सहिता-उच्चार ये निर्विद्या अभिनव  
दासित्तुतात् एवे गंगादिवदेव उमर न्युनु हिम,  
आहा आनित इत्याम् एवे सहिता-प्रबर्त्तनेर  
ज्ञानेर मणे गंगादिवद भाष्मिण्या याहेते ।

२। (१) एवे सहिता-प्रबर्त्तनेर लव यथाशोधु प्रथम निर्विद  
समुद्रं सहमद्य-निर्विचलनेर कृष्ण देखप्र गाविहने  
निर्विचलं अनुष्ठित इहेते एवा एवे उद्भवाप्राप्तिन-  
कर्त्तनेर १९७२ मालेव बांगालेन डोटोड-तातिका  
ज्ञानेश्वर (१९७२ जानेव शि. ३, नं. २०४) - एव अविन  
प्रान्तुते डोटोड-तातिका एवे सहिता-प्रबर्त्तनेर ११९  
अनुकृत-अनुमामी अनुकृत डोटोड-तातिका विष्णा  
गम्भे इहेते ।

(२) सहमद-सहमद्यादेर प्रथम निर्विचलनेर उद्भव-  
गाविनकर्त्तनेर १९७० माले प्रकाशित ओ पूर्वत्तन आद-  
शिक परिषद गठेत्तनेर ऊद्देश्ये चिह्नित निर्विचले  
एवाकाममूर्त्तेर गोपाला एवे सहिता-प्रबर्त्तनेर ११९  
अनुकृतदेव अविन चिह्नित गोपाला विष्णा गम्भे  
इहेते एवे निर्विचल क्रियम- अयोग्यवोदे ये  
कोन निर्विचले एवाकाम नाम किंवा आहार  
अनुकृत-सहकूपा वा आवात नाम सहित्तेर  
करिष्या- सरकाही विष्णु-व्याहा अनुकृत निर्विचले  
एवाकाममूर्त्तेर तातिका उकाम करिलन ।

तरे शर्त आके ये, एवे सहिता-प्रबर्त्तनेर ६५  
अनुकृतदेव (३) समाप्त उच्चित्ति गहिना-सहमद्यादेर  
ज्ञानेर सम्भवित विवामावली कार्यक्रम करिदात  
जृन्य आहेत्तेव व्याहा विवाम करा याहेते ।

३। (१) १९७१ मालेव २९८ मार्ट इहेते एवे निर्विचल-ताति-  
प्रबर्त्तनेर तातिलेव मर्देव अभीत वा  
प्रभीत विष्णु- विवेचित सकल आहेत, स्वाविमतात  
त्वाविमत्वा वा त्वा कोन आहेत इहेते आहवित  
वा आहवित विष्णु- विवेचित कर्त्तव्ये अविन  
अनुकृत- तमसादेव मर्देव अशुक सकल अभीत वा

निर्विचल-ताति-  
प्रबर्त्तनेर  
विष्णु-व्याहा

कृष्ण ग्रन्थ कार्ये एवं वाचा अनुमोदित ओ मन्त्रिति  
हैन एवं जाहा आईनानुमासी यथाभिंगत अनीत,  
प्रयूक्त ओ कृष्ण हैशालू बनिया द्यावित हैन।

(२) १२७२ जानवर वाहनादेश आस्त्रासी स्विवाम  
आदेश वातिल इहेया यात्रा मज्जुओ एहे स्विवामेनह  
विवानावली अनुमालू प्रहमद प्रदिन अधमवाह मिनित  
हैवेत, तमैदिन पर्यन्तु एहे स्विवाम-अवर्तनेन  
आविष्ट अव्यवहित पूर्व अकाडटक्कृत आवेष्टप्रवर्षण  
ओ विवहि अमता (अवादमकुड़ लगामन्त्रिय इष्टुपति  
कर्त्तक आदेशेन द्वाहा आहेन-प्रभग्नात्र अमतामह)  
प्रवर्षण प्रयूक्त इहेयालू, जाहा महेश्वरे प्रयूक्त हैत  
थाकित्व।

(३) एहे स्विवामेनहू एव विवान जहमदहू  
उभदा आहेन-प्रभग्नात्र अमता ओ पायिष्ठ आर्थि  
कवियालू, उपरि उक्त मधुतित्रै महमद अधमवाह  
मिनित ना इत्या पर्यन्तु तमै विवान इष्टुपतिके  
आदेशेन द्वाहा आहेन-प्रभग्नात्र अमता ओ पायिष्ठ  
आर्थि कवियालू बनिया विवेचित हैवेत एवं  
एहे अनुकूलदेव अर्थीन अनीत कोन आलू परेक्कल  
मकिय इहेवे, त्येन जाहा विवानावली महमद  
कर्त्तक विविवद्य हैशालू।

४। (१) एहे स्विवामेनहू ४८ अनुकूलदेव  
अर्थीन इष्टुपति-पद्म विवाचित हाव दुक्कि कार्यभाज  
प्रश्ने ना कहा पर्यन्तु एहे स्विवाम-अवर्तनेन  
अव्यवहित पूर्व मिनि इष्टुपति-पद्म अविष्टित  
चिलेन, तिनि उक्त पद्म वहाव थाकित्वेन, त्येन  
तिनि एहे स्विवामेनहू अर्थीन इष्टुपति-पद्म  
विवाचित इहेयालू;

जहा शर्व थाके दय, वर्तमान अनुकूलदेव  
अर्थीन प्रमाणिकान एहे स्विवामेनहू ५०  
अनुकूलदेव (२) मकाह उद्देश्यामैवकाल्य मनु  
हैवेवे ना।

(२) एहे स्विवामेनहू १४ अनुकूलदेव (३)  
मका-अनुमासी मीकाह ओ तेषुषि मीकाह विवाचित  
ना इत्या पर्यन्तु एहे स्विवाम-अवर्तनेव अव्यवहित  
पूर्व मीहाहा लगेप्रविष्टदेवै मीकाह ओ तेषुषि मीकाह  
-पद्म अविष्टित चिलेन, महमद भट्ठि ना इत्या  
मज्जुओ तोहाहा शु शु पद्म वहाल इवियालून  
बनिया गन्तु हैवेन।

ताष्टुपति

५। एडे महिनालेत् अधीन प्रथम जार्थात्तरं  
निर्वाचनस्त्रं लक् एडे महिनालेत् ६७ अनुच्छेदस्त्रं  
अधीन अवानमन्त्री नियुक्त ना हेया सर्वतु एव  
तिनि कार्यात् श्रावनं ना कर्ता सर्वतु एडे महिनास-  
प्रबर्त्तनस्त्रं आदित्यन् अवावहितं पूर्वं यिनि क्रान्त-  
मन्त्रीत् लक्ष्मि अविहितं छिन्नन्, तिनि उक्तं लक्ष्मि एव  
उक्तं तात्रित्यन् अवावहितं पूर्वं गीहात् मन्त्री-लक्ष्मि  
अविहितं छिन्नन्, अवानमन्त्री तिन्नक्षेपं विमुक्तं  
ना द्वितीयात् तमैः सकलं लक्ष्मि वशम शक्तिन्,  
यम एडे महिनालेत् अधीन गीहात् वा लक्ष्मि लक्ष्मि  
नियुक्तं 'इष्टेषात्कृतम्'; तत्र एडे महिनालेत् ६७  
अनुच्छेदस्त्रं लक्ष्मि किंतु अवानमन्त्रीत् भवामर्कित्य-  
अन्यान् मन्त्री-विमोलं विनृत्य करित्वे ना ।

अभानमन्त्री ३  
अवानमन्त्री

६। (१) १९७२ ज्ञालेत् अनुमासी अहिनास-  
आदम्बोत् द्वात् गतिः इटेकाटेत् अधीन विचार-  
पति-लक्ष्मि एव अन्यान् विचारक-लक्ष्मि  
गीहात् एडे महिनास-प्रबर्त्तनस्त्रं आदित्यन् अवावहितं  
पूर्वं अविहितं छिन्नन्, गीहात् उक्तं तात्रित्य-  
श्व श्व लक्ष्मि वशम शक्तिवद्, यम गीहात् एडे-  
महिनालेत् ६७ अनुच्छेदस्त्रं अधीन अन्यान् अवान-  
विचारपति वा विचारक-लक्ष्मि नियुक्तं इष्टेषात्कृतम् ।

विचारपति

(२) एडे महिनास-प्रबर्त्तनस्त्रं काट्य गीहात्  
एडे अनुच्छेदस्त्रं (३) उक्त-अनुच्छेद-अनुसारे विचारक-  
लक्ष्मि (अवान विचारपति गुजरात) अविहितं इष्टेषात्कृतम्,  
गीहात् शहिकोटे विचारणे नियुक्तं इष्टेषात्कृतम् वचिया  
नम् इष्टेवद् एव एडे महिनालेत् ६८ अनुच्छेद-  
अनुमासी आभीन विचारणे विमोलमानं कर्ता  
इष्टेवद् ।

(४) एडे अनुच्छेदस्त्रं (५) उक्त-अनुच्छेद उविहितं  
आहेनमात् कार्यगीहात् चुलोत् एडे महिनास-प्रबर्त्तनस्त्रं  
आदित्यन् अवावहितं पूर्वं इटेकाटेत् ये सकलं  
आहेनमात् कार्यगीहात् सीमांमाधीन छिन्न, आहा  
इटेकाटे विचारणे मूर्खातुवित इष्टेवद् उक्तं उक्तं  
विचारणे सीमांमाधीन अविया नम् इष्टेवद् एव  
एडे महिनास-प्रबर्त्तनस्त्रं पूर्वं लक्ष्मि इटेकाटेत्  
लक्ष्मि नाम् ना लालेत् इटेकाटे विचारणे  
प्राहा द्वादश वा कृष्ण त्रयी वा व्यालेले लक्ष्मि  
३ कार्यकारुता नाम् करित्वा ।

(६) ये सकलं आहेनमात् कार्यगीहात् एडे

महाविद्यान-प्रबर्त्तने जगत्प्रभु अवश्यक है शहेटोंडे आलीन विजागे मीमांसा-धीन हैं, ऐसे महाविद्यान-प्रबर्त्तने इहेते ऐसे मकन कार्यविधि निष्ठित जन् आलीन विजागे भूमा तु दित इहेवे एवं ऐसे महाविद्यान-प्रबर्त्तने भूर्ब इहेकोंडे आलीन विजागे कर्तृक प्रदृढ़ वा कृष्ण ये लोन दास वा आदेश ऐसेका भूमजा ओ मतिगृजा लाड करिवे, येन ताहा आलीन विजागे द्वारा अदृढ़ वा कृष्ण इहेशाहे ।

(५) ऐसे महाविद्याने विद्यावाची एवं आनंद कोन आईन मालेके

(क) ये मकन आदि, आलीन ओ अवश्य अभिभाव १७७२ आले वाहनादेश अमूर्खी महाविद्यान आदेश -द्वारा गठित हाईकोटे उपर न्युम्हु ओ उक्त हाईकोटे कर्तृक अत्यागत्याम् कहा इहेशाहि (हाईकोटे आलीन विजागे उपर न्युम्हु अभिभाव व्युजीत), ऐसे महाविद्यान-प्रबर्त्तने इहेते अनुकूल अभिभाव हाईकोटे विजागे उपर न्युम्हु ओ उक्त विजागे कर्तृक अत्यागत्याम् इहेवे ।

(ख) ऐसे महाविद्यान-प्रबर्त्तने अवश्यक है भूर्ब अभिभाव ओ कार्यविधि अल्पाल्ले मकन देउयानी, कोक्षात्री ओ ताक्ष्मु आदानल ओ द्वाईद्वयनाल ऐसे महाविद्यान-प्रबर्त्तने इहेते मु द्व अधिभूप ओ कार्यक्रमता अत्याम् करिते भाकितन एवं प्रांशुरा अनुकूल आदानल ओ द्वाईद्वयनाल समूहे विभिन्न भाद्र अधिर्षित हिन्दे, औंशुरा मु मु नदे बहान भाकितन ।

(७) अवमूल आदानल अस्मिन्ते एवे महाविद्याने भष्ट जागेन् २३० लित्फूले द्विमावनी पथानीक्षु मस्तुव वामुवामित कहा इहेवे एवं ताहा वामुवामित वा इक्षु गर्वन्तु उक्त पदिक्षेदे गर्वित विष्णुवादि एवे महाविद्यान-प्रबर्त्तने अवश्यक है एक्षु विष्णुवित इहेत, आईने द्वारा अभीक्ष एवं कोन विद्यान-मालेके ताहा भेदे कुणे विष्णुवित इहेते भाकिवे ।

(१) यहे अनुकूलता कोन किसे कार्यवाहा  
आकिन हउमा प्रभावके कोन अचानक आइनेत  
कार्यकर्ताके क्षमावित करिवा ना ।

७। बाह्याद्येत् चालीस मीमांसा जारीहुत  
कोन हाइटकोटे (१९७२ माल्वे बाह्याद्येत् हाइटकोटे  
(महाराष्ट्री) व्याद्येत् (१९७२ माल्वे वि.व.व.११)  
अपीन-लिंग-ज्यामीव विभाग अजोड़) कर्तृक १९७१  
माल्वे मार्फ माल्वे अध्यय दिवस हईजे अद्य,  
कृत वा याचित ये कोन जाओ, जिसे, व्याद्येत्  
वा स्टडीर विकास, मध्यमांशक ये कोन वार्षा मध्ये  
मूलीमा कोट्ठे आपीन विभागे आपीन करा  
याइवे;

उद्य शर्त थाके ये, यहे महविद्यालय ३००  
अनुकूल हाइटकोटे विभाग हईते आपीनेत् छात्र  
येमन अंग्रेजी इम, उपर्युक्त ये कोन आपीनेत्  
फ्रेट ताहा सेईक्या अंग्रेजी हईवे;

उद्य आपुकु शर्त थाके ये, यहे महविद्यान-  
प्रबर्तनेत् आपीन इहीते नहहे दिल्ली येमाद् उपर्युक्त  
हटेमे अनुकूल प्रकाम आपीन करा याइवे ना ।

८। (१) यहे महविद्यान-प्रबर्तनेत् आविष्येत् लक्ष्य-  
वहित धूर्त कर्मसूत विर्वाचन कमिशन उक्त आपीन  
हहेते यहे महविद्यालय द्वावा अंगिहित विर्वाचन  
कमिशन विभाग अन्य हईवेन ।

(२) यहे महविद्यान-प्रबर्तनेत् आविष्येत् अव्य-  
वहित धूर्त विभाग विर्वाचन कमिशनात्तेर  
पद्म अव्य औहाहा विर्वाचन कमिशनात्तेर अव्य  
अंगिहित हिन्देव, उक्त आपीन इहीते औहाहा  
सु मु पद्म वहाव आकिनेव, येव औहाहा यहे  
महविद्यालय अपीन अनुकूल पद्म विशुक्त हैयाहून ।

९। (१) यहे महविद्यान-प्रबर्तनेत् आविष्येत् अव्य-  
वहित धूर्त कर्मसूत अनुकूली कर्म कमिशन  
मध्ये उक्त आपीन इहीते यहे महविद्यालय आपीन  
अंगिहित अनुकूली कर्म कमिशन विभाग अन्य  
हईवेन ।

(२) यहे महविद्यान-प्रबर्तनेत् आविष्येत् अव्य-  
वहित धूर्त विभाग कोन अनुकूली कर्म कमिशनेत्  
अंगापति वा अन्य कोन नदर्म्युर पद्म अंगिहित

आपीन विभाग

विर्वाचन कमिशन

महाली कर्म  
कमिशन

हिन्दन, उक्त जायिन्हा इहेतु तिनि श्रीय भूत बहाव  
भाकिटेन, त्येन तिनि पहुँ अधिवेशानेन् अधीन  
अनुकूल भए निमूँ इहेसाच्छन् ।

१०१ (३) एहे अधिवेशन ओ ये कोन आहेत तर सत्त्वाती कर्ता  
विदान-सापेक्षे-

(क) एहे अधिवेशन-प्रबर्तनेन जाहिन्हेत्र  
अव्यावहित शूर्व अकाजकुर कर्त्त वड  
ये कोन बुकि उक्त जायिन्हा इहेतु  
श्रीमूँ कर्त्त बहाव भाकिटेन अव्य  
एहे अधिवेशन-प्रबर्तनेन अधिन्हेत्र  
अव्यावहित शूर्व औहात अत्र कर्मेन्हु  
ये भारीवद्यो अप्याशाम्याश्य हिन्हा  
अभिवित्तिं भाकिते ;

(ग) एहे अधिवेशन-प्रबर्तनेन अव्यावहित  
शूर्व वाहनादेशेन झाडीमूँ श्रीमानामूँ  
मायिक्षामानन्हुक अकोन विचारितामैय  
विवेही ओ मनुनानव्येत्र कर्त्तवक ओ  
कर्माकारी एहे अधिवेशन-प्रबर्तन इहेतु  
ये ये मायिक्षामान कठित भाकितेन ।

(२) एहे अनुकूलेन (१) उक्त अनुकूलेन कोन  
किल्हादे-

(क) १७७२ मात्रेन वाहनादेश अरकार (कर्त्त  
विजामसमृह) आदेशेन (१७७२ मात्रेन  
मि. ३ नं ८) किल्हा १७७२ जात्येन  
वाहनादेश अरकार (माजिस्मृह मुक्तिविधि)  
आदेशेन (१७७२ जात्येन मि. ३ नं ७९)  
अव्याहक उपाले वारीशमान करिवे  
ना ; अध्यवा

(ग) एहे अधिवेशन-प्रबर्तनेन शूर्व कोन  
ममत्ते अकाजकुर कर्त्त निमूँ अनुकूलेन  
विदानाद्यो-अनुमान्यो अकाजकुर कर्त्त  
बहाव बुकिटेत वारेत्र भारीवद्यो  
(मायिक्षामिक, शूटि, अवज्ञा-उज्ज्ञ  
अविकार ओ शृंखलामूलक विष्णवादि  
महकारु अविकारमाह) नहिंदेन वा  
वातिन किम्या अद्वैत-प्रवेशन कहा  
हेतु विवेत करिवे ना ।

११। एইे महाविद्यानेत्र कृतीय उक्तमित्र द्य  
माकल प्रदेश अन्य अप्सरा वा द्योधरा आठेत्र कडम  
निर्वाहित हैंगाहू, ऐसे मकल प्रद एवे उक्तमित्र  
आदीन बहाल आकितेन, अमन द्य टकान चुकि ऐसे  
महाविद्यान-प्रबर्त्तनेत्र तत्र मध्यालीकृत् अस्तु व यथायथ  
व्युक्तिर जमूरेष अनुज्ञान उक्तमित्र भवत्य भवत्य वा त्राप्ती  
साठे करितेन ओ अपश्रमत्य वा द्योधरामत्य द्याकृ-  
दान करितेन ।

प्रद वशम धारा  
वन भवत्य

१२। एইे महाविद्यानेत्र ७० अनुकृते उक्तिप्रिय  
ज्ञानीय शासन-महकानु उजिहानमध्ये गठेनेत्र कृत्य  
निर्वाहित अनुष्ठित ना हृत्या तर्थु एवे महाविद्या-  
प्रबर्त्तनेत्र अव्युवहित धूर्व अक्षात्कृते विभिन्न  
शासनिक एककारण-प्रभवित अशासनिक व्यवस्था  
आहेनेत्र द्वारा अभीत प्रविवर्तन-मालके अव्याहत  
आकितेन ।

ज्ञानीय शासन

१३। एইे महाविद्यान-प्रबर्त्तनेत्र अव्युवहित शूर्व  
शास्त्रादेशे वनवद द्य टकान आहेनेत्र अदीन आठे-  
पित मकल कड़े ओ फि अव्याहत आकितेन वे  
आहेनेत्र द्वारा आहार तात्रकम्य वा ताहा त्रहित  
करता माहिते पारितेव ।

कराराम

१४। महमद अनुज्ञान मिळानु प्रहर्ण ना कृता  
तर्थु एवे महाविद्यान-प्रबर्त्तनेत्र कामे उक्तिर अर्थ  
महमदवेत्र खेत्रे एवे महाविद्यानेत्र ८१, ८२, ८३ ओ  
८४ अनुकृतमध्येत्र विधानावली कार्यकृत हैवे ना  
एवह महमद अनुज्ञान तहित वा अक्षात्कृते उक्तकारी  
हिमाव इतेते द्य व्याह कडा हैंगाहू, तहा विक-  
लावे व्याह कडा हैंगाहू विधान गत्य हैवे,

अदीन अधिक  
व्यवस्थापन

जटव अर्त धारके द्य, तात्रकम्य यथालीकृत्  
अस्तु व आहार द्वारा अमानीकृत अनुज्ञान  
मकल व्युक्त एकति विद्युति महमद उपमध्यापनेत्र  
वावस्था करितेन ।

१५। एইे महाविद्यान-प्रबर्त्तनेत्र कामे उक्तिर  
अर्थ-वृत्त ओ आहार धूर्वत्ते वृत्तमध्यनित हिमाव-  
विधानेत्र एवे महाविद्यानेत्र अदीन प्रहा हिमाव-विधी-  
कम्यक ओ नियुक्तकृत हैमतामध्ये अद्योग्यामध्ये  
हैवे एवह प्रहा हिमाव-विधीकम्यक ओ नियुक्तक

अदीन विधानेत्र  
विधीका

अनुकूल हिमादि सम्भवके नाकुणतिर विकटे मे  
विलोक्ते लोक वर्गिवेन, नाकुणति ताहा  
महसदे उपमालनेत्र व्यवस्था करिवेन।

१७०) एই सहविदान-प्रबर्त्तनेर अव्यवहित  
शूर्वे ये सकल सम्भवि, परिस्थिति वा स्वच्छ  
मन्त्रज्ञात्मी वाह्यादेश सरकार किंवा जेऊ  
सरकारेर अपेक्ष कोष व्यक्ति वा अपूर्णज्ञात्र  
उपर न्युक्त हिम, ताहा प्रकारत्त्रेर उपर  
न्युक्त होते।

अनुकूल सम्भवि,  
परिस्थिति, शूर्वे,  
स्वच्छित्ति ३  
वाह्यादेशकला

(२) एই सहविदान-प्रबर्त्तनेर अव्यवहित  
शूर्वे अकारत्त्रेर सरकारेर ये सकल साम्य-  
सामित्ति ३ वाह्यादेशकला हिम, ताहा प्रकारत्त्रेर  
साम्य-सामित्ति ३ वाह्यादेशकला अव्याहत  
आकित्ते।

(३) वाह्यादेशकला नाकुण्डि मोमानाम् वाप्त्वा  
कार्यकृत टोकन सरकारेर टोकन साम्य-सामित्ति वा  
वाह्यादेशकला प्रकारत्त्रेर सरकार नाकुण्डि प्रह्ला-  
ना करिवेन ताहा अकारत्त्रेर साम्य-सामित्ति वा  
वाह्यादेशकला नहे किंवा होते ना।

आईलक लेखालो-  
कने ३ अमूर्तिवा-  
क्तीकरने

१७१(१) वाह्यादेश दलवाले टोकन आईलक  
विदानावलीत्ते एই सहविदानेर विदानावलीव  
सहित साम्यादेशन्यूने किंवा उपेक्षेत्रे एই सहविदान-  
प्रबर्त्तनेर शूर्वे वाह्यादेश सर्वे नाकुण्डि वाह्यादेश  
द्वारा सहवार्ती वा तहितकारत्त्रेर सर्वित्तम् अनुकूल  
विदानावलीत्ते प्रयोग वाह्यादेश वाह्यादेश वा इश्ति किंवा  
साहिवेन एवं अनुकूलप्रयोगे अभीत वे टोकन वाह्यादेश  
द्वारा लेखालोकने कार्यकृत होते कार्यकृत होते नाहित।

(२) एই सहविदान-प्रबर्त्तनेर शूर्वे आक-  
वित अमूर्तिवा सहविदानिक व्यवस्था होते एই  
सहविदानेर विदानावलीत्ते उपेक्षेत्रे अन्य उपेक्षेत्रे  
ये टोकन अमूर्तिवा शूर्वीकरत्त्रेर उपेक्षेत्रे नाकुण्डि  
वाह्यादेश द्वारा निर्दर्श द्वारा करिते नाहिवेन  
ये, अनुकूल वाह्यादेश विवरिति मेघादेश अव्य-  
क्ताहात्ते विकेनाम् योक्ता वाह्यादेश वा अमौर्तिवा  
होते, एमैक्यादेश निर्दर्श, अह्याकृत वा निर्वर्त्तित  
मावित्तम् शृंखला उपेक्षेत्रे-कर्त्तव्य-सामर्थ्ये एই सह-  
विदान कार्यकृत होते;

तदे शर्ते वाह्यादेश एই सहविदानेर अभीने

सहित अहमदाबाद अभ्यास विभाकड़ नह अनुकूल  
टकान आएन लगाही कहा होइवा ना ।

(८) परे अहंदिवानेन जन्म टकान विभान  
मरकूत वहे अमूकहान अवेन अल्पकृष्ण आएन  
महमद चेन्निज कहा होइवा परे महमद आएन  
द्वाहा काहा अहमा अहमावित वा इहित रहेल नारिव ।

अन्न-मुख्यत्वे २२३२

५/२ विष्णु ५/१२

मध्य उक्ति विभान

द्विं लक्ष्मीन

जगद्विग्न अहम

सम्भव विभान

प्रेषण अवश्य ग्रन्ति

अनुकूल अनुकूल अनुकूल

प्रेषण विभान अवश्य ग्रन्ति

अनुकूल

विभान विभान

विभान

मध्यम- अमोक्तामान

अनुकूल विभान विभान

प्रवान्मुक्तिविभान

प्रवान्मुक्तिविभान

अनुकूल विभान

अनुकूल- अनुकूल विभान

५/२० विभान, ५/१८ विभान

५/१२, ५/२० विभान, ५/१८

ପ୍ରାଚୀନ କବିତା ଓ ମହାକାଵ୍ୟ

ମହାକାଵ୍ୟ

ଅଧିକାରୀ ପାଠ୍ୟ

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ ମହାକାଵ୍ୟ

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ ମହାକାଵ୍ୟ

ମହାକାଵ୍ୟ

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ

ମହାକାଵ୍ୟ

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ ମହାକାଵ୍ୟ

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ ମହାକାଵ୍ୟ

ମହାକାଵ୍ୟ

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ ମହାକାଵ୍ୟ

ମହାକାଵ୍ୟ

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ ମହାକାଵ୍ୟ

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ

ମହାକାଵ୍ୟ

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ

ମହାକାଵ୍ୟ

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ

ମହାକାଵ୍ୟ

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ

ମହାକାଵ୍ୟ

ବ୍ୟାକୁ ହେଲା  
କିମ୍ବା କିମ୍ବା ?

କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

କିମ୍ବା କିମ୍ବା

କିମ୍ବା

କିମ୍ବା କିମ୍ବା

କିମ୍ବା କିମ୍ବା

କିମ୍ବା କିମ୍ବା

କିମ୍ବା

କିମ୍ବା କିମ୍ବା

କିମ୍ବା କିମ୍ବା

କିମ୍ବା କିମ୍ବା

କିମ୍ବା କିମ୍ବା

କିମ୍ବା କିମ୍ବା

କିମ୍ବା କିମ୍ବା

କିମ୍ବା କିମ୍ବା

କିମ୍ବା କିମ୍ବା

କିମ୍ବା

କିମ୍ବା

କିମ୍ବା

କିମ୍ବା

କିମ୍ବା

କିମ୍ବା

କିମ୍ବା

କିମ୍ବା

କିମ୍ବା

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ ପ୍ରକାଶ ଏଣ୍ଟର୍

ଅଧ୍ୟାତ୍ମିକ ପ୍ରକାଶନ ଏଣ୍ଟର୍

ମୁଦ୍ରଣ କରାଯାଇଥାଏ —

କ୍ଷେତ୍ର ମହିଳା

ମୁଦ୍ରଣ କରିଲା

ଅଧ୍ୟାତ୍ମିକ ପ୍ରକାଶନ

କରିଲା କରିଲା

ମୁଦ୍ରଣ କରିଲା

କ୍ଷେତ୍ର ମହିଳା

ଅଧ୍ୟାତ୍ମିକ ପ୍ରକାଶନ

ଅଧ୍ୟାତ୍ମିକ

ମହିଳା ମହିଳା

ଅଧ୍ୟାତ୍ମିକ ମହିଳା

ମୁଦ୍ରଣ

ମୁଦ୍ରଣ

ମୁଦ୍ରଣ କରିଲା

(ମହିଳା ମହିଳା  
(ମହିଳା ମହିଳା)

କରିଲା କରିଲା

ଅଧ୍ୟାତ୍ମିକ ମହିଳା

କରିଲା କରିଲା

ଅଧ୍ୟାତ୍ମିକ

ମହିଳା ମହିଳା

ଅଧ୍ୟାତ୍ମିକ ମହିଳା

ମହିଳା

ମହିଳା

ଶ୍ରୀମତୀ ପାତ୍ନୀ କଣ୍ଠାନ୍ଦୁଙ୍କାଳୀ (ଜୀବିତରେ କଥାଗୁଡ଼ିକ)  
କଥାଗୁଡ଼ିକ କଥାଗୁଡ଼ିକ

କଥାଗୁଡ଼ିକ କଥାଗୁଡ଼ିକ

କଥାଗୁଡ଼ିକ

କଥାଗୁଡ଼ିକ

କଥାଗୁଡ଼ିକ

କଥାଗୁଡ଼ିକ

କଥାଗୁଡ଼ିକ  
କଥାଗୁଡ଼ିକ

କଥାଗୁଡ଼ିକ

କଥାଗୁଡ଼ିକ

କଥାଗୁଡ଼ିକ

କଥାଗୁଡ଼ିକ

କଥାଗୁଡ଼ିକ

କଥାଗୁଡ଼ିକ

କଥାଗୁଡ଼ିକ

କଥାଗୁଡ଼ିକ

କଥାଗୁଡ଼ିକ

କଥାଗୁଡ଼ିକ

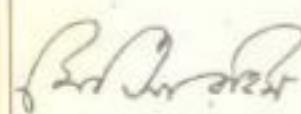
ବେଶମତ୍ରିପାଳନ କରିବାରେ

୨. ୧୦. ୨୩, ଅକ୍ଟୋବର ୨୦୨୨

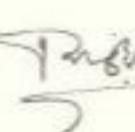
କୁମାର, ପାତ୍ରପାଲିଙ୍ଗ ଜ୍ଞାନ, ହରିହର (ହୃଦୟପାତ୍ର) -

ମୋହନ ୨୦୯ - ବିଜୀ, ଲିଚ୍ଛଵିନ୍ଦ୍ର ୨୫

ମୋହନ ପାତ୍ରପାଲିଙ୍ଗ ଜ୍ଞାନ

 ୨୫/୧୨/୨୨ ମୋହନ ପାତ୍ରପାଲିଙ୍ଗ

ଶ୍ରୀ ପଦମାତ୍ର ପାତ୍ରପାଲିଙ୍ଗ, ୨୫/୧୨/୨୨

ଶ୍ରୀ. ଗୋପାଲ ପାତ୍ରପାଲିଙ୍ଗ (ମୋହନ)  ୨୫/୧୨/୨୨

ଶ୍ରୀ. କୁମାର ପାତ୍ରପାଲିଙ୍ଗ ଉତ୍ସମାନ ପାତ୍ରପାଲିଙ୍ଗ

ଶ୍ରୀ. ମାତ୍ରିକ ପାତ୍ରପାଲିଙ୍ଗ

ଶ୍ରୀ. ପାତ୍ରପାଲିଙ୍ଗ ପାତ୍ରପାଲିଙ୍ଗ

ଶ୍ରୀ. ମହାନ୍ତିର ପାତ୍ରପାଲିଙ୍ଗ

ଶ୍ରୀ. ପାତ୍ରପାଲିଙ୍ଗ ପାତ୍ରପାଲିଙ୍ଗ

ଶ୍ରୀ. ପାତ୍ରପାଲିଙ୍ଗ ପାତ୍ରପାଲିଙ୍ଗ

ଶ୍ରୀକୃତିବ୍ୟାପନାମାଲା ପଦ୍ମମଣ୍ଡଳୀ -

୧୯୭୭ ଫେବୃଆରୀ ୧୫ ଶତାବ୍ଦୀ -

ମହାକାଵ୍ୟାପନାମାଲା

ମହାକାଵ୍ୟାପନାମାଲା

ଅନ୍ତିମ ପଦ୍ମମଣ୍ଡଳୀ -

ମହାକାଵ୍ୟାପନାମାଲା

ମହାକାଵ୍ୟାପନାମାଲା

ମହାକାଵ୍ୟାପନାମାଲା

ମହାକାଵ୍ୟାପନାମାଲା

ମହାକାଵ୍ୟାପନାମାଲା

ଶ୍ରୀକୃତିବ୍ୟାପନାମାଲା

(୧, ୨୨, ୩୮୫ ପଦ୍ମମଣ୍ଡଳୀ)

ମହାକାଵ୍ୟାପନାମାଲା

ମହାକାଵ୍ୟାପନାମାଲା

ମହାକାଵ୍ୟାପନାମାଲା

ମହାକାଵ୍ୟାପନାମାଲା

ମହାକାଵ୍ୟାପନାମାଲା

ମହାକାଵ୍ୟାପନାମାଲା

ମହାକାଵ୍ୟାପନାମାଲା

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ

ପାଠ ନାମକରଣ

ଶିଖିର ରମେଶ

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତମାଲା (ମୁଦ୍ରଣ)

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ ପାଠ

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତମାଲା

ଶିଖିର ରମେଶ

ମୁଦ୍ରଣ ନଂ ୧୯୬୫, ପ୍ରକାଶକ ଜ୍ଞାନପତ୍ର

ମୁଦ୍ରଣ

ବିଦ୍ୟାକ୍ଷେତ୍ର ପାଠ

ଶିଖିର ରମେଶ

ଶିଖିର ରମେଶ

ଶିଖିର ରମେଶ

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତମାଲା

ମୁଦ୍ରଣ - ରମେଶ

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତମାଲା (ମୁଦ୍ରଣ)

ଶିଖିର ରମେଶ

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ

ଶିଖିର ରମେଶ

ଶିଖିର ରମେଶ

ରାଜ୍ୟବିଧି-

ପ୍ରକଟିତ ବିଧି

ଅନୁମତି ଦିଆଯାଇଲେ ଏହାରେ କାହାରେ କାହାରେ

କାହାରେ କାହାରେ କାହାରେ କାହାରେ କାହାରେ

କାହାରେ କାହାରେ —

କାହାରେ କାହାରେ କାହାରେ —

କାହାରେ କାହାରେ

କାହାରେ କାହାରେ

କାହାରେ କାହାରେ କାହାରେ କାହାରେ

II. (ମାତ୍ର ବଳେ) କୌଣସି କାହାରେ କାହାରେ

କାହାରେ କାହାରେ କାହାରେ କାହାରେ କାହାରେ

କାହାରେ କାହାରେ କାହାରେ

କାହାରେ କାହାରେ କାହାରେ

କାହାରେ କାହାରେ କାହାରେ

କାହାରେ କାହାରେ କାହାରେ

ଶ୍ରୀମତୀ କଣ୍ଠରୁଦ୍ଧା ପାତ୍ର  
ଶ୍ରୀମତୀ କଣ୍ଠରୁଦ୍ଧା  
ଶ୍ରୀମତୀ କଣ୍ଠରୁଦ୍ଧା  
ଶ୍ରୀମତୀ କଣ୍ଠରୁଦ୍ଧା  
ଶ୍ରୀମତୀ କଣ୍ଠରୁଦ୍ଧା  
ଶ୍ରୀମତୀ କଣ୍ଠରୁଦ୍ଧା  
ଶ୍ରୀମତୀ କଣ୍ଠରୁଦ୍ଧା  
ଶ୍ରୀମତୀ କଣ୍ଠରୁଦ୍ଧା

ကျော်မြန်မာစာ ၁၁။ အမှတ်အသေချိန်များ  
အမှုပါဒ် ၁၇၅၃ ခုနှစ် မြန်မာစာ ၁၁။ အမှတ်အသေချိန်များ  
မြန်မာစာ ၁၇၅၃ ခုနှစ် မြန်မာစာ ၁၁။ အမှတ်အသေချိန်များ

ମେଁ: ଶ୍ରୀମନ୍

ରେଜ୍. ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ

ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ

ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ

ମେଁ: ଅମାରପୁରିଆନନ୍ଦ

ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ

(ମେଁ: କଳିପାତାଲିଆନନ୍ଦ)

ମେଁ: (ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ - ୧୯୮୮)

ମେଁ: ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ

ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ

ମେଁ: ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ

ମେଁ: ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ - ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ - ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ  
ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ - ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ -

ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ - ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ

ମେଁ: ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ, ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ

ମେଁ: ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ

ମେଁ: ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ, ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ

ମେଁ: ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ - ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ - ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ  
ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ - ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ

ମେଁ: ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ

ମେଁ: ପାତାଲପୁରିଆନନ୍ଦ

ମୁଖ୍ୟମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ପାଇଁ ଏହାରେ  
କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

(ପାଇଁଲାଗିଥାରେ)

ମୁଖ୍ୟମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ପାଇଁ ଏହାରେ  
କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

(ପାଇଁଲାଗିଥାରେ)

କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

ମୋହମ୍ମଦ ଖାଲେଦ

ବୁତ୍ତିକାନ୍ତାର୍ଦ୍ଦିଶ

ଆ: କୋର୍ଟର୍ ଅଧୀକ୍ଷୀଣ  
ପାଇଁଲାଗିଥାରେ

କିମ୍ବା କିମ୍ବା

କିମ୍ବା କିମ୍ବା

ମୁଖ୍ୟମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ପାଇଁ ଏହାରେ

ମୁଖ୍ୟମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ପାଇଁ

ମୁଖ୍ୟମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ପାଇଁ

ମୁଖ୍ୟମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ପାଇଁ

ମୁଖ୍ୟମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ପାଇଁ



144: 2005-1

विद्युत् विनाशक

Common English names

ମୁଦ୍ରାକାରୀ

मानवीय संस्कृति

ମେଣିଂହାନ୍ଦା ଫିଲ୍ସ -

—What's the matter? —

ମୁଦ୍ରଣ ମେଲ୍ଲି-

③ १० अप्रैल २०२४ को बाजार में विक्री के लिए उपलब्ध हुए।

③ *Indumentaria*

## ፩፻፲፭ ዓ.ም. | አዲስአበባ

ଅକ୍ଷ୍ୟାନ୍ତରୀକ୍ଷଣ

606 22 212/200-

ଅମ୍ବାକୁ ପାଇଁ ହେଁ—

(Sinh viên sau khi xem bài giảng)  
Sinh viên 3 năm 4

ବ୍ୟାକ୍ ପରିଚୟ

Tom Rasmussen

ଶ୍ରୀ କମଳାଚାର୍ଯ୍ୟ, ପ୍ରଦୀପ ମହାନ୍ତିର ମୁଦ୍ରଣ  
ପରିବହନ ଏବଂ ପ୍ରକାଶନ କମିଶନ

Bronx Zoo Mammal.

Chancery seal

藏文：བྱତ୍ୟା ମୁଖ୍ୟା ପରିଚ୍ୟା

ମୁଖ କାହାରେ ଦେଖିଲା ?

କିମ୍ବା କିମ୍ବା

प्रभासमारा।

दहन्दर चम

गिरिशक्ति।

५, एस. एस. बाबुद्देव चौधुरी

प्रकाशकालः बहन्दूल आवेदीन

प्रकाश

बहन्दूल ईश्वर

भारतीय राज प्रोड्यूसी

बहन्दूल राज चाम्पारी

प्रकाशकालः ईश्वर चाम्प, चाम्प

प्रकाशः बालाजील चाम्पारी चूल्हाल

(चाम्पी चूल्हा चूल्हा ईश्वर ईश्वर ईश्वरी चूल्हाल, चाम्प)

१०८



